"छात्र नेतृत्व का समाजशास्त्रीय अध्ययन"

(बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में)

समाजशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलासफी की
उपाधि के निमित्त प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध

निर्देशक :

डॉ० जी० सी० श्रीवास्तव

समाजशास्त्र विभाग

डी. वी. महाविद्यालय, उरई

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ० प्र०)

द्वारा

शरणबिहारी खरया

समाजशास्त्र विभाग

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ० प्र०)

• • •

१९८४

"छात्र नेतृत्व का समाजशास्त्रीय अध्ययन"

(बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में)

समाजशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलासफी की
उपाधि के निमित्त प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध

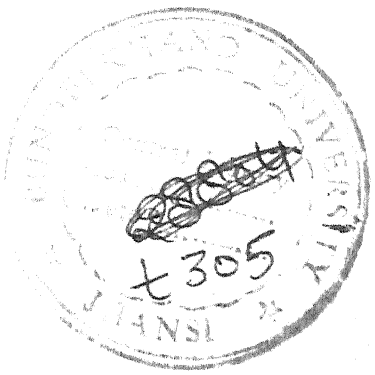

निर्देशक :

डॉ० जी० सी० श्रीवास्तव

समाजशास्त्र विभाग

डी. वी. महाविद्यालय, उरई

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ० प्र०)

द्वारा

शरणबिहारी खरया

समाजशास्त्र विभाग

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ० प्र०)

• • •

१९८४

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री अवध बिहारी अवधा द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "छात्र असंतोष का एक समाज-शास्त्रीय अध्ययन" (बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विशेष संस्थाओं के सन्दर्भ में), एक मौलिक शोध कार्य है ।

यह शोध कार्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की नियमावलि के अनुरूप मेरे निर्देशन में किया गया है ।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि वर्तमान शोध-प्रबन्ध पूर्ण अथवा आंशिक रूप से अन्य संस्था में किसी भी उपाधि की अपेक्षा से प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

शोधकर्ता
अवध बिहारी अवधा
समाज शास्त्र विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,
झाँसी (उ०प्र०)
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध निर्देशक
डा० वी० वी० श्रीवास्तव
समाज शास्त्र विभाग
डी० वी० महाविद्यालय,
उरई (उ० प्र०)
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	i-iv
तालिका-सूची	v-vii
चित्र-सूची	viii
अध्याय 1. प्रस्तावना एवं कार्य प्रणाली	1-41
1.1 प्रस्तावना	1-25
1. ग्राम गौरव की व्याख्या	1-4
2. बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं में ग्राम गौरव का इतिहास	4-6
3. वर्तमान शोध समस्या की उपयोगिता एवं विवेचना	6-9
4. साहित्य का पुनरावलोकन	9-23
5. वर्तमान शोध अध्ययन के उद्देश्य	23-25
1.2 कार्य-प्रणाली	26-41
1. अध्ययन क्षेत्र	26-33
2. आदर्श आकार	33
3. तथ्यों के संकलन की विधियाँ	33-36
4. आदर्श की उपयुक्तता	36
5. प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य	36-37
6. सामाजिक वर्गिकी	37
7. सारणीकरण	37
8. विश्लेषण	37-38
9. सांख्यिकीय विधियों का उपयोग	38
10. वर्तमान शोध कार्य के अनुक्रम एवं सीमायें	38-41

अध्याय 2.	सर्वेक्षण पर आधारित तथ्य	42-47
	1. सामान्य विवरण	42-44
	2. सामाजिक कारक	44
	3. आर्थिक कारक	44
	4. राजनैतिक कारक	45
	5. धार्मिक कारक	45
	6. मनोवैज्ञानिक कारक	45-47
अध्याय 3.	ग्राम नेतृत्व का समाज-आर्थिक विवरण	48-90
	1. सामान्य विवरण	48
	2. समाज आर्थिक व्यवस्था	48-53
	3. समाज आर्थिक गतिविधियाँ	53-87
	4. विश्लेषण	87-90
अध्याय 4.	ग्राम नेतृत्व का शैक्षिक विवरण	91-121
	1. सामान्य विवरण	91
	2. शिक्षा	91-92
	3. शैक्षिक गतिविधियाँ	92-116
	4. विश्लेषण	117-121
अध्याय 5.	ग्राम नेतृत्व का राजनैतिक विवरण	122-147
	1. सामान्य विवरण	122-125
	2. नेतृत्व के प्रकार	125
	3. राजनैतिक गतिविधियाँ	125-142
	4. विश्लेषण	142-147
अध्याय 6.	ग्राम नेतृत्व एवं स्थानीय राजनीति	148-150

अध्याय 7. छात्र आन्दोलन एवं प्रभावीकरण 151-156

अध्याय 8. व्यक्तिगत अध्ययन 157-172

1. सामान्य विवरण 157-159

2. व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति द्वारा सर्वेक्षण किये गये छात्र केन्द्रों का विवरण 159

अ. छात्र महाविद्यालय 159-162

ब. छात्रा महाविद्यालय 163-165

स. मेडिकल कालेज 165-168

द. माध्यमिक विद्यालय 169-171

3. विश्लेषण 171-172

अध्याय 9. उपसंहार 173-206

1. सुझाव 173-192

2. निष्कर्ष 192-197

3. सुझाव 197-206

... ... सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची 207-234

परिशिष्ट ... ... प्रश्नावली प्रपत्र 1-8

=:=:=:=:=:=:=

प्राक्कथन

वर्तमान शताब्दी के पिछले कुछ दशकों में तकनीकी एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अपने तमाम अन्वेषणों के फलस्वरूप मानव अन्तरिक्ष में सफलता पूर्वक प्रवेश कर चुका है। विश्व के विभिन्न देशों में निरन्तर अन्वेषणों की एक होड़ सी तीव्रगामी दौड़ लगी हुई है जिसके भविष्य की मात्र कल्पना करके अन्ततः पटल पर कई प्रश्न एक साथ उभरते हैं। मानव समाज का अस्तित्व आणविक परमाणु विकास की प्रक्रिया से अधर में प्रतीत होता है। सामाजिक नियन्त्रण के तौर में बढ़ती हुई जनसंख्या अवरोध का कारक प्रतीत होती है। समाज में जन्म लेने वाले सदस्यों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका में शिक्षा की आवश्यकता एवं योगदान को नगण्य नहीं समझा जा सकता है। वर्तमान शोध प्रबन्ध इस आशय से प्रस्तुत किया जा रहा है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के तौर में छात्र गतिविधियों की क्या दशा रही है? विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में छात्र नेतृत्व की वर्तमान शोध समस्या से सम्बन्धता रखने वाले अनेकों शोध पत्र उपलब्ध हुये हैं, परन्तु भारतवर्ष के सबसे बृहद प्रान्त उत्तर प्रदेश की भौगोलिक सीमाओं के अन्तर्गत एक बड़े भाग का निर्माण करने वाले बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शोध कार्यों का कोई इतिहास उपलब्ध नहीं हुआ है। वर्तमान शोध प्रबन्ध इस क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष प्रदान करने की दिशा में है कि शिक्षण संस्थाओं में छात्र नेतृत्व की विकलता किस सीमातक है एवं इस विकलता के फलस्वरूप शिक्षण संस्थाओं व छात्र हितों में क्या सुधार की आवश्यकतायें हैं। इस तौर की संस्तुति वर्तमान शोध प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय में तालिका की गई है।

वर्तमान शोध प्रबन्ध देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया जा रहा है। टंकण की उपयुक्त सुविधा प्राप्त न होने के कारण सैद्धान्तिक त्रुटियों की सूची शोध प्रबन्ध के अन्त में सन्शुद्ध रूप से संलग्नित की गयी है।

वर्तमान शोध कार्य डा.बी.सी. श्रीवास्तव समाजशास्त्र विभाग, डी.बी. महाविद्यालय उरई, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी उत्तर प्रदेश के तत्वा निर्देशन में किया गया है। वर्तमान शोध कार्य के प्रथम चरण से अन्तिम चरण तक डा. श्रीवास्तव ने वैचारिक क्षमता के माध्यम से तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण एवं शोध कार्य को वर्तमान तैरवना प्रदान करने में निरन्तर सहयोग प्रदान किया है। मैं व्यक्तिगत रूप से इस अमूल्य योगदान के लिये अपना आभार शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।

वर्तमान शोध कार्य की रूप रेखा निर्माण करने के समय से विभिन्न समाजशास्त्रियों के जो रचनात्मक सुझाव समय-समय पर प्राप्त हुये हैं उनके अभाव में शोध प्रबन्ध वर्तमान तैरवना प्राप्त करने में असमर्थ होता। इन समाजशास्त्रियों में डा.बी.एन. सेठ, अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, क्राइस्टचर्च कालेज, कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर, डा.एस.डी. महेश्वरी, रीडर समाजशास्त्र विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं डा.एन.के.गौराहा, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, सागर विश्वविद्यालय सागर प्रमुख हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की कार्य प्रणाली एवं तथ्यों के प्रस्तुतीकरण में डा.एन.एन. अवस्थी प्रवक्ता, महारानी लक्ष्मीबाई मेडीकल कालेज झाँसी एवं डा. सुक्रम चन्द्र जैन का अविस्मरणीय योगदान प्राप्त हुआ है। मैं इनका आभारी हूँ।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की परिष्ठ समाजशास्त्री डा. गार्गी, प्रधानाचार्या, आर्य कन्या महाविद्यालय झाँसी ने शोध कार्य के प्रारम्भ से अन्तिम अवस्था तक उत्प्रेरक एवं रचनात्मक सुझाव प्रदान किये हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से उनका हृदय से आभारी हूँ।

वर्तमान शोध प्रबन्ध में सबसे अधिक सहयोग की दृष्टि से डा. अरुण कुमार शुक्ल समाज मानवशास्त्री के प्रयासों को मैं जीवन पर्यन्त नहीं भूल सकता। डा. शुक्ल ने प्रारम्भ से लेकर अन्तिम चरण तक शोध प्रबन्ध की पूर्ण तैयारी में जो अपेक्षित सहयोग दिया है उसके लिये मैं उनका जीवन भर ऋणी रहूँगा।

यदि मैं अपनी शिक्षण संस्था के सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त न करूँ तो मेरी यह त्रुटि होगी। बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी के डा. पी.डी. गुप्ता, प्रो० कमाल हुसैन, प्रो० प्रदीप माहिश्री, प्रो० कान्ति चन्द्र सक्सेना एवं प्रो० पी.आर. शुक्ला का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

वर्तमान शोध कार्य की तैरचना के बारे में विभिन्न व्यक्तियों को अवगत कराया गया है। इस सम्बन्ध में हार्दिक रूप से मैं प्रो० के.पी. नाथ, ब.ला. वे. महाविद्यालय, बाँदा एवं डा० एस.पी. सिंह अतरी, महाविद्यालय अतरी, का आभारी हूँ।

वर्तमान शोध कार्य ऐसी अवधि में किया गया है जबकि प्रत्येक अवस्था में शोध कर्ता को निरन्तर प्रेरणा स्रोत का अत्यन्त आवश्यक होता है। इस दिशा में प्रदत्त रचनात्मक सुझाव एवं समयानुकूल निरन्तर सहयोग के लिये मैं अपनी पत्नी श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव का विशेष रूप से आभारी हूँ

शोध प्रबन्ध के निर्माण में श्री कमलेश वर्मा, श्री ज्ञान सागर दिवाकरया, श्री बालचन्द्रन, श्री श्याम सुन्दर एवं श्री कौशल किशोर वर्मा ने अत्यंतीय सहयोग प्रदान किया है । रचनात्मक दृष्टि से प्राप्त सहयोग के लिये मैं कुमारी वर्मा एवं कुमारी अर्चना का हृदय से आभारी हूँ ।

मैं उन सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाज के अन्य व्यक्तियों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने तथ्यों के संकलन में निरन्तर सहयोग प्रदान किया है ।

अन्त में यह मेरा परम कर्तव्य होगा कि परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से प्राप्त सहयोग के लिये विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्यों, प्राध्यापकों एवं शिक्षिकों का आभार व्यक्त करूँ । इस क्रम में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के अधिकारियों के प्रति भी मैं व्यक्तिगत रूप से आभार व्यक्त करता हूँ ।

मैं श्री भगवानदास कुशवाहा का आभारी हूँ जिनके परिश्रम से यथासमय शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य पूरा हो सका ।

। सरन बिहारी अरया ।

तालिका-सूची

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय	29
2.	जन संख्या घनत्व का विवरण	31
3.	तथ्य संकलन में उपयुक्त शिक्षण संस्थाओं एवं छात्र श्रेणियों का विवरण	34
4.	छात्र श्रेणियों का जाति पर आधारित वर्गीकरण	54
5.	छात्र श्रेणियों का पारिवारिक-आर्थिक स्तर पर आधारित वर्गीकरण	55
6.	बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उत्पादित फसलों की औसत-उपज	59
7.	छात्र श्रेणियों का क्षेत्रीय वर्गीकरण	60
8.	छात्र श्रेणियों का आयु पर आधारित वर्गीकरण	62
9.	छात्र श्रेणियों का लिंग के आधार पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में वर्गीकरण	65
10.	छात्र श्रेणियों की औसत आयु एवं वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण	66
11.	छात्र श्रेणियों के वैवाहिक स्तर एवं विवाह के समय आयु (पति/पत्नि) का विवरण	67
12.	विवाहित छात्र श्रेणियों के मताधिकार - परिषदों के चुनाव में मतदाता की सहमति का विवरण	68
13.	छात्र श्रेणियों की विवाह के समय आयु एवं प्रथम बच्चे के जन्म में अन्तराल का विवरण	69
14.	छात्र श्रेणियों का पारिवारिक व्यवस्था पर आधारित वर्गीकरण	71
15.	छात्र श्रेणियों का पारिवारिक-आर्थिक दृष्टि से वर्गीकरण	72
16.	छात्र श्रेणियों की पारिवारिक संरचना एवं परिवार के मुखियों का वर्गीकरण	74

17.	ओरांव जनजाति की पारिवारिक अभिरचना का वर्णन	76
18.	ओरांव जनजाति के घर से दूर पहुँचने की प्रक्रिया पर पारिवारिक सदस्यों के व्यवहार का विवरण	78
19.	ओरांव जनजाति के अपने मुखिया की आज्ञा मानने का वर्णन	80
20.	ओरांव जनजाति का विवाह पद्धति से सम्बन्धी विवरण	81
21.	ओरांव जनजाति के पारिवारिक सदस्यों अपने प्रेम-विवाह/अन्तर्जातीय विवाह पद्धति में विश्वास का विवरण	82
22.	ओरांव जनजाति का संस्कृति एवं सभ्यता से सम्बन्धित विवरण	83
23.	ओरांव जनजाति के विवाह सम्बन्धी रूपों का विवरण	85
24.	ओरांव जनजाति के मातृ: वर्चस्वपरक व्यवहारों से सम्बन्धित विवरण	86
25.	ओरांव जनजाति एवं सिक्खों के पारस्परिक सम्बन्धों का विवरण	94
26.	ओरांव जनजाति का शिक्षा के आधार पर वर्णन	95
27.	ओरांव जनजाति के मातृ: वर्चस्व शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में	98
28.	ओरांव जनजाति की शिक्षा सामग्री अभिरचना का विवरण	100
29.	ओरांव जनजाति का आइ-फेक, जादू-टोना में विश्वास	102
30.	ओरांव जनजाति का विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं से सम्बन्धों का विवरण	103
31.	ओरांव जनजाति की शिक्षा के लिये परिवार के विभिन्न सदस्यों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का विवरण	104
32.	ओरांव जनजाति अपने परिवार से प्राप्त मानसिक सहायता का विवरण	106

33.	विभिन्न संस्थाओं का नियंत्रण	107
34.	छात्र नेताओं के माः प्रजातांत्रिक नियन्त्रण से तौलिया	108
35.	प्रजातन्त्रिक दृष्टिकोण में छात्र नेताओं का योगदान	110
36.	छात्र नेताओं की भविष्य तौलिया अभिलाषाओं का विवरण	111
37.	छात्र नेताओं के माः विभिन्न कार्यक्रमों से तौलिया	113
38.	छात्र नेताओं के माः विभिन्न संस्था की सदस्यता	115
39.	छात्र नेताओं का माः राजनीति से व्यक्तित्व में सहायता	116
40.	नेतृत्व का वर्गीकरण	126
41.	छात्र नेताओं का छात्र-संगठन के पदों के अनुसार वर्गीकरण	128
42.	छात्र नेताओं के माः छात्र आन्दोलनों से तौलिया	129
43.	छात्र नेताओं के माः सक्रिय राजनीति में योगदान	131
44.	छात्र नेताओं के माः वोट देने से तौलिया	133
45.	छात्र नेताओं के माः महिलाओं के राजनीति में योगदान एवं सहयोग के लिये निर्धारित योग्यताओं का विवरण	135
46.	छात्र नेताओं के माः विद्वानों से विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा	137
47.	छात्र नेताओं के माः प्रजातन्त्रिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राजनीतिक दल	138
48.	छात्र नेताओं के माः सामान्य गतिविधियों से तौलिया	140
49.	छात्र नेताओं के माः राजनीतिक गतिविधियों से तौलिया	141
50.	व्यक्तिगत अध्ययन पर आधारित उपलब्ध तथ्य	172

=:=:=:=:=:=:=:=

विषय-सूची

क्रम संख्या	विवरण	पेज संख्या
1.	बुन्देलखण्ड क्षेत्र का विवरण	27
2.	ग्राम क्षेत्रों का जाति पर आधारित वर्गीकरण	56
3.	ग्राम क्षेत्रों का पारिवारिक व्यवसाय पर आधारित वर्गीकरण	57
4.	ग्राम क्षेत्रों का वर्गीकरण (क्षेत्रीय)	61
5.	ग्राम क्षेत्रों का आयु पर आधारित वर्गीकरण	63
6.	ग्राम क्षेत्रों की पारिवारिक आय का वर्गीकरण	73
7.	ग्राम क्षेत्रों का शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण	96
8.	ग्राम क्षेत्रों का मतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में	99
9.	ग्राम क्षेत्रों का मतः सक्रिय राजनीति में योगदान	132
10.	ग्राम क्षेत्रों का मतः वोट देने से सम्बन्धित	134

=:=:=:=:=:=:=

अध्याय १

अ : प्रस्तावना

1. छात्र नेतृत्व की व्याख्या
2. बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में छात्र नेतृत्व का इतिहास
3. वर्तमान शोध समस्या की उपयोगिता एवं विवेचना
4. साहित्य का पुनरावलोकन
5. वर्तमान शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्र नेतृत्व की व्याख्या

प्रजातांत्रिक राष्ट्र भारत की शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त छात्र असंतोष की समस्या बीसवीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यह छात्र असंतोष के विस्फोट से उत्पन्न हुई है। आज का छात्र राष्ट्र का भविष्य है। इसलिए यह आवश्यक होगा कि इसके संबंधित विभिन्न समाजशास्त्रीय कारकों को उचित रूप से समझा एवं परखा जाये। ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के साथ शिक्षण संस्थाओं में नेतृत्व की समस्या का प्रादुर्भाव भारत एवं के सम्पूर्ण प्रान्तों में दृष्टिगोचर हुआ है। यदि प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता को कोई सार्थक दीर्घायु प्रदान करना चाहता है तो छात्र वर्ग में व्याप्त असंतोष को विभिन्न स्तरों पर उचित प्रकार से समझना होगा। शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी के आधुनिक विकास से देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत रूप से प्रभाव पड़ा है। यदि इन व्याख्याओं को सूत्र शब्दों के रूप में परिलक्षित करना है, तो छात्र नेतृत्व - छात्र असंतोष जैसी गम्भीर समस्याओं को ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय, राजनीतिशास्त्रीय, मानवशास्त्रीय एवं कुछ रूप से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना नितान्त आवश्यक होगा।

छात्र वर्ग की आर्थिक विपत्ति रूप से एक ऐसी व्याख्या है, जिसका यदि समाधानकारक निदान न किया गया तो कोई भी देश प्रगति के उच्चतम शिखर पर पहुँचने में अत्यधिक बाधाओं का अनुभव करेगा। संसार के विभिन्न देशों में समाजीकरण एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विशिष्ट रूप से सामयिक विकास हुआ है। इस विकास का प्रभाव विद्यार्थी वर्ग पर नकारात्मक नहीं माना जा सकता है। विकसित देशों जैसे अमेरिका एवं इंग्लैंड में 18 वर्ष की अवस्था के युवकों को

मताधिकार प्रदान किया गया है । संसार के अन्य देशों में भी यह प्रयास किया जा रहा है कि मताधिकार की आयु 18 वर्ष हो । जिससे नागरिकता होकर देश की सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें ।

उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन करने से स्पष्ट होता है कि नेतृत्व की व्याख्या विभिन्न समाज वैज्ञानिकों ने कई दृष्टिकोणों से की है । समाज वैज्ञानिक इनसाइक्लोपीडिया (1957) में नेतृत्व को इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि "एक व्यक्ति का समाज के साथ निर्देशित व अन्तर्क्रियात्मक रूप से समान हितों के लिए क्या सम्बन्धों का व्यवहार है"। व्यक्ति स्वयं या सामाजिक कारणों से प्रेरित होकर व्यक्तिगत एवं सामाजिक प्रतिनिधित्व का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है । इस व्यवहार करने वाले कारकों से इस प्रक्रिया को निश्चित रूप से अलग किया जाना चाहिए । जिससे कि नेतृत्व सम्बन्धी विभिन्न कारकों का अलग-अलग मूल्यांकन हो सके । समाज में व्यक्ति अपनी शक्ति का प्रयोग परम्पराओं, संस्कृति या आर्थिक कारकों के कारण करता है । यदि किसी व्यक्ति का प्रभाव समाज पर अधिक समय तक नहीं रहता है तो इसे अल्पकालिक नेतृत्व ही माना जायेगा । व्यक्ति अपनी भावनाओं से ओतप्रोत होकर समाज पर अमिट प्रभाव डालता है तो उसे उच्चादर्श समझा जायेगा । सामंजस्य पूर्ण रूप में वास्तविक नेतृत्व वहीं होता है जिसमें व्यक्तियों का एक समूह स्वेच्छा से नेता का अनुसरण करे। इसमें किसी प्रकार का सामाजिक या मानसिक प्रभाव नहीं होना चाहिए । साथ-साथ अन्य भावनाओं के वशीभूत भी किसी व्यक्ति का अनुसरण नहीं किया जाना चाहिए अपितु उचित कारणों

को स्पष्ट स्थान देते हुए अनुसरण की प्रक्रिया व्यक्तियों द्वारा अपनाना चाहिए ।

वेन्द्रम ने एक अनुसंधित ग्रन्थ में नेतृत्व की लगभग एक सौ तीस परिभाषाओं का संकलन किया है। मोरिस एवं सीकेल (1950) ने इन परिभाषा का प्रमाप वर्गीकरण किया है । आधुनिक जगत में नेतृत्व की परिभाषाओं एवं व्याख्या समाज विज्ञान के क्षेत्रों में की जाती है । तानेनबाम एवं कार्ती बर्ग (1949) ने नेतृत्व की रचनात्मक व्याख्या की है । इनके अनुसार नेतृत्व को परिवर्तन का आधार माना जा सकता है और एक व्यक्ति का प्रभाव समाज के अधिकांश व्यक्तियों पर होता है। इनके विपरीत विचारों का अवलोकन इन्होंने नहीं किया है । गिब (1950) के अनुसार नेतृत्व को एक समाज के सदस्यों के बीच अन्तः क्रियाओं के सम्बन्ध में विश्लेषित किया गया है । स्टागडिल (1952) के अनुसार व्यक्ति का नेतृत्व सम्बन्धी गुण समाज की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है । उपर्युक्त वर्णित व्याख्याओं के अतिरिक्त अन्य कई विभिन्न परिभाषा सम्बन्धी साहित्य में उपलब्ध है ।

विद्यार्थी नेतृत्व के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है कि छात्र नेतृत्व का प्रभाव केवल छात्र वर्ग या विशेष सेन्थाओं तक ही सीमित नहीं है अपितु समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है । अतः विद्यार्थी वर्ग की अन्तः स्थिति अध्ययन का क्षेत्र, प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता भी छात्र नेतृत्व के लिए उत्तरदायी कारक होते हैं ।

वर्तमान शोध विषय में छात्र नेतृत्व को एक मात्र शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में उपयुक्त किया गया है। अतः यह उचित होगा कि अध्ययन की विषय वस्तु परिधि में मात्र शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्रों को छात्र नेतृत्व की संज्ञा समझा जाये।

2. बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में छात्र नेतृत्व का इतिहास

बीसवीं सदी के पूर्व भारत पर विहंगम दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा का विकास नगण्य था। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा खोली गयी प्रारंभिक पाठशालाओं में शिक्षा का सूत्रपात इस क्षेत्र में किया। प्रथम विश्व युद्ध के समय तक कुछ चुनिन्दा हाई स्कूल भी स्थापित किये गये। ब्रिटिश कालीन कठोर प्रशासनिक व्यवस्था के फलस्वरूप उस समय में स्थापित शिक्षण संस्थाओं में छात्र संघ प्रतिनिधि की प्रथा विद्यमान थी। प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त इस क्षेत्र में कुछ हाई स्कूल एवं माध्यमिक विद्यालय स्थापित किए गये जो ब्रिटिश शासन के कठोर प्रशासनिक नियन्त्रण में थे। जिसके फलस्वरूप किसी भी प्रकार के छात्र नेतृत्व व छात्र असंतोष का इतिहास बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में उपलब्ध नहीं हो सका है।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त स्वतन्त्रता संग्राम अपने चरमोत्कर्ष पर था और इसके फलस्वरूप सन् 1947 में भारत वर्ष ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। इसी समय से भारतीय गण राज्य का नया एवं प्रखर रूप सामने आया है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने सरकारी व्यवस्था के लिये प्रजातांत्रिक पद्धति को अपनाया है। यह ऐसा प्रावधान है जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों को अधिक प्रतिनिधित्व मिला है। विश्वविद्यालयीन एवं माध्यमिक

शिक्षा संस्थाओं में छात्र यूनियनों का उदय भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हुआ । इस व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षण सत्र के प्रारम्भ में छात्र पदाधिकारियों का चुनाव करने एक समिति का नियुक्ति करते हैं और इस समिति का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह शिक्षण सत्र में छात्र हितों का उचित प्रतिनिधित्व कर सके । परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा अर्थ एवं प्रशासन की प्रक्रिया के कारण इन छात्र समितियों का राजनीतिक दृष्टिकोण से उपयोग किया जाने लगा है । बुन्देलखण्ड क्षेत्र की स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के चुनावों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न मनोवृत्तियों वाले राजनीतिक व्यक्ति इन चुनावों को किस जिज्ञासा से देखते हैं ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अन्तराल पश्चात सन् 1975 में देश में गम्भीर स्थिति पैदा हुई और इसके निराकरण हेतु केन्द्र सरकार को देश में सेल्फ रूल की घोषणा करनी पड़ी । इसके साथ ही छात्र समितियों एवं छात्र चुनावों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया । राजनीतिक प्रगति के कारण यह व्यवस्था अधिक दिनों तक नहीं चल सकी । इसके पश्चात प्रजातांत्रिक सरकार ने सभी माह प्रक्रियाएं एवं छात्र संघों का चुनाव पुनः होने लगा तथा छात्र संघों में सक्रियता आ गयी ।

वर्तमान समय में इस क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में छात्र समितियां नियमित रूप से गठित हो रही हैं । शिक्षण सत्र के प्रारम्भ में ही इन समितियों के चुनाव होते हैं । सामान्यतः इन समितियों में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष एवं कुछ सदस्य के पदों का निर्धारण होता है इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि कुछ शिक्षण संस्थाओं में मात्र अध्यक्ष का चुनाव होता है और वह अन्य सहयोगियों की सहायता से कार्यसमितियों विभिन्न सदस्यों का मनोनयन स्वयं करता है । बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कुछ इस प्रकार की शिक्षण संस्थायें हैं जिनमें विरोधी-दल का निर्माण होता है सामान्यतः कुल चुनाव में पराजित उम्मीदवार

जिसे पुलाय जीते हुए उम्मीदवार से कम मत प्राप्त हुए हैं, वह एक कार्य समिति का चयन स्वयं करता है । अतिरिक्त इस में भी पदों का परिवर्तन होता है । यह व्यवस्था बुन्देलखण्ड क्षेत्र की एक मात्र शिक्षण संस्था बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी में ही विद्यमान है । अन्य अतिरिक्त बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्य परास्नातक, स्नातक एवं माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में इस प्रकार की व्यवस्था विद्यमान नहीं है ।

शिक्षण संस्थाओं में निर्मित इन छात्र समितियों का कार्य काल शिक्षण सत्र के अन्त में समाप्त हो जाता है । कार्य वाहक रूप से छात्र समितियों के पदाधिकारी अगले शिक्षण सत्र के छात्र चुनावों तक कार्यरत रहते हैं । इस अवधि में मुख्य कार्य केवल अल्पकाल हारा ही सम्पादित होते रहते हैं ।

छात्र समितियों का मुख्य कार्य शिक्षण संस्थाओं में रचनात्मक क्रिया कलापों में वृद्धि करना होता है । छात्र गतिविधियों का प्रारम्भ में उद्घाटन समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है । शिक्षण सत्र के अन्त में छात्र गतिविधियों का समापन समारोह भी दीक्षा पूर्ण होता है । शिक्षण सत्र के मध्य समय में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम छात्र समितियों के पदाधिकारियों हारा आयोजित किए जाते हैं । इसके साथ-साथ प्रशासनिक मामले होने पर यही छात्र प्रतिनिधि मंच पर धारण करके प्रशासन एवं विद्यालयी गतिविधियों के लिए जनों को उकसाते हैं ।

3. वर्तमान शोध समस्या की उपयोगिता एवं विवेचना

समाज शास्त्रीय क्षेत्र की व्यापक एवं जटिल समस्याओं में से अत्यधिक महत्वपूर्ण शोध समस्या वर्तमान कार्य के लिये चुनी गयी है- जैसा कि शोध प्रबन्ध के शीर्षक "छात्र नेतृत्व का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शैक्षणिक संस्थाओं के संदर्भ में" से स्पष्ट होता है । यद्यपि विकास की विभिन्न दशाओं का सतीय विकास

समाजशास्त्रीय ग्रन्थों एवं अन्य विषयक सामग्री में उपलब्ध है, परन्तु भारत जैसे विशालतम राष्ट्र में जातिय समाज की समस्याएँ स्थानीय क्षेत्रों के आधार पर अधिक व्यापक है, अतः नेतृत्व सम्बन्धी कोई भी पूर्ण या आंशिक प्रकाशन बुन्देलखण्ड क्षेत्र से सम्बन्धित उपलब्ध नहीं हो पाया है। इस भूमिका से अन्तर्गत प्रेरित होकर समाज वैज्ञानिकीय क्षेत्र में एक विनम्र योगदान के लिये वर्तमान शोध विषय का चयन किया गया है। यह अभिलेख पूर्ण चयन निश्चित रूप से उपयोगी होगा।

संसार के सभी समाजों में अपनी भावनाओं एवं आवश्यकताओं को अभिव्यक्ति करने की स्वतन्त्रता रही है। इनको व्यक्त करने के लिये नेतृत्व जैसी प्रक्रियाओं का प्रधानता के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता है। प्रत्येक समाज में नेतृत्व परिवर्तन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है।

समाज के विभिन्न मूल्य सामाजिक समस्याओं के कारण बने जाते है। किसी भी सामाजिक समस्या का अध्ययन बिना परम्परागत मूल्य के सम्भव नहीं है। भारतीय समाज के दृष्टिकोण से जाति नेतृत्व की जो वर्तमान समस्या है वह न तो प्राचीन काल में विद्यमान थी और न ही संसार के अन्य देशों में इतनी तीव्रता एवं जटिलता से विद्यमान है। राष्ट्रीय प्रगति को यदि यथार्थ में परिभाषित किया जाये तो कहना होगा कि राष्ट्र के केन्द्रण है एवं में विद्यार्थी वर्ग का सक्रिय योगदान होता है। विश्वविद्यालयीन परिसरों में आवश्यकतानुसार जातिय समस्याएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन समस्याओं ने कुछ विश्वविद्यालयों में अपना विकराल रूप लिया है कि शिक्षा के संचालन करने वाले वरिष्ठ प्राध्यापक, शिक्षार्थियों एवं शिक्षा नीतियों का निर्धारण करने वाले उचित निर्णय करने में असफल है। शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त अशुद्धता का वातावरण, जो छात्र आन्दोलनों के कारण उत्पन्न होता है, उस परिस्थिति में कोई भी शैक्षिक पुनरावृत्ति टिप्पणी करने से इन्कार कर देता है। भारत एवं एक कृषि प्रधान

देश है और हर समय के फलीडया सर्वेक्षण के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि देश की लगभग 80 प्रतिशत जनता आज भी ग्रामीण अन्चलों में निवास करती है ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था क्या इतनी सक्षम है कि इन सहकारियों से आने वाली ग्राम विकास तैय्यारों में ग्राम नेतृत्व जैसी व्यवसीय एवं उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य को सफलता से निभा सकें ।

विभिन्न समाजशास्त्रीय खोजों से यह स्पष्ट होता है कि विकास तैय्यारों में अक्सर आन्दोलन एवं नेतृत्व राजनीति से प्रेरित होती है । स्काल्प 1972) । यह राजनीतिक पक्ष अक्सर राजनीतिक नेताओं एवं विधायिकों के आपसी सम्बन्धों के कारण मुख होती है । प्रजातांत्रिक राष्ट्रों में ग्राम वर्ग के चुनाव हेतु समुचित आर्थिक सहायता, स्थानीय राजनीतिक कार्य-कर्ताओं द्वारा प्रदान किये जाने के समाचार भी हैं । स्काल्प एवं स्काल्प (1971) के अनुसार भारत जैसे में ग्राम राजनीति देखने को मिली है विभिन्न राजनीतिक पार्टियों से प्रेरित होती है । पिट्ठल (1962) के अनुसार ग्राम राजनीति की अधिकता अध्यापकों एवं राजनीतिज्ञों के बीच आपसी सम्बन्ध के कारण उत्पन्न हुई है ।

नेतृत्व से सैद्धान्तिक अभिगम कोई विशेष समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से आत्मसात्मकउद्देश्य एवं सामान्य स्वभाव वाला है। इस वर्ग के अन्तर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में व्यापक परम्पराओं कार्यविधियों एवं उनके परिवर्तनीय प्रभाव पर प्रकाश पड़ेगा । यह कल्पनाओं सिद्ध होगा कि समूची सामाजिक व्यवस्थाओं का ग्राम नेतृत्व से क्या सम्बन्ध है । एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ऐसे कारकों की सैद्धान्तिक रूपरेखा को आदर्श समाज की स्थापना की जा सके यह

भी उचित होगा कि विद्यार्थियों में व्यापक असंतोष के लिये जो उत्तरदायी सामाजिक कारक हैं उनका निरूपण किया जा सके। राष्ट्रीय नीति के अतिरिक्त, मुल्लेखनीय क्षेत्र में विकास की महती आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों का योगदान सकारात्मक नहीं पा सका है।

4. साहित्य का पुनरावलोकन

वर्तमान शोध विषय के लिये विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध शोध पत्रों, ग्रन्थों एवं समाचार पत्रों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उपलब्ध सामग्री का विवरण निम्न प्रकार है :-

आधुनिक शिक्षालयीन शैली में आयु के अनुरूप उचित पर्यावरणीय कारक यथा भोजन, उपयोग की वस्तुयें एवं स्नेह का अभाव है। प्रगति शनैःशनैः अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच रही है परन्तु व्यक्तियों के हितों की सुरक्षा कोई भी समुदाय या राष्ट्र निश्चित रूप से प्रदान नहीं कर पा रहा है। विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहां पर छात्र असन्तोष की समस्या विद्यमान न हो। विश्वविद्यालय परिसरों में बढ़ती हुई अशान्ति मात्र किसी एकल बिन्दु से सम्बन्धित नहीं होती है बल्कि इसकी पृष्ठ भूमि में कई अन्य कारक होते हैं। भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने विश्वविद्यालयीन शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं उनका विवरण इस प्रकार है, "एक विश्वविद्यालय मार्गदर्शक, सहिष्णुता, प्रगति के लिये साहसिक विचारों एवं सत्य की खोज के लिये होता है"।

रे । 1977 । द्वारा किये गये बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बन्धित छात्रों के अध्ययन के अनुसार यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षण संस्थाओं से राजनीति को दूर रखना चाहिये एवं इसी से एक आदर्श शिक्षण संस्था की कल्पना सम्भव है । सिंघल ।1968। ने अपने अध्ययन से प्रतिपादित किया है कि छात्र समुदाय प्रशासन के लिये सबसे राजनीति का कारक है । आर.के. ।1968 । के अनुसार भारतीय शिक्षण संस्थाओं में अनुशासनहीनता का प्रादुर्भाव तीव्रता पर है । गोविन्दो । 1965 । के अनुसार भारतीय कक्षा में विद्यार्थी भी एक समस्या के रूप में समझा जाता है । बोना । 1969 । ने ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले छात्रों के कारण विश्वविद्यालय परिसर का वातावरण दूषित होना प्रतिस्थापित किया है । विद्यार्थियों की क्रियाविधियों एवं प्रशासनिक नियन्त्रण के सम्बन्ध में सा । 1962 &' बीचर । 1962 । एवं डलियट । 1972 । का उल्लेखनीय योगदान है ।

छात्र नेतृत्व को/ स्पष्ट रूप से समझने के लिये आवश्यक होगा कि व्यवहार एवं समाजीकरण की प्रक्रियाओं को समझा जाये । समाजीकरण एक व्यापक एवं जटिल प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह विशेष में तथा उसमें भी अपने स्थान के अनुरूप उपयुक्त सामाजिक अभिवृत्ति तथा भूमिका व्यवहारों से युक्त होकर समाज का अंग बनता है । अपने समूह द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को व्यक्ति एवं समूह के साथ सफल अभियोजन स्थापित करता है । समाजीकरण एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।जो अभिभावक, परिवार, परिवेश तथा विद्यालय जैसे/ औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से तैयारित एवं निर्देशित करते रहते हैं । यह औपचारिक तथा अनौपचारिक व्यवस्था के ही व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को विकसित एवं परिष्कृत करते रहते हैं । इस प्रक्रिया में इन औजारों के

द्वारा व्यवहार का सम्यक परिमार्जन नहीं होता है तब व्यक्ति के व्यक्तित्व में विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। अतः व्यवहारों का सुधारात्मक परिष्कार व्यक्तित्व के विकास के लिये आवश्यक है। ऐसी स्थिति में व्यवहार का परिष्कार या परिमार्जन एक महत्वपूर्ण प्रश्न हो जाता है। इसीलिए समाज वैज्ञानिकों ने उन विभिन्न कारकों और तत्वों का अध्ययन किया है जो समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यवहार का नियन्त्रण करते हैं। समाजीकरण में विभिन्न रीतियों द्वारा व्यवहार नियन्त्रण में उपयुक्त तकनीकें कई प्रकार की होती हैं। इन तकनीकों का उपयोग अधिकांशतः बाल्यावस्था में किया जाता है। तथा यह उसी समय अधिक सरलता के साथ उपयुक्त भी होती है, क्योंकि वयस्क में व्यवहार न तो पूर्ण विकसित होते हैं और न ही परिवर्तन का प्रतिरोध ही करते हैं। व्यवहार के यह नियन्त्रक दो श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं : बाह्य तथा आन्तरिक, बाह्य नियन्त्रकों की श्रेणी में वह नियन्त्रक आते हैं जो व्यक्ति से पृथक अस्तित्व रखते हैं जबकि आन्तरिक नियन्त्रक स्वयं व्यक्ति द्वारा ही प्रयुक्त होते हैं। आरम्भ में बाह्य नियन्त्रक ही सक्रिय रहते हैं किन्तु आयु में वृद्धि के साथ-साथ व्यक्ति क्रमशः स्वनियन्त्रण की क्षमता प्राप्त करने लगता है (विग 1973, तिवारी 1973 (पेशिवलम तथा केयर (1958) के अनुसार अभाव या वंचना की स्थिति सामाजिक प्रेरक है और जैविक अभिप्रेरकों की ही भाँति व्यक्ति को सामाजिक अभिप्रेरक के प्रति क्रियाशील बना देती है।

रिटेन्सन तथा विग (1965) के अनुसारउत्तमता के पश्चात् सुधारात्मक पुनर्बलन की स्थिति में पुनर्बल के अभाव की अपेक्षा निम्न कोटि का निष्पादन होता है। यह परिणाम अनुक्रियात्मक के उच्चस्तर

अनुक्रियाओं में अधिक पाया जाता है । निर्भरता और क्रोध की अनुक्रियाएँ उसी तरह की होती हैं । इसलिए उनके परिणामों में धनात्मक पुनर्बलन का उपयोग प्रेरक करनेवाला होता है ।

समाजीकरण के क्षेत्रों में व्यवहार नियन्त्रण की दृष्टि से महत्वपूर्ण बाह्य नियन्त्रक आदतें हैं । बच्चों के व्यवहार के साधारण निरीक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुकरण तथा निरीक्षण के द्वारा समाजीकरण के अन्तर्गत घटित होने वाले व्यवहारों का नियन्त्रण करते हैं । गेलेन्ड । 1962 । ने अपने अध्ययन से स्पष्ट किया है कि यदि बालक को अपने विगत जीवन में अत्यधिक अधिक मिली है और आत्मनिर्भर व्यवहार हेतु धनात्मक पुनर्बलन प्राप्त हुआ है तो उसके अंदर आदतों की अनुक्रिया तीव्र के अनुकरण की अधिक सम्भावना है ।

बैन्डूरा तथा ह्यूस्टन । 1964 । एवं राल । 1966 । के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि अनुकरण व्यवहार उच्च पर निर्भरता वाले बच्चों में निम्न पर निर्भरता वाले बच्चों से अधिक मात्रा में प्रदर्शित होता है । बैन्डूरा । 1965 । के अनुसार आदतों की अनुक्रिया को पुनर्बलनान्वित करने की क्षमता अधिकांशतः आदतों एवं बच्चे के वातावरण के पारस्परिक सादृश्य पर निर्भर करती है ।

सामाजिक अधिगम के क्षेत्र में किये गये अध्ययनों से दण्ड व्यवहार नियन्त्रण का एक प्रमुख स्रोत सिद्ध हुआ है । बैन्डूरा तथा वाल्टर्स ।1963। के अध्ययन से जिस परिकल्पना का निर्माण हुआ है वह इस प्रकार है कि बच्चे के व्यवहार पर दण्ड का प्रभाव, दण्ड के स्रोत की प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है और द्वितीयक रूप से ही उसे दण्ड के पीड़ा उत्पादक गुण निर्धारित करते हैं । चूँकि दण्ड का प्रौढ़ व्यक्ति ही प्रायः पुरस्कार भी प्रदान करता है अतः उसके द्वारा दण्ड प्राप्त करने का अर्थ पुरस्कार का वापिस लेना होता

है । इसलिये यह बड़ा अधिकारी होता है । पार्क तथा बार्नर्ड । 1967 । ने अपने अध्ययनों के आधार पर भी इस परि-कल्पना की पुष्टि की है ।

तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप लाखों करोड़ों व्यक्ति अपने घर-बार छोड़कर नगरों में संकलन हो गये हैं । नगरों में आने वाले ये नवीन आगन्तुक गृह-हीन हैं और यदि इनकी आवास व्यवस्था है भी तो वह असंतोषजनक तथा अस्वास्थ्यकर है । विश्व के किसी भौद्योगिक नगर में कलकत्ता के फुटपाथ वाले प्रवास में रहती हुई वस्तुओं की भाँति ही गतिशील देखे जा सकते हैं । यदि हम प्राचीन पारिवारिक जीवन को वास्तविक रूप से दृष्टिगोचर करना चाहते हैं तो तकनीकी प्रगति के निर्मित नये एवं स्थानिक संगठनाओं को अच्छी तरह समझना होगा । इसके लिये कुछ प्रतिबन्ध लगाने होंगे जिससे मानव कार्यकलाप दूषित न हो जाये ।

हरलोक ।1955। ने कुशलक्षेम को आत्यधिक असंतोषजनक अवस्था कहा है । इसके लिये विभिन्न अभिकरणों एवं सेवा-संस्थानों का मत है कि बढ़ती हुई अपर्याप्त सामाजिक समस्यायें ग्राम असन्तोष के लिये उत्तरदायी हैं और इसी के फलस्वरूप विभिन्न सेवा संस्थाओं में ग्राम नेतृत्व के नये परिलक्षित होते हैं । ओगबर्न । 1949 । के अनुसार कुशल आनन्दोप व्यवहार के फलस्वरूप अपरिहार्य है एवं इसका पूर्वा-भास नहीं किया जा सकता है । लेन एवं लोयल ।1949। ने अपने अध्ययनों के आधार पर प्रतिपादित किया है कि यदि कोई अव्यवस्था ग्राम समुदाय में स्थापित करता है तो उचित आयु कुशलक्षेम की है ।

ईस । 1949। के अनुसार प्रायः सभी कुशल पारिवारिक आवश्यकताओं एवं नियन्त्रण के प्रति सजग रहते हैं एवं अनुकूलन को प्रतिबन्ध होती है, के फलस्वरूप वह स्वयं अनुदारिक अनुभव करते हैं ।

प्राचीन समय से यह विदित है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समूहों में निवास करता है।सामूहिक प्रयासों के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति स्वास्थ के लिये पुरस्कार की अपेक्षा करता है । यदि व्यक्ति अकेला कार्य करेतो वह उतना प्रभावी नहीं होगा जितना कि समूह के सभी सदस्यों के साथ कार्य करने से हो सकता है । अधिकांश मानवों का समूह के प्रति वैचारिक क्रियाओं के फलस्वरूप लगाव होता है । पूर्व के कई दशकों में यह प्रयास किया गया कि मनुष्य की सामाजिक प्रवृत्ति के बारे में विस्तृत व्याख्या की जा सके । समस्याओं के निराकरण के लिये सामूहिक प्रयास अत्यन्त आवश्यक है इसके लिये समूह के सभीसदस्यों के सहयोग को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है । अहीर एवं मिश्र, 1951 ।।

विकास की विभिन्न दशाओं में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि मानव का सामाजिक जीवन कब प्रारम्भ हुआ । समाजों के उद्भव के बारे में भी समाजशास्त्रियों के विश्लेषण यह निर्दिष्ट करते हैं कि समाज का गठन आधुनिक नहीं है । इस तात्पर्य में प्रारम्भिक पोलिनेशिया, प्राचीन इजिप्ट, परम्परागत चीन एवं इस्त्रे ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम हैं कि समाज का उद्भव कई हजार वर्ष पुरानी प्रक्रिया है । समाज एवं व्यक्ति के परिवरण में पाये जाने वाले विभिन्न कारकों से यह निर्धारित होता है कि सजीवता स्तरण, श्रम विभाजन, नीतिक ढंग, प्रतिष्ठा, प्रभाव, सहमति, अधिकार, शक्ति एवं इसका उपयोग किस प्रकार का हो । किसी समाज में प्रभुत्व प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि वास्तविक रूप में उस समाज के अधिकांश व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त हो और व्यक्ति जिसमें वांछित गुणों को प्रदर्शित करने की क्षमता हो उसी को सही अर्थों में नेता कहा जायेगा । नेतृत्व इस प्रकार

ने व्यक्ति को नये सिरे से कार्य करने के लिये बाध्य करता है । यदि परिवर्तन जैसी कोई समस्या सामने आती है तो व्यक्ति उसका विरोध करता है ।

नेतृत्व सम्बन्धी व्याख्याओं के लिये कई शोध-पत्र विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तुत किये गये हैं । लेवातीन्स्की वर्तास एवं गोडेट (1944) ने व्याख्या की है कि पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित नेतृत्व सरल होता है । एडीन (1942) हेकमैन एवं मूल्टन (1950) ने नेतृत्व की व्याख्या करने के लिये पूर्वानुमान की पुष्टि की है । इन्होंने नेता एवं अनुयायियों के बीच अन्तर भी स्थापित किया है । प्रजातान्त्रिक समाजों में नेता एवं अनुयायियों के बीच अन्तर स्थापित करने में अधिक कठिनाई होती है । नेतृत्व सम्बन्धी अन्य दिशा के उल्लेखनीय शोधपत्र (पार्के 1930, रिप्ले 1935, लिण्डस्मिथ एवं स्नूक, 1940, बारकार 1956, गिब, मोटन एवं मिलर 1951, काटज 1951, रोथ 1956, ले 1951, कार्टर 1952, पिजर्स 1947, बरनो विट्ज 1953, एवं मौकोबी 1931) में उपलब्ध हैं ।

भौतिक जगत में मनुष्य एवं उससे ऊपर निर्मित सामाजिक संगठनों को सामाजिक अन्वेषण की दृष्टि से बहुत उपयोगी माना जाता है । अधिकांश अन्वेषणीय अध्ययनों से यह निर्धारित हुआ है कि मानव सामाजिक व्यवस्था में नेतृत्व का उद्भव प्राकृतिक प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया के ऊपर विभिन्न कारकों का प्रभाव निम्नलेख रूप से पड़ता है (लोच 1975, आर्डे 1966, गारेन्स 1963, काउन्ट 1958, टाउनर एवं कोवल 1971) । प्रत्येक सामाजिक संगठन में प्रभुत्व का स्तर सामाजिक स्तर एवं व्यक्तिगत क्रिया-कलापों के कारण अलग होता है । इस परिकल्पना की पुष्टि के लिये विभिन्नसमय दैशनिक समय-खण्ड पर वैज्ञानिक अन्वेषण कार्य करते रहे हैं (वर्नस्टीन 1970) । जटिल सामाजिक व्यवस्था एवं प्रभुत्व की

समस्या विशिष्ट रूप से अध्ययन विषय सामग्री नहीं है। यह विस्तृत रूप से स्वीकार किया गया है कि जब से मानवीय सामाजिक संगठनों का उद्भव हुआ-तभी दुबारा क्रिया प्रणाली के लिये नेतृत्व होता रहा है। यह नेतृत्व अन्तः क्रियाओं एवं अन्तः सम्बन्धों की दृष्टि से हर क्षेत्र में उपयोगी माना गया है। उचित नेतृत्व के अभाव में सामाजिक विकास की प्रक्रिया सम्यक प्रतीत नहीं हुई। प्रभुत्व एवं नेतृत्व पूर्ण रूप से प्रभावी व्यक्तिगत सीमाओं पर आधारित नहीं रहा है। व्यक्तियों द्वारा सामाजिक दृष्टि सेमहत्वपूर्ण किये गये कार्यों के अनुसार नेतृत्व का निर्धारण हुआ। व्यक्ति के व्यवहारों एवं कार्यों में सामंजस्य स्थापित किया गया (राकेश 1972)। मानव समूहों में प्रभावी एवं वांछित नेतृत्व आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सत्ता पर निर्भर करता है। यद्यपि किसी भी क्षेत्र के कमजोर होने से नेतृत्व निःसन्देह रूप से प्रभावी होता है।

हरलोक (1955) ने युवा विकास से सम्बन्धित अत्यधिक उपयोगी ग्रन्थ का सम्पादन किया। इस विषय में युवावों से सम्बन्धित आयु का प्रभाव, युवा परिवर्तन, शारीरिक परिवर्तन में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन, युवावस्था में भावों की स्थिति, सामाजिक व्यवहार, सामाजिक तारतम्य, युवा अभिरुचियाँ, व्यक्तिगत अभिरुचियाँ, युवा मनोविनोद, धार्मिक विकास एवं प्रभाव, आदतें परम्परायें एवं व्यवहार मौन अभिरुचियाँ, सह-सम्बन्ध, पारिवारिक सम्बन्ध एवं व्यक्तित्व के क्षेत्रों में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

विभिन्न स्तरों पर होने वाले युवा परिवर्तनों के लिये क्रो (1945), हिलेगिड (1952), हैवरस एवं स्नेन्डर (1950), डाल (1904), रायबर (1937), डालिंग एवं (1928), मुर्डी (1949), मीड (1928) हैवीघर्स (1950, 1953), स्नीपी एवं हैवीघर्स (1952), स्नेपी एवं

अन्य (1953), क्लिन (1941), मुखर्जी (1952), मेन एवं लोगन (1949), हेकर एवं गेर्ड (1945), ओबलिन (1952), केरी (1944), ओलसेन (1950), ओगार्ड (1939), सीवार्ड (1946), गार्डनर (1947), डेविस (1944), डेरी (1948), फिल (1950), फेनी (1949), कोल (1943), पोप (1943), फेडर (1945), सीविस (1949), ब्लूम (1951), मैरिसन एवं कनिंघम (1952), हन्टर एवं मोरगन (1949), हीथ एवं मेकार्टी (1946), साइमण्ड (1935), स्टोन (1946), थामसन (1952), थामसन एवं विट्टियोल (1948), टैक्सेल एवं लार्ड (1952), एवं अन्य कई समाज वैज्ञानिकों के शोध-पत्र उपलब्ध हैं। इस दिशा में बालसर्स (1942), साईमण्ड (1937), मेरी एवं मेरी (1950), एवं साउदल (1951) का अविस्मरणीय योगदान है। इन्होंने अपने अध्ययनों से व्यक्तित्व सम्बन्धी अवधारणाओं को स्पष्ट किया है। पार्क एवं टिंकर (1960) ने अपने ग्रन्थ लीडर शिप एण्ड पोलिटिकल बिहेवियर इन इण्डोनेशिया में नेतृत्व सम्बन्धी परम्पराओं, व्यक्तित्व एवं नेतृत्व, राजनैतिक संस्थायें, राजनैतिक पार्टियाँ, जन प्रशासन, ग्रामीण विकास एवं प्रशासन तथा भारत में नेतृत्व परिवर्तन के लिये तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन की विवेचनाओं के लिये मेरियम (1945), मोरका (1939), सरकार (1922), मुकर्जी (1952), इंगारवाली आयंगर (1943), सिन्हा (1935-36), मेहता (1946), राधाकृष्णा (1944), आडम (1948), पिल्लर एवं बोन्डयूरान्ट (1956) समाजशास्त्रियों एवं विद्वानों के योगदानों से उपयोगी तुलनायें प्राप्त हुई हैं। वास्तविक रूप से इस अध्ययन में विभिन्न समाज शास्त्रियों के शोध-पत्रों का संकलन किया गया है। यह शोध-पत्र 1956 में वैलीकोलियर विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठी में प्रस्तुत किये गये थे। इस गोष्ठी का विषय "भारत में नेतृत्व एवं राजनैतिक संस्थायें" था।

मेयर सिंह (1963) ने नेतृत्व के विकास एवं गुणों पर अपने विचार व्यक्त किये । यह शोध अध्ययन प्रशासनिक दृष्टिकोण से नेताओं के गुणों की व्याख्या करता है । इन गुणों में व्यवसायिक दक्षता, सौजन्य क्षमता, सामाजिकता, प्रभावीकरण की क्षमता, साहस एवं लगन आदि का सजीव वर्णन किया है । इस अध्ययन के अनुसार नेतृत्व का विकास कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है एवं यह बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ होती है । विद्यालय संस्थाओं में जहाँ चरित्र निर्माण का प्रारम्भिक कार्य किया जाता है, इस बात की आवश्यकता है कि विद्यार्थी के बौद्धिक एवं सामाजिक विकास को उचित रूप से निर्देशित किया जाये । यह तभी सम्भव है जब कि विद्यालय संस्थाओं में अच्छी प्रशिक्षित अध्यापक, अच्छी पुस्तकें एवं उचित वातावरण उपलब्ध हो। युवा वर्ग में नेतृत्व की जागरूकता के लिये प्रादेशिक एवं केन्द्र सरकार उचित योगदान प्रदान कर सकती है । यहाँ यह वर्णन करना आवश्यक होगा कि छात्र आन्दोलनों को राज्य सरकार द्वारा नियन्त्रित किया जाना चाहिये ।

मेयर अग्रवाल (1965) ने नेतृत्व सम्बन्धी विचारों से सम्बन्धित एक व्याख्या की है । जीवन के हर क्षेत्र में सही व्यक्तित्व एवं प्रेरणा की आवश्यकता है । इस अध्ययन में नेतृत्व के गुणों एवं कारकों पर संक्षिप्त सामग्री उपलब्ध है । सामुदायिक विकास में उचित नेतृत्व अपेक्षित है । इसके लिये सामूहिक प्रयास अत्यधिक आवश्यक है । आज के युवा ही देश के भावी कर्णधार सिद्ध होंगे । इसलिये समाज के हर व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व है कि युवा वर्ग को प्रशिक्षित व दीक्षित करें ।

आर्यकि (1968) का योगदान नेतृत्व के कारकों पर विस्तृत व्याख्या उपलब्ध कराता है । इस अध्ययन में छात्र राजनीति एवं विद्यार्थी-विद्यालय का उच्च शिक्षा से सम्बन्ध स्पष्टीकृत है । स्वतन्त्रता के पूर्व एवं

बाढ़ की स्थिति को तथाय ढंग से पाकीं किया गया है। अध्ययन में उपलब्ध जानकारियों को आधार, कोरिया, टर्की एवं अन्य कई राष्ट्रों के परिवेश में विश्लेषित करते तुलनात्मक तथ्य प्राप्त किये गये हैं। इस अध्ययन में प्राप्त उपलब्ध कारकों के विश्लेषण एवं विवेचना की दृष्टि से देसाई (1954) आरलैंड (1960) अलबुकार्क्यिा (1963) सिंह (1962), कामथ एवं देसाई (1963) आदि समाजशास्त्रियों के शोध पत्र उल्लेखनीय है। इस अध्ययन को अत्यधिक उपयोगिता की दृष्टि से अनुभव किया जाता है।

बाल (1960) जो कि अध्ययन की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक है, ने नेतृत्व, मनोविज्ञान एवं सैनिक व्यवहार सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। लम्बे एक दशक की अवधि में किये गये विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों को नेतृत्व की व्याख्या करने के लिये सारगर्भित आधार माना जा सकता है। नेतृत्व की प्रारम्भिक अवधि से लेकर 4 अवस्था तक जितनी सैद्धान्तिक अवधियाँ हो सकती हैं उनका विवरण इस अध्ययन में उपलब्ध है। प्रारम्भिक सूचना प्रदान करने की दृष्टि से वर्तमान अध्ययन नेतृत्व सम्बन्धी साहित्यों में प्रथमिकता रखता है। इस अध्ययन में विभिन्न अवधियों पर पड़ने वाले अन्य कारकों के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है।

सिंह (1975) ने अपने अध्ययन में नेतृत्व के प्रकारों एवं प्रभावी तरीकों से सैद्धान्तिक व्याख्या की है। विकासशील देशों में जहाँ सामाजिक समस्यायें दिन-प्रतिदिन परिवर्तित हो रही हैं नेतृत्व का परिवर्तन भी अपरिहार्य है। स्थानीय नेता इन समस्याओं के लिये उपयोगी भूमिका का निर्माण करते हैं। सामाजिक तैरकना एवं उसकी कार्यविधि बिना किसी गतिशील नेतृत्व के सम्भव नहीं है।

सामाजिक संरचना में मुख्य प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों को नेता कहा जाता है। किसी भी खोज के लिये यह आवश्यक होगा कि इन व्यक्तियों की स्थिति एवं कार्यों का मूल्यांकन किया जाय। इस अध्ययन में परम्परागत एवं विकासशील नेतृत्व सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है। नेता की व्याख्या करने के लिये मुख्य तीन कारकों की विवेचना की गयी है। यह कारक निम्न प्रकार हैं :-

1. व्यक्ति की अत्यधिक भूमिका एवं कार्य,
2. किसी भी दिये गये कार्य में अधिक निष्कर्ष तक पहुँचने के लिये सक्रिय योगदान, एवं
3. विस्तृत नेतृत्व का स्थानीय से अधिक बाहरी राजनीति में योगदान।

इस अध्ययन में केन्द्रल (1950), डालविन (1964), कार्टर (1953), गोविन्देतकी (1962), वासकिंगर (1962), पालमी (1959), हन्टर (1953), एगर (1956), पालमी एवं अन्य (1962), गिब (1947), गोल्डनर (1950), स्टागडिल (1948), ड्रीकेल एवं अन्य (1963), काकेल (1958), (1959), कोल्मीन एवं आलान (1964), किंबाल एवं मायरलास (1955), रोबी (1957), कार्ब एवं हॉर (1966), एगर एवं गोल्डरिच (1958) के अध्ययनों से प्राप्त सूचनाओं को विश्लेषण की दृष्टि से अधिक स्थान दिया गया है।

महाजन (1975) की अध्ययन क्षेत्र के दृष्टिकोण से अतिशय रोचक है, वे विभिन्न स्थानीय स्तरों में भाग लेने वाले नेताओं, बड़े आर्थिक सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के नेतृत्व सम्बन्धी गुणों पर प्रकाश डाला है। व्यक्तित्व विशेषों की व्याख्या में इस विवरण को उपयोगी दृष्टि से देखा जाता है।

जैन (1974) ने अपने अध्ययनों में विद्यार्थी आन्दोलन के प्रमुख सिद्धान्तों की विवेचना की है । विभिन्न देशों में व्याप्त युवा विद्रोह एक सामाजिक तत्व है । पिछड़ापन पूँजीवादी या समाजवादी सभी देशों में युवा क्रियाशीलता नये-नये आयामों में अवधारित हुई है । इस समस्या के निदान हेतु विभिन्न देशों के समाज वैज्ञानिक सक्रियता से लगे हुये हैं । इस शीर्ष पत्र में व्याख्या की दृष्टि से दास (1962), सिन्हा (1969), सिन्हा एवं मेन्गराडे (1971), गोयल (1969) एवं श्री निवास (1969) के अध्ययनों को प्राथमिकता प्रदान की गयी है ।

श्रीवास्तव (1975) ने प्रशासनिक क्रिया विधियों में छात्रों के योगदान पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है । यह अध्ययन अध्यापक एवं शिक्षण संस्थाओं तक ही सीमित रहा है । शिक्षण संस्थाओं के क्षेत्रों में प्रशासनिक दृष्टिकोण से छात्रों का किस सीमा तक नियन्त्रण किया जाना चाहिये, भी चर्चित है । वस्तुतः यह मनोवैज्ञानिक सैद्धान्तिक जानकारी प्रदान करता है ।

शिक्षा, जैन एवं दीक्षी (1975) का युवा, विश्वविद्यालय एवं समुदाय सीर्षक अध्ययन महत्वपूर्ण है । इस अध्ययन में सामुदायिक विकास, सेवा योजना, सामाजिक सेवाओं की आवश्यकतायें एवं प्रकार, छात्रों का सामुदायिक विकास में योगदान विश्वविद्यालय एवं समुदाय, सामाजिक कार्यों का समाज में युवाओं की स्थिति एवं भूमिका, विकास के कार्यों में विद्यार्थियों की संलग्नता से सैद्धान्तिक मनोवैज्ञानिक कारकों की व्याख्या की गयी है ।

रे (1977) का अध्ययन की बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है, एक मात्र ऐसा शीर्ष प्रबन्ध है जिसमें सीमान्त समय में छात्र नेतृत्व सम्बन्धी शीर्ष समस्याओं के लिये ठोस आधार भाषा

जा सकता है । इस शोध प्रबन्ध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि डा० नेतृत्व एवं डा० आन्दोलन सम्बन्धी समाजशास्त्रीय अध्ययन बड़ा कठिनाई से उपलब्ध है । इस अध्ययन के विश्लेषण के लिये जिन प्रमुख शोध कार्यों को सैद्धान्तिक किया गया है उनमें गोखिनी (1965), पीनर (1962), ओमेन (1974), माथुर (1969), सिनहा (1970), वान्दर पार्तीगहन (1959), ओना (1969), सक्सेना (1966), साह (1967), डनिंघम (1972), शाह (1968) एवं गोखले (1973) के अध्ययन प्रमुख हैं ।

मेहरा (1977) के अनुसार आधुनिक समाजों में सुधा वर्मा का क्या योगदान होना चाहिये पर समीक्षात्मक शोध प्रबन्ध उपलब्ध है । इस अध्ययन में सुधा वर्मा का परिवार, शिक्षा संस्था, पड़ोस, सम्बन्धु के समूह, मनोरंजन एवं सुधा वर्मा की आकांक्षाओं का विवरण दिया गया है । उपलब्ध सभी तथ्यों को प्रतिनिधात्मक तौरकीय विधि का उपयोग करते हुये वर्गीकृत एवं वर्णित किया गया है ।

बोस (1977) ने डा० वर्मा के विचारों को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं एवं उनके निराकरण हेतु तथ्य प्रस्तुत किये हैं । विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण इस अध्ययन में उपलब्ध है । इस अध्ययन से विवरण प्राप्त होता है कि विश्वविद्यालयीय शिक्षा को समय-समय पर किस प्रकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियन्त्रित किया जाना चाहिये । माध्यमिक एवं स्नातक शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी विचारों का यह संकलन है ।

सरन (1978) ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाले कारकों का विश्लेषण

किया है । ग्रामीण नेतृत्व के बारे में यह अध्ययन उपयोगी सूचनायें देता है । सामाजिक संस्थायें जैसे स्थानीय राजनीति, पंचायत व्यवस्था, जाति व्यवस्था एवं पर्यावरण संबन्धी कारकों का विवरण इस अध्ययन में उपलब्ध है ।

डेसूजा (1970) ने अपने अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण कारकों का विवरण नेतृत्व के संदर्भ में प्रदान किया है । इस अध्ययन में भारत एवं अफ्रीका के समुदायों में किस प्रकार की राजनैतिक एवं शिक्षा संबन्धी सुविधायें उपलब्ध हैं उनका भी विवरण किया गया है । नेतृत्व के लिये उचित मार्गदर्शन देने हेतु किस प्रकार की तकनीकी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये का भी विवरण इस अध्ययन से प्राप्त होता है ।

5. वर्तमान शोध अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन को विभिन्न आधारों पर ग्राम नेतृत्व के संदर्भ में अत्यधिक उपयोगी माना जा सकता है :-

प्रथम - नेतृत्व से संबन्धित प्राचीन सूचनाओं को परिवर्धित करने की आवश्यकता है क्योंकि इनमें उपयोगी समाजशास्त्रीय मॉडल आदि अधिक सटीक नहीं है,

द्वितीय - तथ्यों एवं सिद्धान्तों को निर्देशित होने की आवश्यकता है । जिससे कि उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री विभिन्न सामाजिक स्तरों एवं संस्थाओं में उपयोगी सिद्ध हो सके ।

विभिन्न संस्थाओं में ग्राम नेतृत्व संबन्धी उपलब्ध प्रारम्भिक सूचनाओं के आधार पर वर्तमान शोध समस्या का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा । यह सिद्ध करना है

विभिन्न कारकों पर प्रभाव डालेगा ।

विभिन्न संस्थाओं के संदर्भ में ज्ञान नेतृत्व की समस्याओं का स्पष्टीकरण करने के लिये कई प्रशासनिक प्रयास हुये हैं । अपितु शोध कार्य की दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कोई सूक्ष्म सा भी प्रयास नहीं किया गया । वस्तुतः ज्ञान नेतृत्व एवं संस्थाओं की समस्याओं में सिद्धान्तवादी, शोध कार्य एवं तात्त्विक कार्यकर्ता अधिक भूमिका रहे हैं । इसके लिये विभिन्न लेखकों एवं सिद्धान्तवादियों द्वारा प्रतिपादित तथ्यों को वर्णित किया जा सकता है । ड्राकर एवं कोहन 1950 । । अनुसार नेतृत्व से सम्बन्धित अनेक तथ्य सांख्यिकीय कृतियों में उपलब्ध हैं जिनसे कई पुस्तकालय भरे जा सकते हैं । किन्तु ज्ञान नेतृत्व की दिशा में सैद्धान्तिक एवं से उपयोगी योगदान बहुत कम व्यक्तियों का है । इस दशक के प्रारम्भ में प्रतिपादित सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में वर्तमान शोध विधियों एवं आयाम कई दिशाओं में बहुत आगे बढ़ चुके हैं । गुणात्मक विश्लेषण जो कि व्यक्ति विशेष तक/सीमित रहता था वर्तमान में व्यक्ति के व्यवहारों एवं समाज में व्याप्त कारकों की भी विवेचना करने में उपयोगी होने लगा है ।

यह विशेष रूप से भारत के प्राचीन काल से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विविध धर्म एवं क्षेत्रवाद वाले व्यक्ति समाज से निवास करते हैं । सांस्कृतिक भावना कभी इतनी जटिल नहीं हुई कि अन्तर्वैयक्तिय विवादों के कारण कोई समस्या आई हो । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जैसे विचार धारा के कारण कुछ व्यक्तियों को प्रमुख व्यक्तियों कहीं का सकती है , ने ज्ञान राजनीति में भाग लेना शुरू किया ।

समाजशास्त्रीय अनुसंधान प्रस्तुत कार्य अध्ययन के कारकों की दृष्टि से अत्यधिक व्यापक है। इसमें निम्नलिखित मुख्य तथ्य अध्ययन का उद्देश्य बनाये गये हैं :-

1. छात्र नेतृत्व का सामाजिक उद्भव,
2. छात्र नेतृत्व के प्रकार,
3. छात्र आन्दोलन एवं समूह विकास की क्रिया,
4. छात्र नेतृत्व का समाज-आर्थिक कारकों से संबंध
5. छात्र नेतृत्व का स्थानीय एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान, एवं
6. उपलब्ध तथ्यों की समीक्षा, अवलोकन एवं सुझाव।

=:=:=:=:=:=:=:=:=:=:=:=:=

ख : कार्य प्रणाली

1. अध्ययन क्षेत्र
2. आंकड़ों आधार
3. तथ्यों के संकलन की विधियाँ
4. आंकड़ों की उपयुक्तता
5. प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य
6. सांख्यिकी पद्धतियाँ
7. सारणीयन
8. विश्लेषण
9. सांख्यिकीय विधियों का उपयोग
10. वर्तमान शोध कार्य के अनुभव एवं कठिनाईयाँ

1. अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान शोधकार्य "धान मेखला का एक समाज भारतीय अध्ययन" बुन्देलखण्ड क्षेत्र की क्षेत्रीय सीमाओं के सन्दर्भ में। भारत वर्ष के बड़ी, बृहत उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में किया गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र का कनपद अति प्राचीन ऐतिहासिक समय से सुख्यात रहा है। भौगोलिक दृष्टि से अति 25,26 अक्षांश एवं 07,79 देशान्तर पर स्थित है। कनपद अति एवं सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र विन्ध्याचल पर्वत की श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। इसका स्पष्ट स्थिति अन्य चित्र चित्र सं0 1 में प्रदर्शित है। पर्यावरण की दृष्टि से यह कनपद अन्य कटिबन्धीय जलवायु वाले क्षेत्र से सम्बन्धता रखता है। वर्ष में निरन्तर मौसम परिवर्तन की प्रक्रिया होती रहती है। इसका स्पष्ट प्रभाव यहाँ के समाज आर्थिक क्षेत्रों पर पड़ता है। कृषि, व्यापार उद्योग एवं अन्य व्यवसाय भी परिवर्तन की प्रक्रिया से परे नहीं है। जलवायु सम्बन्धी तथ्यों से ज्ञात होता है कि पिछले 15 वर्षों से इस कनपद में औसत तापमान 44 डिग्री सेन्टीग्रेड रहा है। शीत ऋतु में ठण्डी लहरें चलती हैं इस क्षेत्र की विशेषता है एवं न्यूनतम तापमान का औसत 3 डिग्री सेन्टीग्रेड रहा है। इसके साथ वर्षा काल भी प्राकृतिक दृष्टि से बहुत ही मनोहारी होता है एवं पिछले 15 वर्षों की औसत वर्षा 1130 मिली मीटर रही है। भारतीय सरकार द्वारा प्रकाशित गजेटियर के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड की जनसंख्या वर्ष 1961 के जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार 5.3 मिलियन थी। कनपद अति की जनसंख्या वर्ष 1971के जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार 8,70,130 एवं वर्ष 1981 के जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार 11,33,002 रही है। वर्ष 1971 से 1981 तक की अवधि में कुल 30.21 प्रतिशत की वृद्धि कनपद अति में जनसंख्या में हुई है। अति

MAP OF BUNDELKHAND

NOT TO SCALE

चित्र सं॰ 1॰ बुन्देलखण्ड के मानचित्र विवरण

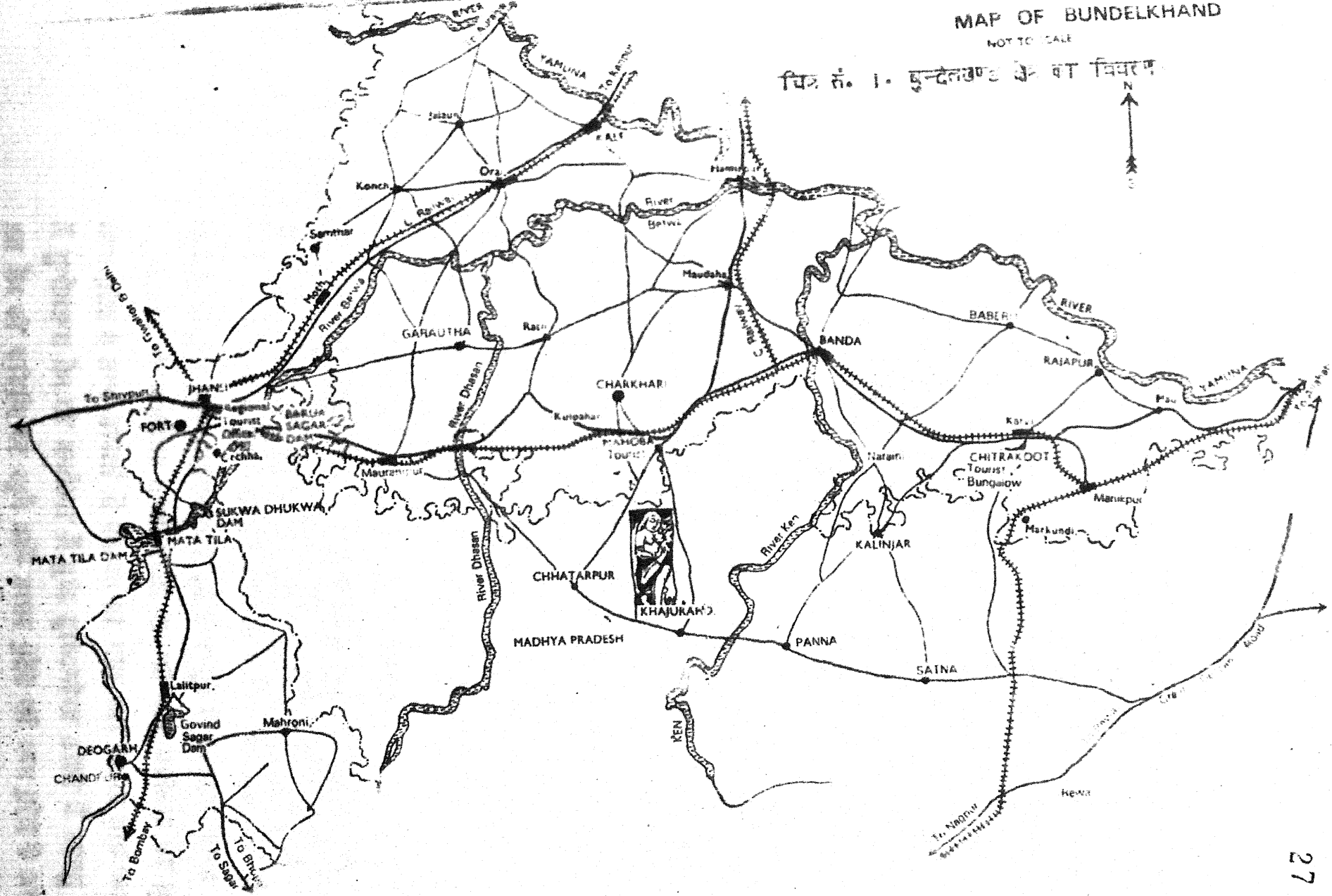

जनपद का कुल क्षेत्रफल विभिन्न भौगोलिक सीमाओं के प्रहार घिरा होते हुए 5,024 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 1981 के सर्वेक्षण के अनुसार जनपद झाँसी में बस्तियों संख्या 226 उपलब्ध हुआ है। शोध कार्य हेतु पुस्तकालय झाँसी में स्थित विश्वविद्यालय से सम्बन्ध सैद्धान्तिक सेवाएँ, जो कि जनपद ललितपुर, बाँदा, हमीरपुर, तथा बालीन जिलों में स्थित है, का उपयोग तथ्यों को एकत्रित करने में किया गया है।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बन्ध महाविद्यालयों का विवरण तालिका नं० 1 में प्रदर्शित है।

शिक्षा की दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र-विशेष रूप से जनपद झाँसी में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ही सामाजिक विकास हुआ है उसके परिणाम स्पष्ट रूप से विभिन्न शैक्षिक सेवाओं का अवलोकन करने से प्रतीत होते हैं। जनपद झाँसी में 53 माध्यमिक विद्यालय, 164 सेकेण्डरी स्कूल, 2 प्राविधिक शिक्षण संस्थान, 1 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान एवं अनुमानतः 1000 प्राथमिक पाठशालायें स्थापित है। वर्ष 1981 के अनुसार जनपद झाँसी में शिक्षा का औसत 36.7% रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में यह तथ्य स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जलवायु वृद्धि सन् 1901 से 0.75% औसतन रही है। जलवायु वृद्धि वर्ष 1951-61 में 2.25% प्रतिवर्ष रही है। वर्ष 1905-7 बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप का जो रूप देखा है उसके समानान्तर स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हुई है। सूखे के कारण जनपद बाँदा एवं बालीन की जलवायु समाप्त प्रायः रह गई थी। जलवायु का कुछ भाग प्रदेश के अन्य जनपदों में पलायन कर गया था। विगत तीन वर्षों में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जलवायु में वृद्धि दृष्टिगोचर होती है परन्तु इस क्षेत्र की परिधि पर पड़ने वाले उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के अन्य

तालिका संख्या 1 बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बन्ध महाविद्यालय

क्रम संख्या	महाविद्यालयों के नाम	जनपद
1.	बुन्देलखण्ड महाविद्यालय	झाँसी
2.	विपिन बिहारी महाविद्यालय	झाँसी
3.	आर्यकन्या महाविद्यालय	झाँसी
4.	महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कालेज	झाँसी
5.	प्रयोग महाविद्यालय, मऊरानीपुर	झाँसी
6.	नेहरू महाविद्यालय	ललितपुर
7.	बालकीय महाविद्यालय	ललितपुर
8.	गाँधी महाविद्यालय, उरई	जालौन
9.	डी. वी. एस. महाविद्यालय, उरई	जालौन
10.	बालकीय महाविद्यालय	जालौन
11.	कालपी महाविद्यालय, कालपी	जालौन
12.	एम. पी. महाविद्यालय, कोंच	जालौन
13.	अमाद्द लाल नेहरू महाविद्यालय	बाँदा
14.	बालकीय कन्या महाविद्यालय	बाँदा
15.	आर्य महाविद्यालय, आर्य	बाँदा
16.	कोशल्या महाविद्यालय, मऊ	बाँदा
17.	बालकीय महाविद्यालय, महोबा	हमीरपुर
18.	बालकीय महाविद्यालय, चरखारी	हमीरपुर
19.	बालकीय महाविद्यालय	हमीरपुर
20.	ब्रह्मानन्द महाविद्यालय, राठ	हमीरपुर

अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह वृद्धि अधिक नहीं है। तालिका नं० 2 में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विभिन्न जनपदों को दर्शाया गया है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्रति एक हजार पुरुषों के लापेक्ष 905 महिलायें हैं। हमीरपुर जनपद में यह संख्या 925, एवं झांसी जनपद में यह संख्या 886 रही है। सांख्यकीय आंकड़ों से लिंग अनुपात में वर्ष 1901 से निरन्तर ह्रास से महिलाओं की संख्याओं में कमी आ रही है जनसंख्या संख्या 1981। के अनुसार इस क्षेत्र में ग्रामीण तथा शहरी व्यक्तियों का प्रतिशत 1.75% रहा है।

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में झांसी की महारानी भूमिका रही है। सन् 1857 की स्वातन्त्र्य प्राप्ति में स्वर्गीय महारानी लक्ष्मीबाई का योगदान अविस्मरणीय है।

1857 के इस स्वातन्त्र्य संग्राम की आग सम्पूर्ण भिन्न अवधधी एवं विहार से लगाया जाता है। महारानी लक्ष्मीबाई के मुख कोकन एवं देश प्रेम की प्रबल स्वर्ग उनके अंग्रेज दुश्मनों ने की है। रानी लक्ष्मीबाई के सहयोगियों में तिलकों का उल्लेखनीय नाम है। इनमें अजारी कोरिन, मोतीबाई, काशीबाई, सुन्दर, मुंदी, बखिल खु, मानबती आदि के नाम है जिनका ऐतिहास की दृष्टि से योग्दान विस्मृति नहीं किया जा सकता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के व्यक्तियों द्वारा देश प्रेम के लिये भी लिये गये कार्यों का विवरण स्थान में एक बोध का विषय है। काकोरी काण्ड के बाद सन् 1924 में झांसी-दतिया रेल का मुख्य कार्य स्थान सांसार नदी, जो झांसी से 15 किलोमीटर दूर है, का रह हो गया था। इस झांसी-दतिया रेल में ग्राम नवाब खास मांडेर, बन्दरोहर आबाद, मलहा पुरवर, ग्राम बुन्दावन खास नवां एवं अन्य

तालिका संख्या 2 जनपदीय दबाव (मिलिमीटर) का विवरण

क्रम संख्या	जनपद	वर्षीय दबाव	दुपहर दबाव	दैनिक दबाव	पवनीय दबाव
1.	बस्ती	107	219	325	340
2.	बलरामपुर	144	156	182	195
3.	गोरखपुर	110	161	168	184
4.	बांदा	119	194	208	218
5.	लखीमपुर	120	182	220	234

सहयोगियों का योगदान उल्लेखनीय है। स्वातन्त्र्य प्राप्ति के पश्चात औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इसके फलस्वरूप भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, झाँसी मिल, मेडिकल कालेज, पारीछा थर्मल पावर योजना एवं अन्य आधारीय योजनायें दृष्टिगोचर हैं।

सामान्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं इससे सम्बन्धित कार्य है। शहरी परिवेश में रहने वाले निवासियों का औद्योगिक तथा व्यापार, नौकरी तथा उद्योग धन्धे है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लगभग 80% व्यक्तियों के समूह ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। लगभग शहरी जनसंख्या 20% जनपद झाँसी में निवास करती है। यातायात की दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र एवं विशेषरूप से जनपद झाँसी देश के अन्य प्रान्तों से भलीभाँति सम्पन्न है। जनपद झाँसी में एक आयुक्त कार्यालय स्थापित है, जिसका कार्य क्षेत्र झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर एवं महोबापुर है। इस कार्यालय में राजस्व एवं अन्य सम्बन्धी कार्यों का निस्तारण होता है। इसके फलस्वरूप बुन्देलखण्ड क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या का झाँसी में आगमन सहजरूप से होता है। फलतः बुन्देलखण्ड क्षेत्र यहाँ की विस्तृत है और उसके विभिन्न भागों में शोध कार्य हेतु क्षेत्र के परीक्षण की आवश्यकता है। वर्तमान शोध विषय के लिये बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत जिले झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर तथा महोबापुर को ही अधिक उपयोग में लाया गया है।

धार्मिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विभिन्न धर्मों का विद्यमान होना इस बात का प्रतीक है कि सभी विदेशी भारत क्षेत्र राज्य में किस प्रकार विभिन्न संस्कृतियों वाले व्यक्तियों में सामंजस्य स्थापित हो। इस क्षेत्र में हिन्दू, जैन, सिख, मुसलमान, पारसी, एवं ईसाई

अर्थव्यवस्था से निवास करते है। उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करने से प्रतीत होता है कि पेशेवर सम्बन्धी गुरु प्रक्रिया में विभिन्न वर्ग वाले व्यक्तियों का सक्रिय योगदान रहा है।

2. आदर्श आकार

वर्तमान शोधकार्य के लिये बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के 250 विद्यार्थियों से जानकारी एकत्र की गई। इन विद्यार्थियों का श्रेणीवार विवरण तालिका नं0 3 में दर्शाया गया है।

3. तथ्यों के संकलन की विधियाँ

उपलब्ध समाज वैज्ञानिकी साहित्य के पुनर्वलोकन के आधार पर वर्तमान शोधकार्य में तथ्यों का संकलन करने के लिये प्रश्नावली, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का सम्मिलित उपयोग किया गया है। वर्तमान शोध कार्य के लिये विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के अनुभवी वरिष्ठाधिकारियों का चयन पूर्व सूचना के आधार पर किया गया। इन पदाधिकारियों से प्राप्त सूचना के अतिरिक्त तथ्य एकत्र करने के लिये मुक्तउत्तरदातावाली सामान्य व्यक्तिगत अध्ययनों के लिये विभिन्न संस्थाओं में अवलोक पद्धति (Non Participant Observation) प्रणाली द्वारा किया गया। इस सम्बन्ध में बैन (1977), आरलबैन (1974) के शोध पत्र उपयोगी सिद्ध हुये है। शोध विषय की कठिनाई को देखते हुए आउन्स (1959) का शोधपत्र भी उपयोगी रहा है।

तालिका संख्या 3 तथ्य संकलन में उपयुक्त शिक्षण संस्थाओं एवं छात्र क्षेत्रों का विवरण

क्रम संख्या	शिक्षण संस्थाओं का वर्गीकरण	प्रश्नावली पद्धति द्वारा संकलित छात्र क्षेत्रों की संख्या	व्यक्तिगत अध्ययन द्वारा संकलित छात्र क्षेत्रों की संख्या
1.	महाविद्यालय (स्नातक/विद्यालय)	186	10
2.	मेडिकल कालेज	24	5
3.	माध्यमिक शिक्षण संस्थान	40	5
	योग	250	20

वर्तमान शोध कार्य में उपयुक्त विभिन्न समाजशास्त्रीय विधियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :-

वर्तमान शोध विषय में वस्तुतः प्रश्नावली प्रपत्र एवं व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति का अधिक उपयोग किया गया है। विभिन्न सामग्री एकत्रित करने के लिये विभिन्न विधियों का उपयोग नितान्त आवश्यक था। इन विधियों के माध्यम से एकत्रित तथ्यों की व्याख्या एवं विश्लेषण सहज हो जाता है।

प्रश्नावली पद्धति-

इस विधि के अन्तर्गत पूर्व निर्धारित प्रश्नों का समायोजन एक पत्र पर किया जाता है एवं उसे उत्तरदाता के पास प्रेषित कर दिया जाता है। उत्तरदाता अपनी सुविधानुसार प्रश्नों के उत्तर अंकित करके प्रश्नावली पुनः शोध कर्ता को वापिस कर देता है।

वर्तमान शोध कार्य के प्रारम्भ में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से संबन्धित छात्र प्रतिनिधियों की सूची तैयार करके 500 प्रश्नावली प्रपत्र डाक द्वारा प्रेषित किये गये। इन छात्र प्रतिनिधियों को सहयोगात्मक पत्रों के माध्यम से प्रश्नावली प्रपत्र वापिस प्राप्त करने के लिये निवेदन किया गया। वर्तमान शोध कार्य की कुल अवधि में 289 प्रश्नावली प्रपत्र शोध कर्ता को वापिस प्राप्त हुये। इनमें कुछ प्रश्नावलियाँ स्पष्ट रूप से भरी न होने के कारण वर्तमान शोध कार्य में सम्मिलित नहीं की गई। सम्मिलित 250 प्रश्नावलियाँ सांख्यकीय दृष्टि से वर्तमान शोध कार्य का ठोस आधार है।

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति :-

सन् 1986-1992 के दौरान प्रतिभाशाली वैयक्तिक अध्ययन पद्धति समाजशास्त्रीय शोधों में पूर्ण प्रभावी तरीके से

विभिन्न परिवेशों में उपयोगी सिद्ध हुई है। इस अध्ययन पद्धति के द्वारा शोध विषय में उत्तरदाता को वास्तव में वास्तविक जानकारी सुलभता से एकत्रित की जा सकती है। व्यक्तिगत भाग्य निर्देशन के पश्चात शोध विषय के बारे में सम्पूर्ण जानकारी उत्तरदाता अधिक सुलभतापूर्वक दे देता है। इस अध्ययन पद्धति के माध्यम से छात्रों के बड़े समूहों का चैतुरुय करने वाले 20 छात्र चेतनाओं से विस्तृत विवरण लिया गया है और इस विवरण को वर्तमान शोध अध्यायों के अन्त में सलंगित किया गया है।

4. आंकड़ों की उपलब्धता

वर्तमान शोध विषय हेतु विभिन्न संस्थाओं से प्रश्नावली प्रपत्र डाक द्वारा भेजकर जानकारी प्राप्त की गयी है। इस माध्यम से वास्तविकता में लगभग 50% प्रतिशत प्रश्नावलियाँ शोध कर्ता को वापिस प्राप्त हो सकी। इस दिशा में शोध कर्ता को कुछ उत्तरदाताओं से प्रश्नावलियाँ प्राप्त करने के लिये पुनः पत्र प्रेषित करने पड़े। साथ-साथ विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के सीधे में छात्र चेतनाओं की सूची तैयार करने से अनुभव प्राप्त हुआ कि लगभग 500 छात्र चेतनाओं के विवरण सम्पूर्ण यत्नों के साथ काफी कठिनाई से प्राप्त हुये है। अतः 250 छात्र चेतनाओं द्वारा भरी गयी प्रश्नावली प्रपत्रों के आधार पर प्राप्त शोध सामग्री वर्तमान शोध कार्य के लिये सार्थक दृष्टि से लेकर प्रतीत हो सकी है।

5. प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य

किसी समाज वैज्ञानिक के लिये शोध विषय में प्रवेश करने के पहले इस बात की जानकारी आवश्यक है कि समस्या विशेष के सन्दर्भ में उपयोगी तथ्य लिखित एवं मौखिक कहाँ पर उपलब्ध होंगे। उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन करने से इस बात के लिये दिशा मिली है कि चैतुरुय से सम्बन्धित वर्तमान शोध विषय हेतु उपयोगी सूचनायें महाविद्यालयीन कार्यालयों

एवं पुस्तकालयों से प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान शोध कार्य के लिये उपलब्ध सैम्पूर्ण तथ्यों की जानकारी एवं आंकड़ों का प्रारम्भिक विश्लेषण, उपर्युक्त वर्णित माध्यमों से किया गया है। प्राथमिक तथ्यों के संग्रह में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उपयोगी भूमिकाओं, प्राचीन परम्पराओं एवं व्यक्तिगत धारणाओं को महत्व सम्बन्धी वर्तमान शोध विधि में महत्वपूर्ण समझा गया है। तत्पश्चात द्वितीयक तथ्यों के लिये प्रलेखनी एवं वैयक्तिक अध्ययन विधियों द्वारा संकलित सामग्री को समायोजित किया गया है।

6. सामाजिक मापिकी :-

उपर्युक्त वर्णित सम्पूर्ण विधियों के माध्यम से तथ्यों का क्षेत्रीय संकलन की 1981 के प्रारम्भ से शुरू किया गया था। सम्पूर्ण तथ्यों के विवरण प्राप्त होने तक लगभग एक वर्ष का समय व्यतीत हुआ। इसके पश्चात को समय शोध कार्य में व्यय किया है। उसमें उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन, तथ्यों का विश्लेषण एवं शोध विवरण तैयार किया गया। इस अवधि में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में जो भी छात्र महत्व सीधी उपयोगी सूचनायें उपलब्ध हुई उन्हें भी एकत्र किया गया।

7. सारणीकरण :-

एकत्रित किये गये तथ्यों को विभिन्न सारणीयों में विभक्त किया गया है जिनका क्रमवार विवरण अध्याय विशेष के संदर्भ में समायोजित है।

8. विश्लेषण :-

वर्तमान शोध ग्रन्थ में एकत्रित सम्पूर्ण 250 छात्र नेताओं से उपलब्ध जानकारी को कुल्लू नगर से संग्रहित किया गया है। छात्र नेताओं की विस्तृत सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, संगठन

पर आधारित तथ्य, ग्राम सेवाओं का राजनीतिक अध्ययन, ग्रामों का विधान सम्बन्धी ज्ञान, ग्रामसेवाओं का स्थानीय राजनीति में योगदान, ग्राम आन्दोलनकालका प्रभावीकरण एवं टिप्पणियाँ, पूर्व गये विशेष अध्ययन, वर्गीकरण एवं व्याख्यायें, उपलब्धि, निष्कर्ष एवं अध्ययन की उपयोगितायें, क्रमानुसार वर्णित की गई है ।

9. सांख्यकीय विधियों का उपयोग :-

समाज वैज्ञानिकों द्वारा समाज-शास्त्रीय शोध कार्यों से प्राप्त तथ्यों का क्रमानुसार विश्लेषण करने के लिये विभिन्न सांख्यकीय विधियों का उपयोग किया जाता रहा है ।

सांख्यकीय विधि का उपयोग एकत्रित तथ्य के प्रकार एवं उपयोग पर निर्भर रहा है । वर्तमान शोध कार्य से अधिक समता रखने वाले कुछ शोध कार्यों के आधार पर यह निश्चित किया गया कि उपलब्ध तथ्यों को प्रतिशत सांख्यकीय विधि के द्वारा विश्लेषित किया जाये । प्रतिशत प्रणाली के माध्यम से प्राप्त आँकड़े औसतन एक समान हो जाते हैं । प्राप्त आँकड़ों की उपलब्ध अन्य सांख्यकीय पद्धतियाँ यथा काई स्क्वायर (χ^2) परीक्षण आदि से सत्यापित नहीं किया गया क्योंकि वर्तमान शोध कार्य इस क्षेत्र में प्रथम एवं प्रारम्भिक कृतियाँ होने वाला है । अतः वर्णित सांख्यकीय पद्धतियों का प्रयोग सामाजिक दृष्टि से सम्भव प्रतीत नहीं हुआ ।

10. वर्तमान शोध कार्य के अनुभव एवं सीमायें :-

इस दिशा में प्रधानाचार्य व्यक्तियों, प्रधानाचार्यों एवं शिक्षणाध्यक्षों से अपेक्षित सहयोग लिया । प्रधानाचार्यों के माध्यम से ग्राम सेवाओं के पते एवं अन्य विवरण प्राप्त किये गये । वर्तमान शोध कार्य की सम्पूर्ण प्रक्रिया में लगभग चार वर्ष का समय व्यतीत किया गया और इस अवधि में ग्राम समितियों से

सम्बन्धित पदाधिकारियों एवं अन्य जानकार क्षेत्र वासियों से उपयोगी सूचनायें वर्तमान शोध कार्य के लिये संकलित की गयीं ।

समाज वैज्ञानिकों को विषय सामग्री एकत्रित करने एवं अध्ययन की विधि निर्धारित करने में विभिन्न व्यवधानों का सामना करना पड़ता है । वर्तमान शोध कार्य के क्षेत्रीय में सांख्यिकीय समस्याओं का निराकरण उपयोगी सामाजिक तर्क के आधार किया गया है । क्षेत्र वासियों का विश्वास अर्जित करने के लिये प्रश्नावली प्रपत्र में सामान्य प्रश्नों का समायोजन किया गया है । व्यक्तिगत अध्ययनों में यह अनुभव किया गया कि कुछ क्षेत्र वासी पूर्व धारणाओं, भ्रमों एवं समय के अभाव में उचित सहयोग देने से कतराते रहे । कुछ क्षेत्र वासियों को व्यक्तिगत सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पर्क करने के पश्चात यह विदित हो गया कि वर्तमान तथ्यों की जानकारी मात्र शोध कार्य के उपयोग में लाई जायेगी तभी वह सूचना देने में सहयोगी हो सके । यह भी उनको स्पष्ट किया गया कि वर्तमान शोध कार्य उनकी उपयोगी सूचनाओं के अभाव में पूर्ण नहीं हो सकेगा । तदोपरान्त क्षेत्र वासियों से उचित उत्तर प्राप्त हो सके । यह भी उन्हें विश्वास दिलाया गया कि वर्तमान सूचनाओं को पूर्ण रूप से गुप्त रखा जायेगा और कोई भी सूचना उनके विपरीत उपयोग नहीं की जायेगी । इस आश्वासन के पश्चात क्षेत्र वासियों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ वर्तमान शोध कार्य के लिये अपना सहयोग दिया ।

वर्तमान शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली प्रपत्र द्वारा उत्तर दाताओं से जानकारी एकत्रित की गई है । इस संदर्भ में मुख्य बात यह अनुभव की गई है कि कुछ प्रश्नों के उत्तर वांछनीयता से परे हैं । समाज के ऐसे कार्य जो सिद्धान्ततः समाज विरोधी होते हैं या जिन्हें समाज में अच्छी

दृष्टि से नहीं देखा जाता है उन्हें व्यक्त करते हुये भी झिझक होता है। यह मनुष्य का स्वभाव होता है कि वह दूसरों के सामने अपने को अच्छा और विद्वान्समझदार दिखाने का प्रयत्न करता है। इसी कारण कभी-कभी यह देखा जाता है कि प्रश्नावली द्वारा वांछित जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती। उदाहरणके तौर पर जब उत्तर-दाताओं से वोट देने के विषय पर जानकारी प्राप्त की गई तो अधिकांश ने उम्मीदवार की योग्यता देखकर वोट देने वाले विचारों का प्रतिशत सबसे अधिक प्राप्त हुआ तथा जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर वोट देने के विचारों का प्रतिशत बहुत कम प्राप्त हुआ। जबकि वर्तमान समय में पूरे राष्ट्र में जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर ही वोट मांगे तथा दिये जाते हैं। महाविद्यालयों में भी छात्र यूनियनों के चुनाव के समय जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर ही छात्र नेता विभिन्न ओहदे पद प्राप्त करते हैं। वर्तमान समय में राजनीतिक दलों के आधार पर भी वोट देने का एक बहुत अच्छा प्रतिशत है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में उम्मीदवार की योग्यता का आधार बिल्कुल नगण्य सा है और जाति, सम्प्रदाय तथा राजनीतिक दलों का आधार सबसे अधिक प्रभावशील है। इसी प्रकार से शिक्षकों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों के विषय पर प्राप्त जानकारी के आधार पर बहुत से उत्तरदाताओं ने प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा को अच्छा कहा है। शिक्षकों के साथ मधुर सम्बन्ध और मनोरंजन पर भी बहुत से उत्तरदाताओं ने सकारात्मक उत्तर दिये हैं। परन्तु वर्तमान समय में विद्यालयों का वातावरण अत्यन्त दुखद अवस्था में दिखाई पड़ता है। विशेष तौर पर उन्हीं विद्यालयों में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के सम्बन्ध बिल्कुल भी मधुर नहीं मालूम पड़ते हैं। जानकारी पर महत्व के चुनी गये विद्यार्थी अपने कार्यों के लिये अपने पदों एवं अधिकार का प्रयोग करके या धमकी देकर

कार्य करवाते हैं। इस प्रकार से सिद्धान्ततः तो यह मानते हैं कि गुरु शिष्य के बीच अच्छे तथा आदर पूर्ण सम्बन्ध होने चाहिये, परन्तु व्यवहारिक दृष्टि में ऐसा नहीं पाया जाता है।

=:=:=:=:=:=:=:=:=

अध्याय २

सर्वेक्षण पर आधारित तथ्य

1. सामान्य विवरण
2. सामाजिक कारक
3. आर्थिक कारक
4. राजनीतिक कारक
5. धार्मिक कारक
6. मनोवैज्ञानिक कारक

1. सामान्य विवरण

वर्तमान शोध कार्य "छात्र नेतृत्व का समाज शास्त्रीय अध्ययन" में विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का विश्लेषण किया गया है। विषय सामग्री स्पष्ट रूप से विश्लेषित करने की दिशा में उपलब्ध समाजशास्त्रीय शोध पत्रों से उचित मदद मिली है। शोध कार्य की प्रारम्भिक अवस्था में उपलब्ध साहित्य की समीक्षा करने पर निष्कर्षित किया गया कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के ढाँचे में छात्र नेतृत्व की समस्या का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परम आवश्यक है। संस्कृति, सभ्यता एवं तकनीकी विकास के आधुनिक युग में जब मानव चरण अन्तरिक्ष में विचरण करने के कल्पनाओं से पहुँचने लगे हैं तब भी भारत जैसे विकास शील देशों के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विभिन्न दृष्टि कोणों से पिछड़ेपन का जो रूप देखने को मिलता है वह अन्यत्र कहीं विद्यमान नहीं है। पूर्व निर्धारित मान्यताओं के अनुसार भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस कृषि प्रधान देश के मध्य भाग में स्थित बुन्देलखण्ड क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

ब्रिटिश साम्राज्य में मध्य भारत कहे जाने वाले इस क्षेत्र की अपनी सांस्कृतिक परिधि है। हिन्दू एवं मुस्लिम साम्राज्यों के पतन के पश्चात ब्रिटिश साम्राज्य ने इस क्षेत्र में अपनी जड़ों को मजबूत किया है। विभाजन एवं शासन की नीति द्वारा अंग्रेज शासकों की गहरी आलोचना रही है। इस आलोचना के कारण अंग्रेजों द्वारा बुन्देलखण्ड क्षेत्र विकास की दृष्टि से उपेक्षित किया जाना सामान्य बात थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक तकनीकी एवं वैज्ञानिक संस्थायें इस क्षेत्र के निवासियों के लिए कल्पना मात्र

थी । शनैः शनैः प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात किए गये । जमींदारी प्रथा का अन्त होने से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न वर्ग तेजी से उदित हुए । कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण वृन्देलाखण्ड क्षेत्र में प्रमुख जातियाँ के रूप में ठाकुर एवं यादव जातियाँ प्राचीन समय से हैं । अपनी कुछ विशेषताओं में भिन्नता इन जातियों के व्यक्तियों में तेजी करने की प्रवृत्ति विशेषता रूप से दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कही जा सकती है । ग्रामीण दलगत राजनीति में आज भी इन जातियों के प्रभुत्व को नकारा नहीं जा सकता है । यहाँ यह स्पष्ट करना उचित होगा कि आर्थिक दृष्टि से यह जातियाँ अन्य जातियों की तुलना में अत्यधिक सक्षम हैं।

सामाजिक विकास एक प्राकृतिक प्रक्रिया है । इस प्रक्रियाके फलस्वरूप विभिन्न समाजशास्त्रीय कारकों पर परिवर्तन का उचित एवं अनुचित प्रभाव विशेष रूप से पड़ा है । स्वतन्त्रता प्राप्तिके पश्चात शैक्षणिक संस्थाओं के खोलने में अत्यधिक विकास हुआ है । सन् 1947 से लेकर वर्तमान अवधि तक शिक्षण संस्थाओं का नियंत्रण व्यक्तिगत संस्थाओं के द्वारा अधिकांश प्रतिशत में है । भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में शिक्षा का राष्ट्रीय करण न होने के कारण इन व्यक्तिगत नियन्त्रित शिक्षण संस्थाओं में अनेकों अव्यवस्थायें विद्यमान हैं । यही अव्यवस्थायें छात्र वर्ग में असंतोष एवं अनुशासन हीनता उत्पन्न करती हैं । इस के साथ साथ शैक्षणिक अधिकार के रूप में छात्र यूनियनों का जन्म शिक्षा अधिकार छात्र वर्ग को राजनीति की गतिविधियों के लिए प्रेरित करता है ।

उपर्युक्त भूमिका में यह कहना उचित होगा कि छात्र नेतृत्व एवं शिक्षण संस्थाओं के विभिन्न आयाम एक दूसरे के पारिपूरक हैं । यदि

भावना को मूल आधार मानकर यह निश्चित हुआ कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के बीच में कोई शोध कार्य उपलब्ध नहीं है जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उपयोगी एवं प्रारम्भिक सूचनायें देने वाला वर्तमान शोध कार्य प्रारम्भ किया गया। इस शोध कार्य का संक्षिप्त विवरण क्रमानुसार तैयार किया गया। जिन विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों को वर्तमान शोध कार्य में समावेशित किया गया है उनका विवरण अग्रलिखित है।

2. सामाजिक कारक

विभिन्न समाजशास्त्रीयों के अनुसार समाज विभिन्न इकाईयों का योग है। इन इकाईयों में से प्रमुखता रखने वाली मुख्य इकाईयों - आयु, जाति, परिवार, विवाह, सामाजिक निर्धनता को वर्तमान शोध कार्य में सम्मिलित किया गया है। इन कारकों से संबंधित जानकारी प्रश्नावली प्रपत्र के माध्यम से एकत्रित की गई है।

3. आर्थिक कारक

वास्तव में आर्थिक व्यवस्था समाज व्यवस्था का ही एक अभिन्न अंग है। जीवकार्य की सुविधा की दृष्टि से इसे अलग विवेचित करके अध्ययन किया गया है। आर्थिक कारक में मुख्य कृषि, व्यवसाय, नौकरी एवं अन्य आर्थिक आधारों को प्रभावित करने वाले कारकों से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित की गई है।

4. राजनीतिक कारक

आर्थिक कारक की भाँति परोक्ष या अपरोक्ष रूप से राजनीतिक कारक समाज व्यवस्था की ही उपज है। वर्तमान शोध कार्य अधिकांश प्रतिशत में राजनीतिक कारकों पर निर्भर करता है, इसलिये इस महत्वपूर्ण उपज को व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया गया है। इस खंड में विभिन्न आन्दोलन स्थानीय एवं राष्ट्रीय परिवेश में कार्य की गतिविधियाँ, विभिन्न राजनीतिक दलों का उद्भव एवं उन नेतृत्व की सम्पूर्ण विवेचना का विस्तृत मूल्यांकनकिया गया है।

5. धार्मिक कारक

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विभिन्न धार्मिकों व्यक्तियों का निवास है। धार्मिक क्रिया कलाप इस क्षेत्र की प्रमुखता है। वर्ष भर विभिन्न धर्मों के तीज त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान एवं गोष्ठियाँ होती रहती है। इन सांस्कृतिक मूल्यों का सामाजिक संरचना पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और जब सामाजिक संरचना प्रभावित होती है तो व्यक्ति विशेष रूप से इससे उत्प्रेरित होता है। इस सम्पूर्ण उपज का व्यक्ति के कार्यों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में धर्म, साधु, ढोंगा एवं साधुओं आदि को मुख्य रूप से अध्ययन का विषय बनाया गया है।

6. मनोवैज्ञानिक कारक

मनोवैज्ञानिक गतिविधियाँ वैयक्तिक व्यवहारों की अपनी विशेषतायें हैं। मनुष्य वातावरण के प्रभाव में सीख जाता है और इन्हीं प्रभावों के फलस्वरूप उसमें कुशल, प्रेम, अभिरुचि एवं अभिवृत्तियों का विकास होता है। व्यक्तित्व एवं सामाजिक संदर्भ में व्यक्तित्व

महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । इन्हीं सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक कारकों का वर्तमान शोध कार्य में अध्ययन किया गया है ।

वर्तमान शोध कार्य में उपर्युक्तकारकों के माध्यम से यह निर्धारित करने का प्रयास किया गया है कि छात्र नेतृत्व की समस्या किन मुख्य कारकों पर आधारित है ? बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में छात्र नेतृत्व के द्वारा किस प्रकार के रचनात्मक कार्य किये जा सकते हैं ? सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दृष्टिकोण में इन छात्र समुदायों से क्या उपयोगी सहायता ली जा सकती है । छात्र संबंधित अनुशासित मार्ग निर्देशन में अभिदोलन का मार्ग अपनाती है । समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह आवश्यक होगा कि उन विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया जाये जो छात्र आन्दोलन या छात्र नेतृत्व से सम्बन्धित है । छात्रों द्वारा किये जाने वाले विभिन्न कार्यों को उचित दिशा प्रदान करने के लिये इन उपयोगी कारकों की आवश्यकता है । राष्ट्रीय स्तर में यदि उचित मार्ग निर्देशित छात्र शक्ति के योगदान को अवहेलित किया गया तो सशक्त राष्ट्र की कल्पना करना व्यर्थ होगा ।

वर्तमान शोध कार्य में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यों, प्राध्यापकों एवं छात्रों के अतिरिक्त स्थानीय नागरिकों का अधिकारीय योगदान है । तथ्यों के एकीकरण में यह प्रयास किया गया कि उत्तरदाता बिना किसी पूर्वाभास या पूर्वानुमान के सुझाव दें । सम्पूर्ण एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि प्रश्नावली एवं व्यक्तिगत अध्ययन प्रणाली वर्तमान प्रकार के शोध विषयों के लिये अत्यधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है । यह ऐसे सामाजिक तथ्य हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति सुविधापूर्ण ढंग से एवं बिना किसी बाधात्मक दबाव के जानकारी प्रदान करता है । तथ्यों के संकलन की अवधि में विभिन्न प्राकृतिक कारकों जैसे मौसम

का अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । क्षेत्र परीक्षण व्यक्तिगत रूप से करने से अवधि की दृष्टि से वर्तमान शोध कार्य में अधिक समय लगा है ।

वर्तमान शोध कार्य में जिन प्रमुख कारकों का समावेशन किया गया है - उनका क्रमानुसार विवरण शोध प्रबन्ध के अन्त में संलग्न प्रश्नावली-प्रपत्र में प्रदर्शित किया गया है । इसी प्रश्नावली को डाक द्वारा उत्तरदाताओं के पास भेजकर वापिस मंगाया गया है । सम्पूर्ण शोध कार्य की अवधि में लगभग 50% प्रश्नावलियाँ ही वापिस प्राप्त हो सकी हैं । प्रश्नावली को सरल बनाने के लिये प्रश्नों को आसान प्रकार में वर्णित किया गया, जिससे उत्तरदाता किसी भी प्रकार के मानसिक या सामाजिक प्रभाव का अनुभव न करें ।

=:=:=:=:=:=:=:=:=

अध्याय ३

छात्र नेतृत्व का समाज आर्थिक विवरण

1. सामान्य विवरण
2. समाज आर्थिक व्यवस्था
3. समाज आर्थिक गतिविधियाँ
4. विश्लेषण

1. सामान्य विवरण :-

प्रस्तावित शोध विषय के वर्तमान अध्याय में अन्तर्गत बुन्देलखण्ड क्षेत्र में छात्र नेतृत्व सम्बन्धी जो सामाजिक आर्थिक कारक उत्तरदायी हैं उनका विवरण प्रस्तुत किया गया है। पारम्परिक समाज आर्थिक कारकों को सहयोगी मानते हुये गुणात्मक विश्लेषण का प्रयास इस आशय से किया गया है कि छात्र नेतृत्व के लिये यह किसने उपयोगी हो सकते हैं।

अधिकांश की प्रक्रिया में कारणत्व समाज-आर्थिक व्यवस्थाओं के तौर में आवश्यक रूप से जटिलता उत्पन्न हुई है। समाज वैज्ञानिकीय साहित्यों में इन कारकों का ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध है। समाज-शास्त्रीय दृष्टिकोण से आदर्श समाज की कल्पना प्रमुख रही है। वैज्ञानिक शोध अभिकल्प को तैयारिक करने से विश्लेषिका होता है कि सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थायें अत्यधिक घनिष्टता के साथ एक दूसरे से सम्बन्ध हैं। इन घनिष्ठ इकाईयों में से व्यक्तिगत किसी इकाई का दीर्घ समय तक कार्यात्मिका रहना सम्भव नहीं है। सामाजिक कार्यों में परिकल्पना का महत्वपूर्ण योगदान होता है और इसी आधार से सम्बन्धित होकर यह निर्णय लिया गया कि छात्र नेतृत्व सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन में जिन समाज आर्थिक कारकों का योगदान होता है उनका विश्लेषण किया जाये।

2. समाज आर्थिक व्यवस्था :-

विभिन्न समाजशास्त्रियों के मतानुसार समूह को विभिन्न भागों में बाँटा गया है। समाज अपने सभी पर्यावरण के बीच उपयोगी सामंजस्य स्थापित करने के लिये सदैव से संलग्न रहा है। समाज की यही वह समूह अपने आवश्यक अभिकल्पों के कारण सम्भव बनाता है बल्कि

महत्वपूर्ण समाजीकरण की प्रक्रिया है व्यक्तव्य अपने आचरण को भी निर्धारित करता है। मनुष्यत्व सामाजिक प्राणी है और उसकी सामाजिकता पर्यावरण के विभिन्न कारकों पर निर्धारित होती है।

संस्कृति एवं समाज के अधिकांश सैद्धान्तिक अभिगमों का मूल्यांकित करने से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य एवं समाज हमारी दृष्टि से निरन्तर अद्विकासीय प्रक्रिया का परिणाम है। समाज-आर्थिक दृष्टिकोण की सैद्धान्तिक व्यवस्थाओं को समझने के लिये [illegible] सामग्री क्षेत्रों में अनुकूलता रही है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति का महत्वपूर्ण स्थान है। जाति व्यवस्था अपने सदस्यों को समाजार्थिक दृष्टिकोण से सुरक्षा प्रदान करती है। इसी से फलस्वरूप सदस्यों में अपनी जाति के प्रति अधिक सहृदयता पाई जाती है। समाज-आर्थिक दृष्टिकोण से उपयोगी सामाजिक नियन्त्रण को इस व्यवस्थाओं से किया नहीं किया जा सकता है। इस सैद्धान्त में विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य अपनी पराकाष्ठा पर है। इन अध्ययनों के निष्कर्ष से यह परिलक्षित होता है कि सामाजिक परिवर्तन वास्तविक एवं दूरगामी है। यह प्रक्रियायें व्यक्तिगत एवं सामूहिक अभिरुचियों पर निर्भर करती हैं। एक मात्र आर्थिक विकास की प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन का आधार कहना सर्वमान्य नहीं होगा, बल्कि कई अन्य ऐसे सामाजिक कारक हैं, जैसे परम्परागत उच्च स्तरीय क्रम से निम्न स्तरीय क्रम की ओर मनुष्यों के समूह का वर्गीकृत किया जाना, जो सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सम्पूर्ण समाज को एक प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया जाना चाहिये। इसी के साथ-साथ उस समाज में रहने वाले सदस्यों जैसीय समाज-आर्थिक अन्तः क्रियाओं का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति परस्पर प्रोत्साहन की प्रक्रिया को

अपनाकर सामाजिक व्यवस्था को गतिशील रूप प्रदान कर सकता है। व्यक्ति विशेष की संवेदनशीलता ही सामाजिक परिवर्तन का आधार है। इस दृष्टिकोण से संचार की प्रक्रिया प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। संचार, संवेदनशीलता एवं भावों के बीच उत्पन्न हुई प्रक्रिया का परिणाम है। प्रत्येक समाज में व्यक्तित्व के सापेक्ष सामाजिक प्रक्रियायें घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किये हुये हैं। ऐतिहासिक विवरणों एवं समाजशास्त्रीय खोजों से यह निर्धारित होता है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आधुनिक नहीं है।

यह एक निर्धारित मान्यता है कि विभिन्न समूहों का क्रमिक विकास हुआ है। यह अतिशयोक्ति न होगी कि अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रिया के फलस्वरूप व्यक्तियों के विभिन्न आचरणों का विश्लेषण समझने में सुविधा होती है। लैपेरा आदी विद्वान परसन्स (1965) के अनुसार सामाजिक परिवर्तन के आधार में सामाजिक प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। विशेष संरचनायें निरन्तर परिवर्तित होती रहती हैं। यहाँ स्पष्ट करना उचित होगा कि सामाजिक संरचना एक प्रसूति जन्य एवं निरन्तरगतिशील व्यवस्था है। रेडक्लिफ ब्राउन (1952) ने व्यक्तिगत सम्बन्धों को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना है। स्पेन्सर (1970) ने भी अपने तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर सामाजिक संरचनाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं एवं सामाजिक परिवर्तनों की व्याख्या की है। व्यक्ति का व्यवहार परम्परागत मान्यताओं तथा नियन्त्रण एवं निर्देशन पर आधारित है।

पारसन्स (1966) के अनुसार सामाजिक परिवर्तन के कई आधार माने जा सकते हैं। उन्होंने मुख्य रूप से तीन कारकों के वर्गीकरण को स्थान दिया है :-

(1) जैविकीय प्रजनन क्रिया के कारण सामाजिक परिवर्तन,

(2) पर्यावरणीय कारकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन, एवं

(3) किसी असामाजिक पर्यावरणीय कारकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन ।

जाति व्यवस्था किन्हीं वर्षों के राजनीतिक क्रियाओं के फलस्वरूप आज भी भारत में विद्यमान है । इस व्यवस्था ने एक स्थाई समाज निर्माण करने में मदद किया है । विभिन्न समुदायों को एक राजनीतिक इकाई में विकसित होने के लिये जाति व्यवस्था ने मार्ग दर्शन किया है । भारतवर्ष के अतिरिक्त विश्व के अन्य देशों में जाति व्यवस्था के समरूप वर्गीकरण देखने को नहीं मिलता है । एक मात्र रूप से जाति व्यवस्था भारतीय प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है । आचार्य कौटिल्य के समय की जाति व्यवस्था को श्रम-विभाजन पर आधारित बताया गया है । इस व्यवस्था में अनेकों सामाजिक कार्य विभिन्नस्तरीय व्यक्तियों के लिये सुरक्षित होते है । वर्गीकरण की दृष्टि से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र जातियों का प्रादुर्भाव था ।

भारतीय जाति व्यवस्था में 3000 जातियाँ विद्यमान है । प्रत्येक जाति अपने आप में एक सामाजिक इकाई है और इनमें अनेक विभिन्नतायें है । जाति विशेष में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का आवास क्षेत्रता के रूप में निर्धारित होता है । अन्य जातियों के सापेक्ष ब्राह्मण जाति में जन्मे व्यक्ति को पुरोहिता रूप में ऊँचे स्थान दिया जाता है । यह मात्र परम्परागत मान्यता है एवं वर्तमान समय में इस तर्क की अधिक उपयोगिता नहीं है । समाज द्वारा स्वीकृत एवं

मान्यता प्राप्त परम्पराओं के विपरीत आचरण करने वाले व्यक्ति को दंडित किया जाता था । प्राचीन समय में जाति व्यवस्था सम्बन्धी विवरणों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत वैशिष्ट्य विद्यमान नहीं था । वैदिक परम्परा के अनुसार क्षेत्रीय जाति में जन्मे व्यक्ति को राज्य परिवार के ही राजा की स्थिति में विद्यमान होंगे ।

कौटिल्य कालीन भारत में सम्पूर्ण समाज चार वर्णों में विभाजित था । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र । व्यक्ति के जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया था । ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं सन्यास आश्रम । सुवल । 1969 । द्वारा लिखित "हिन्दू समाज व्यवस्था" में वर्ण एवं जाति उद्भव सम्बन्धी विवरण उपलब्ध है । आर्यों के समाज का वर्णों में विभक्त होने का उल्लेख ऋग्वेद के दशम मण्डल में आये हुये पुरुषसूक्त पर्यिकट के अन्तर्गत मुख्य रूप से हुआ है । सूक्त के अनुसार उत्पत्ति का विवरण निम्नलिखित है :-

"ब्राह्मणोऽस्य मुख आसीद बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।
। ऋग्वेद 10/90/12।

ब्राह्मण के कार्य अध्ययन, यज्ञ एवं अध्यापन है । क्षत्रिय का मुख्य कार्य रक्षा है । वैश्य का विशेष कर्म वाणिज्य, कृषि एवं पशुपालन है । शूद्र का विशेष कर्म ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य की सेवा करना है ।

डराबती वर्ष । 1975 । ने विभिन्न प्रकार की जातियों, उनकी प्रकृति एवं टोटम, कुछ भारतीय जातियों एवं उनके रिवाजों सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई है ।

वर्तमान अध्याय में प्रस्तुत तालिकाओं में समाज-आर्थिक कारकों से संबन्धित उपलब्ध तथ्यों को विवेचना की गई है ।

3. समाज-आर्थिक गतिविधियाँ :-

जाति व्यवस्था पर आधारित उत्तरदाताओं का वर्गीकरण तालिका संख्या 4 में प्रदर्शित किया गया है । सम्पूर्ण 250 उत्तरदाताओं में सबसे अधिक यादव जाति (30%) प्राप्त हुये हैं, एवं सबसे कम वैश्य जाति (5.2%) के प्राप्त हुये हैं, पिछड़ी जातियों, ठाकुरों एवं ब्राह्मणों का प्रतिशत क्रमशः 19.6%, 15.2%, एवं 10% रहा है । इन तथ्यों का मूल्यांकन करने से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र के ग्रंथों में परम्परागत प्रमुख जातियाँ वर्तमान समय में भी धन सेवृत्व के इस सर्वेक्षण से स्पष्ट है । इससे सापेक्ष वैश्य एवं ब्राह्मण जातियाँ व्यवसायिक दृष्टि से सेवक जातियाँ हैं और इनकी अल्पसंख्या इन वर्गों से जो धन शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत हैं उनमें धन सेवृत्व सम्बन्धी विकास दृष्टिगोचर नहीं हुआ है । (चित्र सं. 2)

वर्तमान शोध कार्य के संदर्भ में जिन विभिन्न आर्थिक वर्गों से आने वाले छात्र सेवाओं का प्रत्यक्षीकरण एवं साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य एकत्र करने के लिये उपयोग किया गया है, उसका विवरण तालिका संख्या 5 में प्रदर्शित है । (चित्र सं. 3)

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लगभग 60% विद्यार्थी सेवा कृषि पर आधारित आर्थिक सम्पन्नता वाले परिवारों से हैं । इस सम्बन्ध में नौकरी वाले आर्थिक सम्पन्नता का 5.2% प्राप्त होना यह प्रदर्शित करता है कि औद्योगिकी आदि का विकास इस क्षेत्र में आज भी बहुत न्यून है ।

तालिका संख्या 4 उत्तर भैरवों का जाति पर आधारित वर्गीकरण

क्रम संख्या	जाति	उत्तर भैरवों की संख्या	प्रतिशत
1.	यादव	125	50%
2.	ठाकुर	38	15.2%
3.	ब्राह्मण	25	10%
4.	वैश्य	13	5.2%
5.	पिछड़ी जातियाँ	49	19.6%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 5 उत्तर क्षेत्रों का पारिवारिक आर्थिक स्तर पर आधारित वर्गीकरण

क्रम संख्या	व्यवसायिक वर्ग	उपलब्ध उत्तर क्षेत्रों की संख्या	प्रतिशत
1.	कृषि	150	60%
2.	व्यापार	75	30%
3.	नौकरी	13	5.2%
4.	अन्य व्यवसाय	12	4.8%
	कुल	250	100%

चित्र सं॰ 2 वि॰ जातियों का आकृति पर आधारित प्रतिचित्र

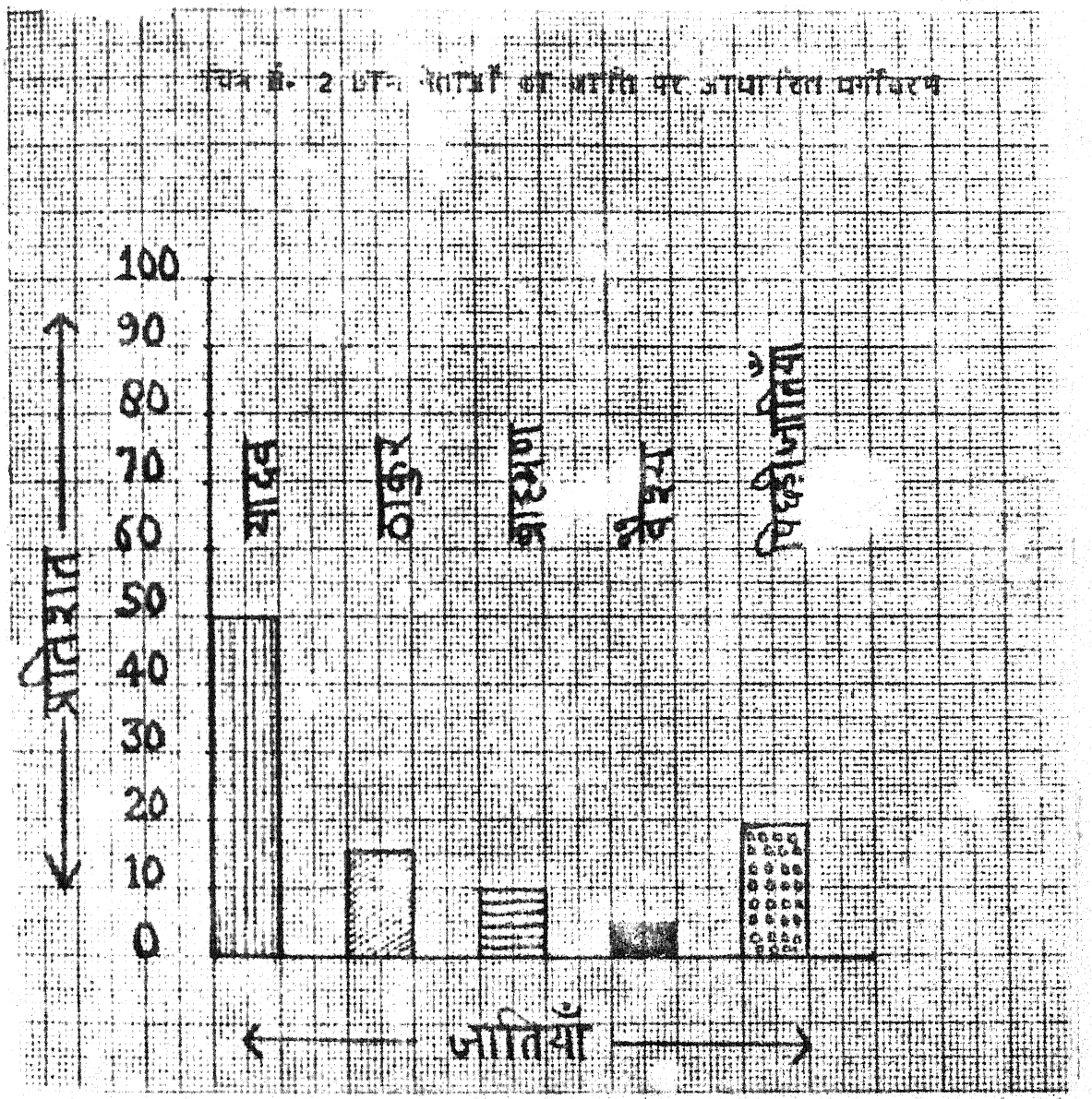

चित्र सं. 3- ज्ञात नेताओं का पारिवारिक व्यवसाय पर आधारित वर्गीकरण

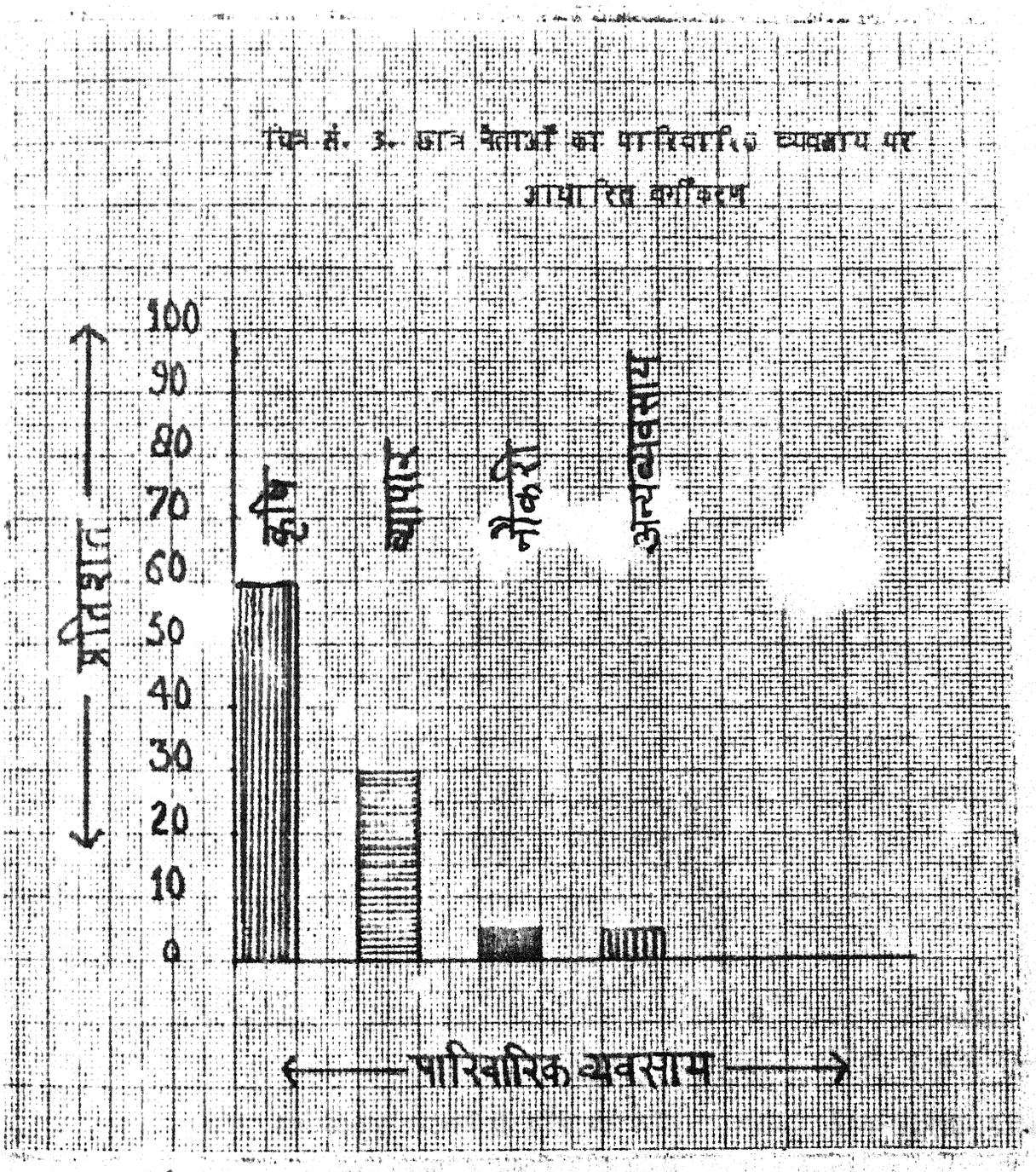

तालिका संख्या 6 में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रमुख फसलों को प्रदर्शित किया गया है ।

वर्तमान शोध सर्वेक्षण में पर्यावरण के आधार पर किये गये सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि 69.2% प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र के हैं । एवं 30.8% उत्तरदाता शहरी क्षेत्रों के हैं । इससे यह स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड कृषि प्रधान है एवं जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है । तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समुदाय से आने वाले छात्रों प्रतिनिधित्व का गुण अधिक व्याप्त है ।(तालिका हु चित्र सं. 4)

आयु पर आधारित छात्र क्षेत्राओं का वर्गीकरण तालिका संख्या 8 में प्रदर्शित किया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से प्रदर्शित होता है कि 40 वर्ष से अधिक आयु समूह में कोई भी उत्तरदाता प्राप्त नहीं हुआ । वर्गीकरण में सबसे अधिक 72% प्रतिशत उत्तरदाता 21 से 30 वर्ष की आयु समूह में प्राप्त हुये । इसके उपरान्त क्रमशः 20 प्रतिशत 11 से 20 वर्ष के आयु समूह में एवं 8 प्रतिशत 30 से 40 वर्ष की आयु समूह में प्राप्त हुये । यह स्पष्ट है कि माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का छात्र गतिविधियों में कम योगदान रहता है । इसके विपरीत स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का छात्र राजनीति में सक्रीय योगदान रहता है । 30 से 40 वर्ष की आयु समूह में प्राप्त 8% प्रतिशत उत्तरदाताओं की संख्या यह चिन्हित करती है कि समाजीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप दायित्व निर्वाह का भार व्यक्ति पर पड़ता है और वह छात्र समस्याओं से सम्बन्धित राजनीतिक गतिविधियों में कम भाग लेता है । (चित्र सं. 5)

तालिका तैयार 6 बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उत्पादित फसलों की औसत उपज

क्रम संख्या	फसल	प्रति कुन्टल प्रति हैक्टेयर		
		1978-79	1979-80	1980-81
1.	बाजरा	5.89	0.26	4.20
2.	मक्का	10.62	6.45	4.31
3.	ज्वार	5.70	0.48	6.80
4.	बाजरा	5.29	0.83	4.36
5.	सहुआ	6.71	—	—
6.	सांवा	4.46	2.17	4.03
7.	कोदो	3.76	0.09	2.81
8.	कादुन	2.83	1.26	2.30
9.	कुटकी	1.17	0.03	0.28
10.	गेहूँ	10.83	7.83	9.89
11.	जौ	7.75	2.89	8.47
12.	उर्द	1.18	0.61	2.57
13.	मूंग	1.11	0.53	2.33
14.	मसूर	1.40	2.11	7.65
15.	मोठ	—	—	2.06
16.	मटर	4.95	3.98	9.74
17.	चना	4.60	2.97	6.55
18.	अरहर	4.17	2.65	7.23
19.	लाखी, लतरी	2.99	2.79	3.48
20.	तिल	0.83	0.59	0.54
21.	अलसी	3.23	0.49	3.23
22.	गन्ना	373.67	238.67	359.78
23.	रेन्डी	—	1.86	4.93
24.	मूंगफली	5.57	3.90	7.01
25.	तम्बाकू	0.50	11.67	6.67
26.	कपास	—	—	1.87
27.	सूत	—	—	—
28.	सनई	4.37	3.42	4.53
29.	हल्दी	—	—	12.50
30.	आलू	157.52	115.26	190.77

सारिणी संख्या 7 छात्र बेरोजगारों का क्षेत्रीय वर्गीकरण

क्रम संख्या	क्षेत्र	छात्र बेरोजगारों की संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण	173	69.2%
2.	शहरी	77	30.8%
	योग	250	100%

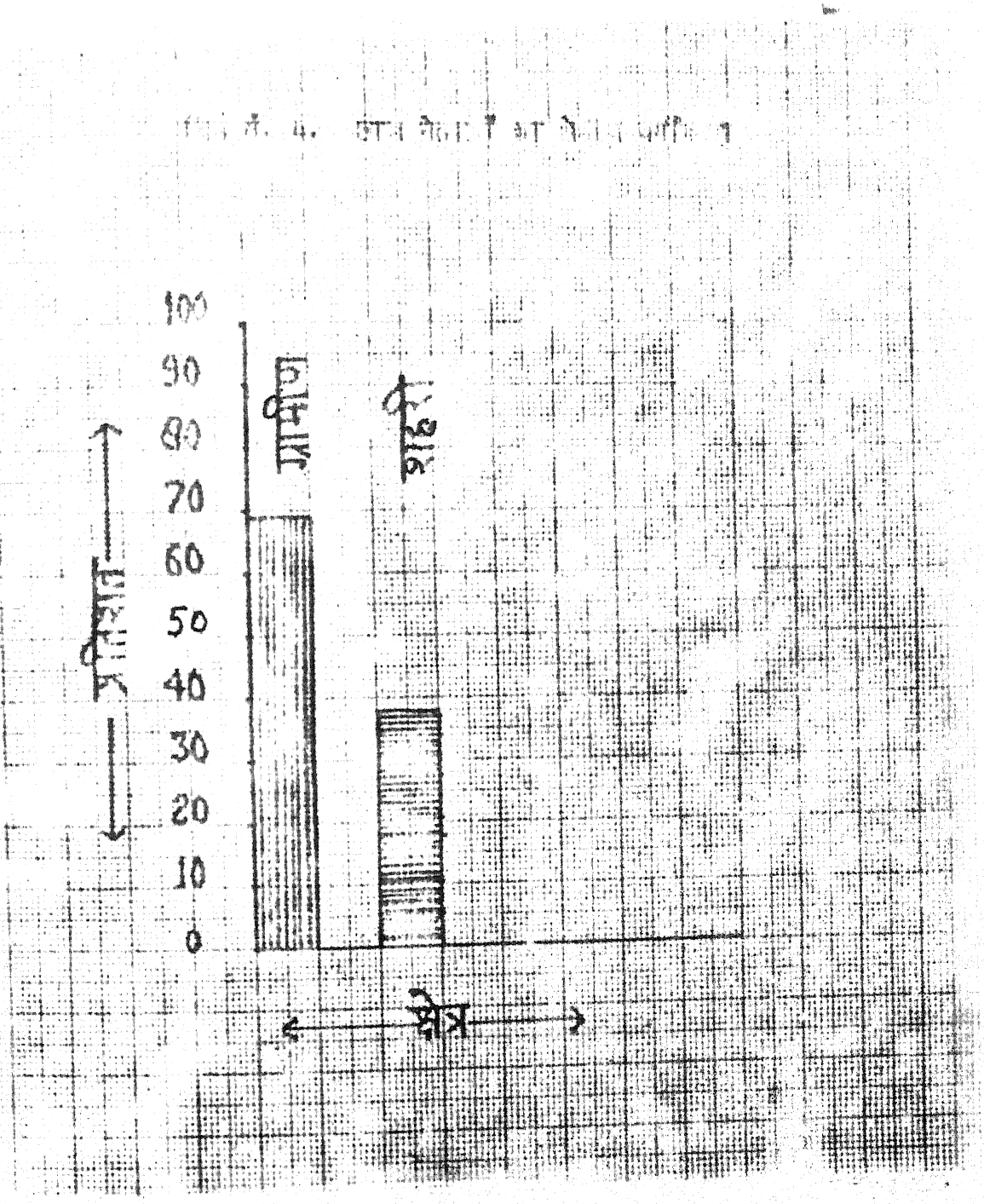
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
प्रतिशत
क्षेत्र

तालिका संख्या 8 उत्तरदाताओं का आयु पर आधारित वर्गीकरण

क्रम	आयु वर्ग में	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	11 से 20	50	20%
2.	21 से 30	180	72%
3.	30 से 40	20	8%
4.	40 से अधिक	-	-
	कुल योग	250	100%

चित्र संख्या 5. छात्र नेताओं का आयु पर आधारित वर्गीकरण

वर्तमान सर्वेक्षण में प्राप्त उत्तरदाताओं का शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध में, लिंग के आधार पर वर्गीकरण करने से ज्ञात हुआ है कि 36% प्रतिशत उत्तरदाता पुरुष शिक्षण संस्थाओं के हैं, 34% प्रतिशत उत्तरदाता महिला शिक्षण संस्थाओं के हैं एवं 30% प्रतिशत उत्तरदाता सह-शिक्षा वाली शिक्षण संस्थाओं के हैं। प्राप्त प्रतिशत को लगभग तीनों श्रेणियों में लगभग समान है। इसलिये यह कहना कठिन होगा कि किस शिक्षण संस्थाओं में छात्र गतिविधियाँ अधिक है। यद्यपि तालिका स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि छात्र गतिविधियाँ पुरुष शिक्षण संस्थाओं में अधिक हैं। (तालिका सं० 9)

वर्तमान शोधकार्य में प्राप्त छात्र नेताओं का वैवाहिक विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि 62% प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं एवं 38% उत्तरदाता विवाहित हैं। आयु के सापेक्ष इन उत्तरदाताओं का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि विवाहित उत्तरदाता 11 से 40 वर्ष की आयु के अन्तर्गत हैं। कोई भी विधुर अथवा विधवा उत्तरदाता प्राप्त नहीं हुआ है। विवाह से सम्बन्धित अन्य प्रश्नों की जानकारी के सम्बन्ध में यह ज्ञात हुआ है कि 84.2% उत्तरदाता लड़का लड़की विवाह निर्धारित करने की उचित मानते हैं वहीं स्वयं विवाह करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 15.7% प्राप्त हुआ है। समस्त विवाहित उत्तरदाताओं में 60% उत्तरदाता ऐसे प्राप्त हुये हैं जिनके बच्चे हुये हैं, एवं 35 उत्तरदाता ऐसे प्राप्त हुये जिनके कोई बच्चा नहीं है। शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्र की दृष्टि सर्वेक्षण से भी होती है, क्योंकि विवाहित उत्तरदाताओं की पत्नियों की शिक्षा हाई स्कूल या इससे निम्न स्तर की रही है। व्यवसायिक दृष्टि से भी पत्नियों का सम्पूर्ण प्रतिशत गृहकार्य में संलग्न पाया गया है। (तालिका संख्या 10, 11, 12, एवं 13)

तालिका संख्या 9 लिंग के आधार पर छात्र क्षेत्रों का विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में वर्गीकरण

क्रम संख्या	शिक्षण संस्थाओं का वर्गीकरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	पुरुष	90	36%
2.	महिला	85	34%
3.	सहशिक्षा	75	30%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 10

उत्तर भेदाओं की वर्तमान आयु एवं वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण

क्रम संख्या	आयु वर्षों में	वैवाहिक स्तर			योग
		अविवाहित	विवाहित	विधुर	
1.	11 से 20 वर्ष	38	12	-	50
	प्रतिशत	76%	24%		100%
2.	21 से 30 वर्ष	117	63	-	180
	प्रतिशत	65%	35%		100%
3.	30 से 40 वर्ष	-	20	-	20
	प्रतिशत	-	100%	-	100%
4.	40 से अधिक वर्ष	-	-	-	-
	प्रतिशत				

तालिका संख्या 11 उत्तर कोरकों के वैवाहिक स्तर एवं विवाह के समय आयु । पति/पत्नि । का

विवरण

क्रम संख्या	उत्तरदाता का वैवाहिक स्तर	पत्नियों की आयु(विवाह के समय)	विवाह के समय पति की आयु 11 से 20 वर्ष	21 से 30 वर्ष	31 से 40 वर्ष	योग	प्रतिशत
1.	अविवाहित	-	-	-	-	155	62%
2.	विवाहित	11 से 20 वर्ष	12	23	-	35	14%
		21 से 30 वर्ष	-	40	15	55	22%
		31 से 40 वर्ष	-	-	5	5	2%
3.	विधुर	-	-	-	-	-	-
	योग		12	63	20	250	100%

तालिका संख्या 12 विधानसभा क्षेत्र केताजों के अनुसार

पत्नियों के चुनाव में मतदाताओं की सहभागिता का विवरण

क्रम संख्या	विधान निर्धारण में मतदाताओं की संख्या	प्रतिशत	स्वयं: मतदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	80	84.2%	15	15.7%

तालिका संख्या 13 दान लेखाओं का विवाह के समय आयु एवं प्रथम बच्चे के जन्म में अन्तराल का विवरण

क्रम संख्या	विवाह एवं बच्चे के जन्म में अन्तर	विवाह के समय उत्तरदाता की आयु			प्रतिशत	योग	कोई बच्चा नहीं
		11 से 20 वर्ष	21 से 30 वर्ष	31 से 40 वर्ष			
1.	1 वर्ष का अन्तर	-	9	15	40%	24	35
2.	3 वर्ष का अन्तर	4	21	3	46.6%	28	-
3.	4 वर्ष का अन्तर	2	6	-	13.3%	8	-
	योग	6	36	18	100%	60	35

* प्रतिदर्श ग्राम 60 विवाहितों, जिनके बच्चे हुये हैं, में से लिया गया है, तथा 35 ऐसे विवाहित उत्तरदाता प्राप्त हुये हैं जिनके कोई बच्चा नहीं है।

तालिका संख्या 14 में ग्राम भेराड़ों की पारिवारिक व्यवस्था को वर्गीकरण किया गया है । इस वर्गीकरण के अनुसार अभी भी मुन्स्यारी क्षेत्र में संयुक्त परिवार ही अधिक पाये जाते हैं । सबसे अधिक उत्तरदाता 80 प्रतिशत संयुक्त परिवारों के हैं । एकाकी परिवारों से 19.2% तथा विस्तृत या अन्य परिवारों से मात्र 0.8% प्रतिशत उत्तरदाता प्राप्त हुये हैं । इससे स्पष्ट होता है कि एकाकी परिवार समाज में कम पाये जाते हैं । तथा विस्तृत या अन्य परिवार इस क्षेत्र में नगण्य है । इस विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार में उत्तरदायित्व कम होने के कारण ग्राम शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों में अधिक भाग लेते हैं जबकि एकाकी परिवार में यह व्यवस्था दृष्टिगोचर नहीं होती है ।

ग्राम भेराड़ों के परिवारों का आर्थिक दृष्टिकोण से वर्गीकरण करने से ज्ञात हुआ है कि 50.8% प्रतिशत उत्तरदाता 500/-रु से 1000/- रु आय वाले परिवारों से हैं, 21.2% एवं 20% उत्तरदाता क्रमशः 200/-रु से 500/-रु तथा 1000/-रु से अधिक आय वाले परिवारों से हैं । सबसे कम उत्तरदाता 8 % 100/-रु से 200/-रु आय वाले परिवारों से हैं । प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है जिनकी अधिक उत्तरदाता, जो कि ग्राम गतिविधियों में भाग लेते हैं वह 500/-रु से 1000/-रु के बीच आय वाले परिवारों में से हैं । (तालिका संख्या 15 ।(चित्र सं० 6)

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्ति के व्यवहारिक जीवन पर पारिवारिक संरचना का अधिकप्रभाव पड़ता है । ग्राम भेराड़ के वर्तमान सर्वेक्षण में परिवार प्रमुखों का वर्गीकरण तालिका संख्या 16 में दर्शाया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि मुन्स्यारी क्षेत्र में पितृसत्तात्मक परिवार विद्यमान हैं । सर्वेक्षण में

तालिका संख्या 14 उत्तरदाताओं का पारिवारिक व्यवस्था पर आधारित वर्गीकरण

क्रम संख्या	परिवार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	200	80%
2.	एकाकी परिवार	48	19.2%
3.	विस्तृत या अन्य परिवार	2	0.8%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 15 ग्राम भोजों का पारिवारिक आर्थिक दृष्टि से वर्गीकरण

क्र म संख्या	समस्त स्रोतों से प्राप्त मासिक आय	उत्तरदाताओं* की कुल संख्या	प्रतिशत
1.	100/-रु से 200/-रु के बीच	20	8%
2.	200/-रु से 500/-रु के बीच	53	21.2%
3.	500/-रु से 1000/-रु के बीच	127	50.8%
4.	1000/- रु से अधिक	50	20%
	योग	250	100%

चित्र सं॰ 6. छात्र नेताओं की पारिवारिक आय का वर्गीकरण

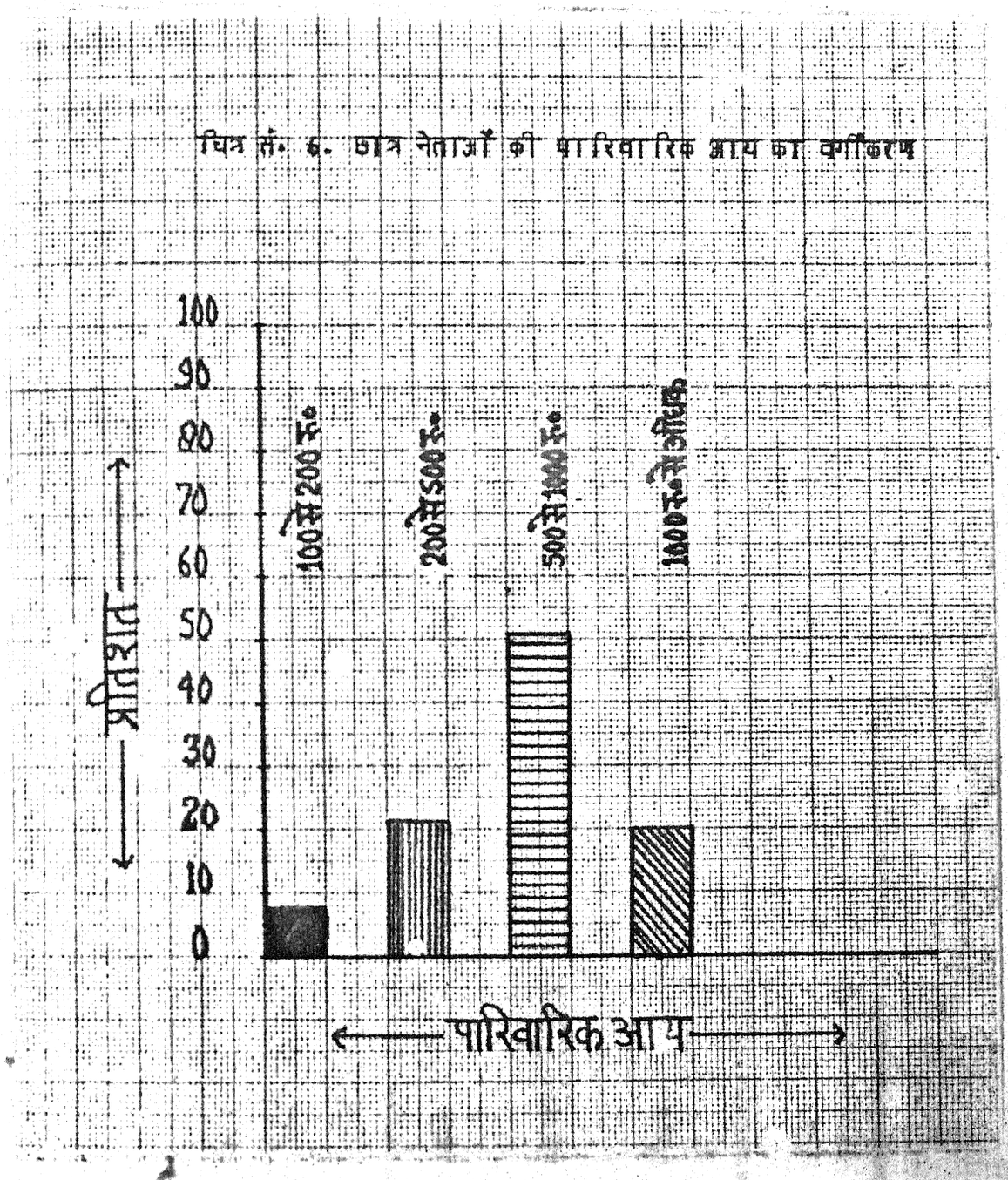

तालिका क्रमांक 16 शैय्या मेलाओं की पारिवारिक क्रियाओं के प्रकार

का तालिकरण

क्रम संख्या	उपलब्धता के प्रकार	परिवार की क्रियाएं			अन्य परिवार		प्रतिशत योग
		केवल परिवार	प्रतिशत	खाली परिवार	प्रतिशत	परिवार	
1.	हाँ	2	0.8%	10	7.2%	2	0.8% 22
2.	नियोजित नहीं	130	55.2%	20	8%	-	- 150
3.	निकट	60	24%	10	4.0%	-	- 70
योग		200	80%	40	19.2%	2	0.8% 250

5.2% परिवारों का नियन्त्रण पिताश्री । दादा । की देख-रेख में प्राप्त हुआ । संयुक्त परिवार में स्वनियन्त्रित परिवारों का प्रतिशत केवल 0.8% प्राप्त हुआ है जबकि 24% प्रतिशत परिवारों का नियन्त्रण पिता और किया जाता रहा है । स्वयं और नियन्त्रित अन्य परिवारों का प्रतिशत मात्र 0.8% प्रतिशत प्राप्त हुआ है, जो यह स्पष्ट करता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में इस प्रकार के परिवारों का अभाव है ।

परिवार के सदस्यों से लगाव सम्बन्धी उत्तरदाताओं की अभिवृत्ति का विवरण तालिका संख्या 17 में दर्शाया गया है । इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 73.2% प्रतिशत उत्तरदाताओं का लगाव पिता से, 24% प्रतिशत उत्तरदाताओं का लगाव माता से एवं 2.8% प्रतिशत उत्तरदाताओं का लगाव अन्य सदस्यों से है । इस सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है जिसमें किस उत्तरदाता ने परिवार के सदस्यों से कुछ व्यक्त की हो ।
(ग्राफ-पृष्ठ सं.77)

पारिवारिक नियन्त्रण से संबन्धित जानकारी को तालिका संख्या 18 में दर्शाया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि 74.8% प्रतिशत लड़का सदस्यता की नीति अपनाते हैं, 18.8% प्रतिशत लड़का अपने बच्चों के देर से आने के व्यवहार को पसन्द नहीं करते हैं पर कहते कुछ नहीं है जबकि 6.4% प्रतिशत लड़का बच्चों को प्रताड़ित करते हैं । इस सम्बन्ध में महिला वर्ग । माता/पिता । का प्रतिशत कुछ विपरीत सा है । 68.8% प्रतिशत महिला वर्ग नाराजगी प्रदर्शित करता है, इसके सापेक्ष 15.6% प्रतिशत महिलायें सहज रहती हैं ।

तालिका संख्या 17 ग्राम केन्द्रों की पारिवारिक अभिरुचि का वर्गीकरण

कुल संख्या	परिवार के सदस्यों से लगाव						परिवार के सदस्यों से दूरी		कुल	प्रतिशत
	पिता	प्रतिशत	माता	प्रतिशत	अन्य सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत		
उत्तरदाताओं की संख्या	183	73.2%	60	24%	7	2.8%	-	-	250	100

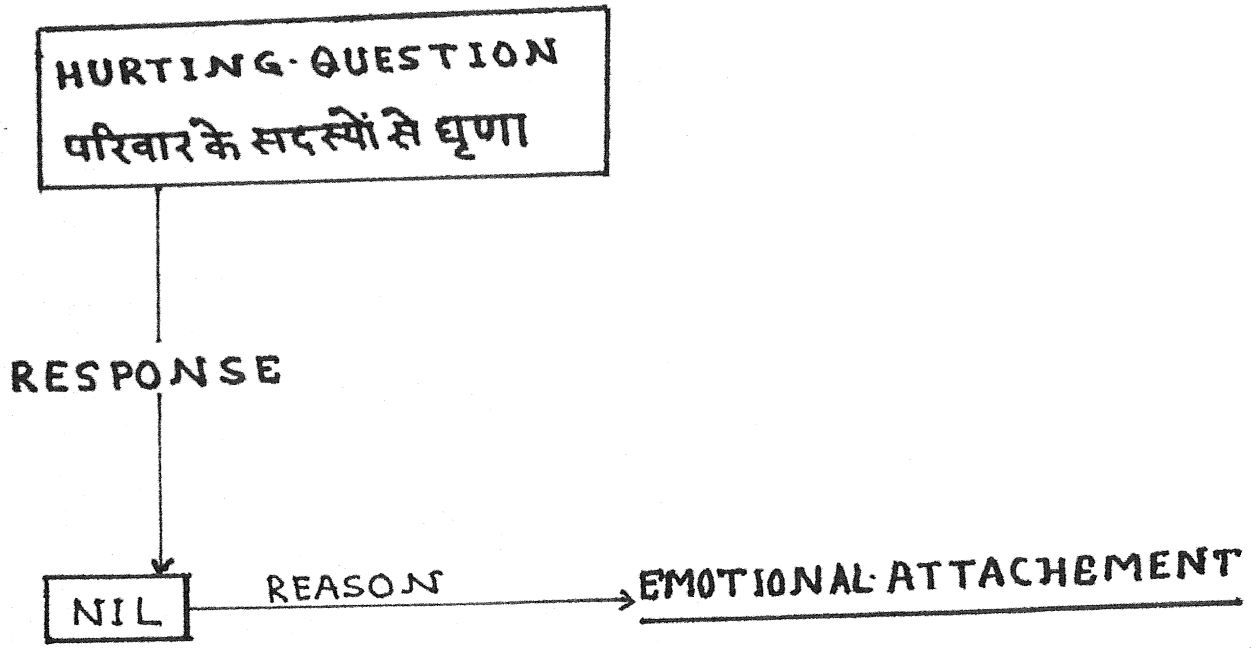

प्रारूप - व्यक्तिगत अभिरुचि

तालिका संख्या 18 आय श्रेणियों के हेर से एक पहुंचने की प्रक्रिया पर पारिवारिक सदस्यों के व्यवहार का वर्गीकरण

क्रम संख्या	व्यवहार	पिता एवं सेवकों का व्यवहार संख्या	प्रतिशत	माता/पत्नी का व्यवहार संख्या	प्रतिशत
1.	नाराज होते हैं	16	6.4%	172	68.8%
2.	पसंद नहीं करते पर कहते कुछ नहीं हैं	47	18.8%	39	15.6%
3.	पसंद नहीं करते पर उदासीन रहते हैं	187	74.8%	39	15.6%
	योग	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 19 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि 59.2% प्रतिशत उत्तरदाता परिवार के प्रमुख से विभिन्न कारकों पर बहस करना उचित समझते हैं। उसके सापेक्ष 40.8% प्रतिशत उत्तरदाता परिवार के प्रमुख से आज्ञाकारी व्यवहार करते हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि लड़कों की गतिविधियों विभिन्न संस्थाओं के सम्पर्क में आने के कारण बढ़ती हैं। यह प्रतिशत पारिवारिक परम्पराओं, मूल्यों एवं नियन्त्रण की दृष्टि से अत्यधिक चुनौती देने वाला है।

सांस्कृतिक परम्पराओं का मूल्यांकन करने की दृष्टि से ग्राम नेताओं से प्राप्त जानकारी का विवरण तालिका संख्या 20, 21 एवं 22 में दर्शाया गया है। 66% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रेम विवाह के पक्ष में अपने विचार प्रकट किये हैं एवं 34% प्रतिशत ने नकारात्मक उत्तर दिये हैं। अन्तर्जातीय विवाह के लिये 84% ग्राम नेताओं ने सकारात्मक विचार प्रकट किये हैं तथा मात्र 16% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्तर्जातीय विवाह में विश्वास के प्रति अपनी स्वीकृति दी। इन्हीं उत्तरदाताओं से विवाह के मुद्दे प्रश्न पर परिवार के सदस्यों के विचार जाने गये। उन विचारों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि 94.8% प्रतिशत परिवार के सदस्य प्रेम-विवाह में विश्वास नहीं करते हैं। अधिकांश रूप से अन्तर्जातीय विवाहों को 97.2% प्रतिशत ग्राम नेताओं के परिवार वाले पसन्द नहीं करते हैं। इन महत्वपूर्ण उपलब्धियों की विवेचना करने से स्पष्ट होता है कि हुन्देल-खण्ड क्षेत्र में अभी परम्परागत सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान हैं और इनका विरोध प्राचीन संस्कृति से लगाव रखने वाले व्यक्ति नहीं करते हैं। वैज्ञानिक रूप से इस तथ्य का मूल्यांकन करने के लिये ग्राम नेताओं से पूर्वी एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रति झुकाव का प्रश्न किया गया। आंकड़ा विश्लेषण करने से स्पष्ट हुआ कि 67.6% प्रतिशत उत्तरदाता पश्चिमी संस्कृति की तरफ रुचि प्रदर्शित करते हैं। उसके सापेक्ष केवल 32.4% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पूर्वी

तालिका संख्या 19 छात्र स्रोतों द्वारा परिवार के मुखिया की आय मापने का परिणाम

क्रम संख्या	परिवार के मुखिया से कोई खास उम्मीद नहीं है।	परिवार के मुखिया से खास उम्मीद करना चाहिये	कुल
1. उत्तरदाताओं की संख्या	102	148	250
2. उत्तरदाताओं का प्रतिशत	40.8%	59.2%	100%

तालिका संख्या 20 प्रतिवादी महिलाओं का विवाह पद्धति से सम्बन्धित विवरण

क्रम संख्या	प्रेम विवाह में विचार				अन्तर्जातीय विवाह में विचार			
	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	165	66%	85	34%	40	16%	210	84%
	योग	250		100%	योग	250		100%

तालिका संख्या 21 ग्राम क्षेत्रों के पारिवारिक सदस्यों द्वारा प्रेम विवाह/अन्तर्जातीय विवाह पद्धति में विवाह का विवरण

क्रम संख्या	परिवारों के सदस्यों का प्रेम विवाह में विवाह	संख्या	प्रतिशत	परिवार के सदस्यों का अन्तर्जातीय विवाह में विवाह	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	13	5.2%	हाँ	7	2.8%
2.	नहीं	237	94.8%	नहीं	243	97.2%
	योग	250	100%	योग	250	100%

तालिका संख्या 22 उत्तर भारत की संस्कृति एवं सभ्यता से संबन्धित

विवरण

क्रम संख्या	संस्कृति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्वी संस्कृति अच्छी है ।	81	32.4%
2.	पश्चिमी संस्कृति अच्छी है ।	169	67.6%
	योग	250	100%

सन्तुष्टि के प्रति आस्था व्यक्त की है । यह तथ्य इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये बाध्य करता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र का शिल्प संस्थाओं में आधुनिकीकरण एवं परिष्कारीकरण का प्रवेश हो चुका है । जिसके फलस्वरूप ग्राम वर्ग की मनोपूरित सुख-सुविधा, भोगविलास से परिपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है । इन तथ्यों की सूक्ष्म व्याख्या करने से परिलक्षित होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्राम वर्ग की छिपा-दबाव पारिवारिक मान्यताओं से निर्धारित होता है । परन्तु शिल्प संस्थाओं के सम्पर्क में आने से विद्यार्थी वर्ग, सीखने का ढंग पारम्परिक मान्यताओं एवं सन्तुष्टियों पर आधारित होता जा रहा है ।

शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं की विवेचना का विवरण तालिका संख्या 23 में दर्शाया गया है । इस तालिका से ग्राम क्षेत्रों की सामान्य जानकारी के बारे में जानकारी प्राप्त होती है । तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि 66.0% प्रतिशत ग्राम क्षेत्र मिल बनाने में सफलता प्राप्त करते हैं और यह बीज मिल बनाते हैं । 92% प्रतिशत ग्राम क्षेत्रों के मानुसार सभी आयु के मिलों की परीक्षा हो गयी है । 94% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महिला मिल बनाने के सम्बन्धों स्वीकारात्मक मत दिया है । तालिका से यह भी विस्तृत होता है कि मिलों के विभिन्न वर्ग समूहों में समान स्तर वाले मिलों को परीक्षा क्रम में प्रथम स्थान ग्राम क्षेत्रों ने दिया है ।

ग्राम क्षेत्रों के निवास पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी का विश्लेषण तालिका संख्या 24 में प्रदर्शित किया गया है । इस तालिका का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि निवास के चारों तरफ रहने वाले शिक्षा एवं व्यापार में तीव्र अधिकांश व्यक्तियों के बारे में जानकारी उत्तरदाताओं के पास है । जबकि अन्य नौकरियों में तीव्र व्यक्तियों के बारे में कम

तालिका संख्या 23 उत्तर भारत के विवाह संबन्धी गुणों का विवरण

क्रम संख्या	उत्तर	विवाह संबन्धी विभिन्न गुण													
		भिन्नों के सम्बन्ध में अभिमत						भिन्नों के वर्ग सम्बन्ध							
		भिन्न जल्दी बनाते हैं		सम्बन्धु के भिन्न		महिला भिन्न		समान स्तर		स्तर के नीचे		उच्च स्तरीय		तभी वर्ग के	
		उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाता की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाता की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	78	31.2%	205	82%	210	84%	207	82.8%	97	38.8%	121	48.4%	125	50%
2.	नहीं	172	68.8%	45	18%	40	16%	43	17.2%	153	61.2%	129	51.6%	125	50%
योग		250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 24 छात्र क्षेत्रों के अभिभावकों का - पर्यावरणीय जानकारी संबंधित विवरण

क्रम संख्या	उत्तर	पढ़ाई से संबंधित जानकारी							
		विशेष व्यवसाय		व्यापार में लगना		नौकरियों में लगना		अन्य कोई	
		उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	167	66.8%	148	59.2%	63	25.2%	36	14.4%
2.	नहीं	83	33.2%	102	40.8%	187	74.8%	214	85.6%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

जानकारी उत्तरदाताओं के पास है । इसके साथ अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में जानकारी उत्तरदाताओं को नहीं है ।

4. विश्लेषण :-

समाज अपने शैशवकाल में निर्बल एवं स्वेच्छाचारी था। व्यक्ति का कार्य एवं आचरण स्वयं के विवेक से नियन्त्रित होता था। धीरे-धीरे जो सामाजिक संगठन का उदय हुआ और व्यक्ति सीखिचोपार्जन हेतु संलग्न हुआ । अर्थव्यवस्था ने/ को संगठनता की ओर प्रवृत्त किया। व्यक्तियों का समूहों में रहना, भौगोलिक परिस्थितियों का अत्यधिक उपयोग में लाना ही अर्थव्यवस्था की प्रारंभिक अवस्था है । सीखिचोपार्जन के साधनों में प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति विकसित हुई । इस प्रवृत्ति के विकास से आवश्यक समूहों में संघर्ष होने लगे, जिससे विभिन्न समाजों का निर्माण संभव हुआ । इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के फलस्वरूप प्राकृतिक स्रोतों का उपभोग एवं श्रम विभाजन जैसी व्यवस्थाओं का विकास हुआ एवं क्रमशः व्यवस्थाओं में संघर्ष की प्रवृत्ति बढ़ती हुई ।

डर्खिम एवं मेरिल (1950) ने सामाजिक संगठन को सूक्ष्म प्रात्मिक दृष्टिकोण से वर्णित करते हुये कहा है कि सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिये समाज के सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत स्थिति तथा कार्य निर्धारण के अनुसार कार्यों को समन्वय किया जाना चाहिये । भारतवर्ष के प्राचीन समाजों में स्थिति एवं कार्य पर आधारित वर्गीकरण विद्यमान था । मानव आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, व्यवसाय का निर्धारित सामाजिक व्यवस्था की अपनी विशेषता है । भारत वर्ष के वैदिकालीन पूर्व के ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति क्या कार्य करेगा यह उसके जन्म से निर्धारित होता । सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से यह अर्थव्यवस्था का विशेष आधार था । सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के फलस्वरूप अर्थ व्यवस्था में संघर्ष

कारकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं। पूर्वमध्य काल (1000 से 1300 तक) में, जिसमें हिन्दू राज्यों का अन्त एवं मुस्लिम राज्यों का प्रारम्भ है, सामान्यतः ब्राह्मण कुछ ऐसे कार्य करते थे जिनसे जीविकोपार्जन हो जाता था परन्तु यह कार्य अन्यों के लिये निर्धारित थे। व्यवसायिक वर्गीकरण सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से बहुत कठोर नहीं था फिर भी, शूद्रों को उच्च जाति के व्यवसाय करने की मनाही थी। वैश्यत्व नहीं आरम्भ में अन्तिम चरण में प्रचलन में आने लगे थे। 11वीं शताब्दी तथा उसके बाद वाले समय में उन्होंने उच्चतम पद प्राप्त करना शुरू किया। सामान्यतः शूद्रों के प्रति समाज का दृष्टिकोण सौम्य नहीं था। ऊँची जाति के व्यक्ति उन्हें कार्य एवं वस्तुओं को मारना किया करते थे। मध्य युगीन भारत में मुस्लिम शासन शूद्रों में इतने व्याप्त रहे कि उन्हें स्वयं आर्थिक उत्थान का कोई समय प्राप्त नहीं हुआ। ब्राह्मण धार्मिक कार्यों से अतिरिक्त कृषि कीजिया करते थे। सम्भवतः मुस्लिम शासकों द्वारा धार्मिक मन्दिरों का विनाश इसका कारण था। शूद्रों को इस काल में नमक, मांस, मछिदा आदि बेचने की सुविधा प्रदान की गई जो वस्तुतः भारतीय प्राचीन जाति व्यवस्था में अस्तित्व नहीं है।

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है तथा सम्पूर्ण देश की अर्थव्यवस्था का लगभग 90% देश कृषि से प्राप्त होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तक बुन्देलखण्ड क्षेत्र में परम्परागत व्यवसाय कृषि नागरिकों का आर्थिक आधार रहा है। तकनीकी विकास के वर्तमान की सीमाई के तौलिकल साधन ग्रामीण क्षेत्रों में, आज भी उपलब्ध नहीं है। ब्रिटिश शासन साम्राज्य में देश की अर्थव्यवस्था इस प्रकार चक्र हुई कि आज भी कृषि के व्यवहारों सम्बन्धी

विवाद ग्रामीण क्षेत्रों में बाहुल्यता वाले हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड क्षेत्र कम प्रगतिशील नहीं है। अधिकांश भाग में पथरीली जमीन एवं कैमूर विद्यमान है। सन् 1946 से पूर्व औद्योगिक दृष्टि से यह क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात राज्य व केन्द्र सरकारों के प्रयास के फलस्वरूप विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं की स्थापना बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हुई है। अर्थ सम्बन्धी अन्य उपलब्धियों के लिये यह क्षेत्र के व्यापारिक व्यापार एवं नौकरियों पर निर्भर है।

उपलब्ध अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में व्यापार एवं नौकरी आय-व्यय का आधार है। स्थानीय व्यापारी, अफसर, ठेकेदार, मजदूर एवं श्रमिक की सुनिश्चित रूप से अर्थव्यवस्था पर नियन्त्रण करते हैं। साधारण किसान प्रति व्यक्ति आय के अनुपात में गरीबी का जीवन यापन करते हैं। राज्य की ओर से प्राप्त अनेक सुविधाओं के बावजूद मानसून का सर्वाधिक प्रभाव कृषि एवं व्यापार पर पड़ता है। कृषि कार्य आज भी मानव श्रम पर आधारित है। कम आय वाले किसान ट्रैक्टर या अन्य आधुनिक उपकरणों के माध्यम से कृषि करते हैं। अन्यथा निम्न स्तर वाले किसान परम्परागत हल-बैल एवं प्राकृतिक सिंचाई पर निर्भर रह कर कृषि कार्य करते हैं। वर्तमान अध्याय में उपलब्ध विभिन्न समाज आर्थिक कारकों का सर्वेक्षण से विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कृषि कृषक जीविकोपार्जन का ठोस दृष्टिकोण होता है। अन्य व्यवसाय सामान्य से निम्न स्तर की ओर कुछ अंश प्रदर्शित करते हैं। जाति व्यवस्था की दृष्टि से ठाकुर एवं यादव जातियों के परिवारों वाले ग्राम

नेताओं के आंकड़ों प्रतिशत से यह प्रदर्शित होता है कि इस क्षेत्र की प्रमुख जातियों में यह जातियां अपना सर्वोपरि स्थान बनाये हुये है ।

पारिवारिक व्यवस्था के संदर्भ में यहां वर्णन करना आवश्यक होगा कि परम्परागत विस्तारात्मक परिवार बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पाये जाते हैं । यद्यपि तत्तात्मक परिवारों का पाया जाना इस क्षेत्र में नाम मात्र को अपवादस्वरूप है । सरकारी नौकरियों के सम्बन्ध में जो दक्षिण भारतीय परिवार इस क्षेत्र में है, उन परिवारों से वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान कोई प्रतिनिधि प्राप्त नहीं हुआ है । परम्परागत परिवारों में संयुक्त परिवारों की प्रमुखता है ।

सम्पूर्ण अध्याय की उपलब्धियों पर एक विहंगम दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिवारों के साथ प्रतिस्पर्धा की बाहुल्यता, बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में है । इन परिवारों का प्रमुख आय का स्रोत परम्परागत कृषि कार्य है । यह तनाव ग्रामीण क्षेत्र विद्यार्थियों को निरन्तर रूप से शिक्षण संस्थाओं में राजनीतिक गतिविधियों के लिये उचित वातावरण प्रदान करने में सक्षम है ।

=:=:=:=:=:=:=:=

अध्याय ४

छात्र मेहतर का शैक्षणिक विवरण

1. सामान्य विवरण

2. शिक्षा

3. शैक्षणिक गतिविधियाँ

4. विशेषता

1. सामान्य विवरण :-

विभिन्न समाजों में बौद्धिक ज्ञान अर्जित करने के लिये शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसकी सामाजिक व्यवस्था सैद्धान्तिक रहती है। वास्तविक रूप में शिक्षा विकसित समाजों का आधार-भूत तत्व है। प्राचीन शिक्षा परम्पराओं में लिपि की मान्यता प्राप्त थी। इससे इस प्रकार भी वर्णित किया जा सकता है कि लेखन सामग्री का प्रचलन नहीं था। एक व्यक्ति द्वारा कहे गये वाक्यों को संस्मरण करके दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाया जाता था। समय के विकास के साथ-साथ लेखन सामग्री का अविष्कार हुआ और इसकी प्रकार रचनायें वेद एवं पुराण के रूप में उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में जब तकनीकी विकास अपनी चरमसीमा पर है लेखन सामग्री के सम्बन्ध में अत्यधिक आधुनिक साधन उपलब्ध हैं।

शिक्षा प्राप्त करने के लिये वर्ण एवं जाति व्यवस्था के समान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी। आश्रम में रहकर उपदेश प्राप्त करने की परम्परा विद्यमान थी। अनुसूचित जैसे के समय ब्राह्मण जाति का व्यक्ति अन्य जातियों के व्यक्तियों से शिक्षा प्राप्त कर सकता था। परन्तु जैसे ब्राह्मण शिक्षण उन दैविक सेवाओं से दूर थे जिन्हें अन्य शिक्षों को पूरा के लिये करना होती थी। समाज को वास्तविक शिक्षा प्रदान करने के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है।

2. शिक्षा :-

भारतवर्ष में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात ब्रिटिश काल में हुआ। इसके विकास हेतु ब्रिटिश विधारियों ने समय-समय पर विभिन्न शिक्षा संस्थायें प्रारम्भ कीं। इस शिक्षा प्रणाली की सफलता पर विभिन्न समयों में टिप्पणियां होती रही हैं। ब्रिटिश

शासन काल में प्रदान की गयी शिक्षा का उद्देश्य न्यून वेतन पर कर्मचारी प्राप्त करना था तथा पाश्चात्य संस्कृति को भारतवासियों पर थोपना था। वर्तमान आधुनिक शिक्षा के अनेक दुष्परिणाम समाज में दृष्टिगोचर होते हैं। अभी निरपेक्ष राष्ट्र भारत में ईसाई पादरियों द्वारा हिन्दू एवं मुस्लिम समुदायों में तनाव पैदा करने के लिये धार्मिक आधारों पर शिक्षण संस्थायें खोली गयीं। भारत वर्ष में आधुनिक शिक्षा के प्रणेता राजाराम मोहन राय थे। मान्टेसरी शिक्षा पद्धति के अतिरिक्त उपयोगी शिक्षा का विकास धीरे-धीरे हुआ। प्रारम्भिक शिक्षण संस्थाओं में छात्र नेतृत्व अथवा छात्र कल्याण जैसी समस्यायें विद्यमान नहीं थीं।

भारतवर्ष में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तीव्र प्रगति हुई। प्रजातान्त्रिक शिक्षण होने के कारण छात्र प्रतिनिधित्व को शिक्षण संस्थाओं में उचित स्थान दिया जाने लगा है। यह छात्र प्रतिनिधित्व स्थानीय अथवा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

3. <u>शैक्षणिक गतिविधियाँ</u> :-

वर्तमान अध्याय में छात्र नेताओं से शैक्षणिक विषय पर जो तथ्य उपलब्ध हुये हैं उनका विश्लेषण वर्णित किया गया है। विद्यार्थियों अभिवृत्तियों पर आधारित तथ्यों के विश्लेषण से जो विधिवत प्राप्त हुई है, वह नेतृत्व के लिये उपयुक्त क्रिया विधियाँ को कार्यान्वित करने की दिशा में एक प्रयास है। प्रश्नावलि गतिविधियों से सर्वेक्षित प्राप्त जानकारी के आधार पर यह निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है कि वास्तविक रूप से शैक्षणिक योग्यताओं का विद्यार्थी वर्ग पर किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है, जिससे कि छात्र समुदाय शिक्षण संस्था की प्रशासनिक गतिविधियों में अनुकूलता प्रदर्शित करते हैं।

शिक्षकों के साथ परस्परिक सम्बन्धों के बारे में उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण तालिका संख्या 25 में दर्शाया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन मुक्त शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं का प्रतिक्रिया लगभग समसंख्या वाला है । तालिका से स्पष्ट होता है कि 74.8% प्रतिशत उत्तरदाताओं के शिक्षकों के साथ मधुर सम्बन्ध हैं । शिक्षकों के साथ अनौरंजन करने का प्रतिशत 81.2% प्राप्त हुआ है।इसके विपरीत भी 47.2% प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षकों के साथ सुझाव करते हैं जबकि 52.8% उत्तरदाता शिक्षकों के साथ सुझाव करने की बातें बताते हैं । इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि जहाँ तक प्रश्न सामान्य से अनौरंजन का है वहाँ तक उत्तरदाताओं एवं शिक्षकों के बीच सामंजस्य है । परन्तु शैक्षणिक अनौरंजन के क्षेत्र में वहाँ सुझाव जब समुदाय में करना होता है वहाँ विद्यार्थी वर्ग विरुद्ध अनुभव करता है । सांस्कृतिक मूल्यों का क्या इस व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है ऐसा नहीं होगा ।

विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से जो प्रतिनिधि सर्वेक्षण शोध कार्य में सम्मिलित किये गये हैं, उनका विवरण तालिका संख्या 26 में प्रदर्शित किया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक उत्तरदाता (52%) स्नातक कक्षाओं से प्राप्त हुये हैं एवं सबसे कम उत्तरदाता (9.6%) मेडिकल संस्थान से प्राप्त हुये हैं । जबकि परास्नातक एवं व्यावसायिक शिक्षा स्तरों का प्रतिशत क्रमशः 22.4% एवं 16% रहा है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण क्रम में स्नातक विद्यार्थी तीसरे स्थान पर रहे हैं । तार्किक आधार इस प्रकार दी जा सकती है कि अधिकांशतः कला संकायों

तालिका संख्या 25 छात्र नेताओं एवं शिक्षकों के पारस्परिक संबन्धों का विवरण

क्रम संख्या	उत्तर	ग्रामीण गुरु शिष्य परम्परानुसार		शिक्षकों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध		शिक्षकों के साथ सहयोग		शिक्षकों के साथ औपचारिक	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	127	50.8%	118	47.2%	187	74.8%	203	81.2%
2.	नहीं	123	49.2%	132	52.8%	63	25.2%	47	18.8%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 26 उत्तरदाताओं का शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	शिक्षा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	माध्यमिक	40	16%
2.	स्नातक	130	52%
3.	परास्नातक	56	22.4%
4.	मेडिकल	24	9.6%
	योग	250	100%

चित्र सं. 7. छः नेताओं का शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण

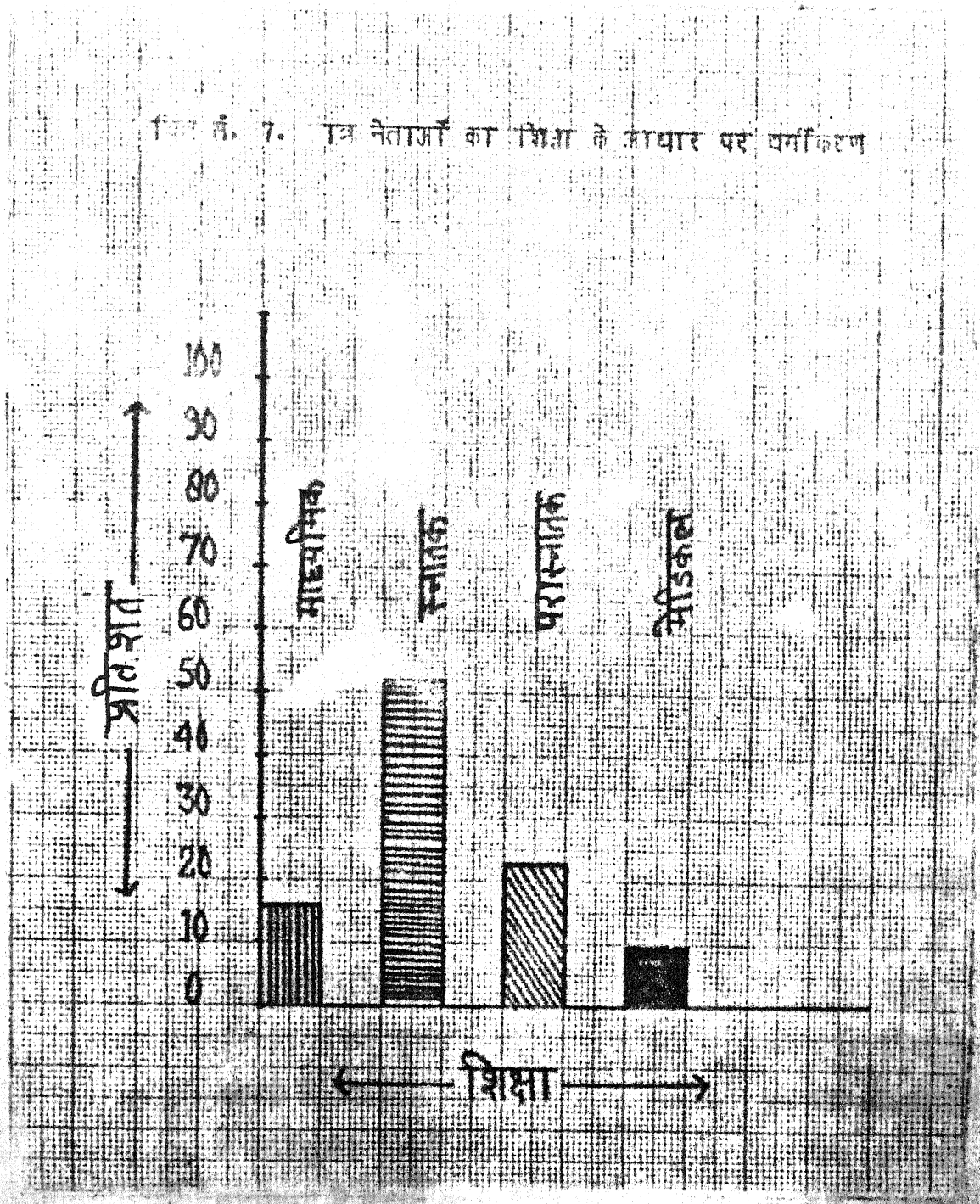

के महाविद्यालयों में स्नातक विद्यार्थियों को विषयक उत्तरदायित्व कम रहते हैं, अत कारण उन्हें विभिन्न छात्र गतिविधियों में भाग लेने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। इसके सापेक्ष मेडिकल समूह में प्रयोगात्मक एवं विषय सामग्री की दुरूहता के उत्तरदायित्व अधिक होने के फलस्वरूप छात्र यूनियनों या अन्य छात्र गतिविधियों में भाग लेने के अवसर कम प्राप्त होते हैं। (चित्र सं० 7)

छात्र स्रोतों से वर्तमान शिक्षाप्रणाली के सम्बन्ध में एकत्रित जानकारी का विश्लेषण तालिका संख्या 27 में दर्शाया गया है। इस तालिका का मूल्यांकन करने से स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली से सम्बन्धित विभिन्न कारकों के प्रति उत्तरदाताओं के मन में असंतोष है। उचित शिक्षकों के अभाव को 92.0% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है। वस्तुतः इस तथ्य की भूमिका में यह परिलक्षित होता है कि मुख्तेश्वर क्षेत्र की शिक्षण संस्थायें आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्नतर हैं जिससे वह शिक्षकों को उपयोगी पुस्तकालयीन सुविधा उपलब्ध करा सके, जिससे फलस्वरूप शिक्षक दिन प्रतिदिन की शिक्षण प्रणाली से अलग हो सके। (चित्र सं० 8)

विद्यार्थियों की मनोवृत्ति से सम्बन्धित शिक्षण सामग्री अभिरुचि का विवरण तालिका संख्या 28वें* दर्शाया गया है। इसमें अधिकांश प्रतिशत उन छात्रों का है जो कि दूसरा पढ़ने, पुस्तकालय की पुस्तकें अपने पास होने एवं नवल जैसी दोषपूर्ण आदतों में विश्वास नहीं करते हैं। 54.0% प्रतिशत उत्तरदाताओं के फलस्वरूप पुस्तकें क्रीत कर पढ़ना चाहिये। यह तालिका में प्राप्त तथ्य विशिष्ट रूप से छात्र वर्ग के बौद्धिक अस्तित्व का ज्ञान कराते हैं।

तालिका संख्या 27 छात्र केवलों के मत - वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबन्ध में

क्रम संख्या	उत्तर	वर्तमान शिक्षा प्रणाली							
		शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है		परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है		उचित शिक्षकों का अभाव है		शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	177	70.8%	126	50.4%	232	92.8%	188	75.2%
2.	नहीं	73	29.2%	124	49.6%	18	7.2%	62	24.8%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

चित्र सं. 8. छात्र भेदाओं का उनके दृष्टिकोण शिक्षा प्रणाली के संबन्ध में

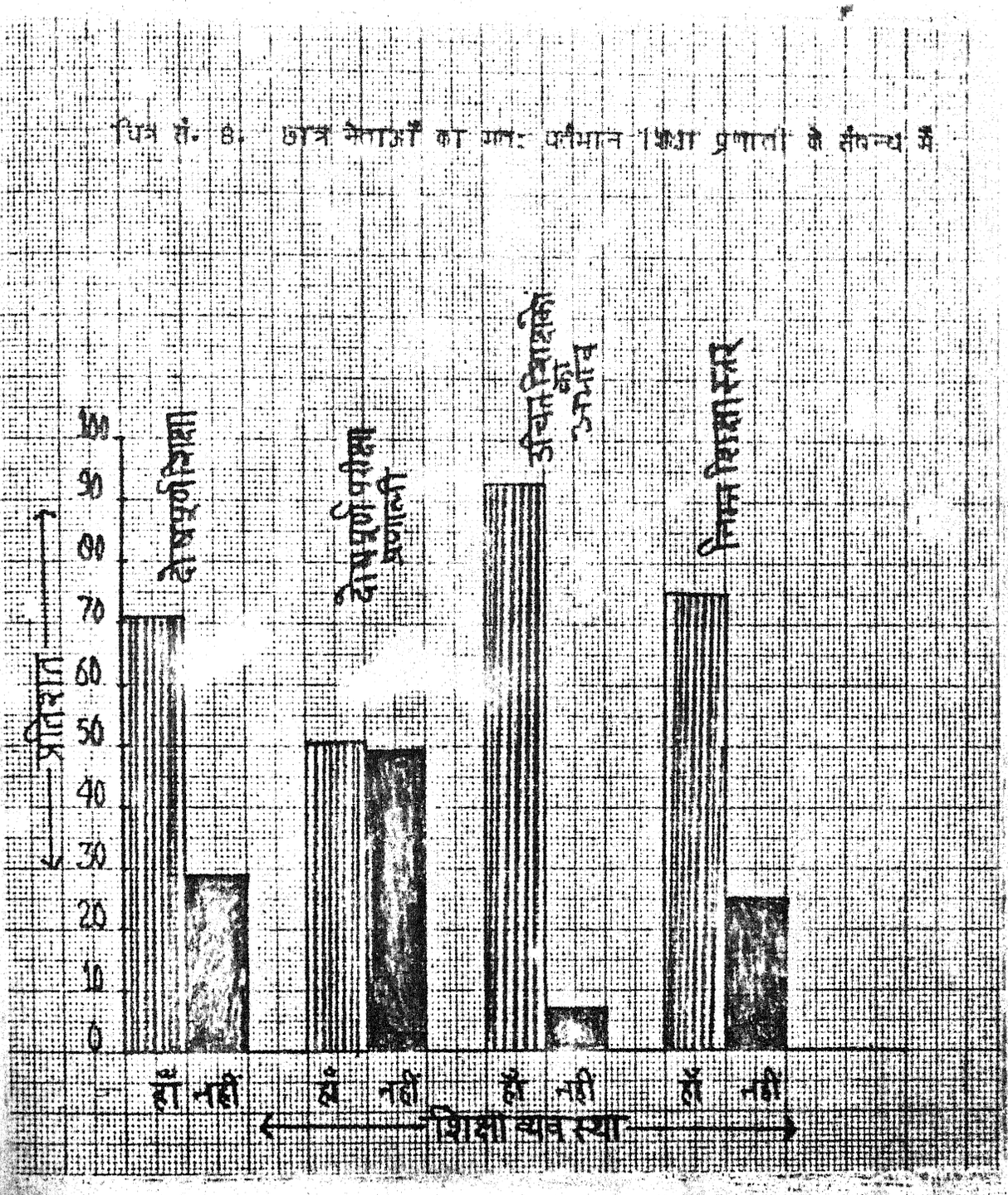

तालिका संख्या 28 छात्र सेवाओं की सिंह सामग्री अभिरुचि का विवरण

क्र० संख्या	उत्तर	अभिरुचियाँ							
		पुस्तकें अवश्य पढ़ना चाहिये		सुलभ पढ़ना चाहिये		पुस्तकालय की पुस्तकें घरों में रखना चाहिये		परीक्षा में नकल पर निर्भरता	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	136	54.4%	118	47.2%	7	2.8%	-	-
2.	नहीं	114	45.6%	132	52.8%	243	97.2%	250	100%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

विभिन्न पर्यावरणों में पाये जाने वाले सामाजिक समूहों के अपने मूल्य एवं परम्परायें होती है। इन मूल्यों में दैवीय प्रकोप, जादू टोने एवं जादू टोने का प्रमुख स्थान है। ग्राम मेलाओं से प्राप्त तथ्यात्मक जानकारी का विश्लेषण तालिका संख्या 29 एवं 30 में दर्शाया गया है। इन तालिकाओं का मूल्यांकन करने से स्पष्ट होता है कि जादू टोने में विश्वास न करने वाले उत्तर दाताओं का प्रतिशत क्रमशः 98.4% एवं 96.4% है। गुणात्मक घटनाओं से सम्बन्धित मतों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि 73.2% प्रतिशत ग्राम मेला किसी भी कारक के प्रति स्थैर्य के प्रयास को महत्वपूर्ण समझते हैं। अन्य वर्गों में प्राप्त प्रतिशत अत्यधिक कम है और किसी गणना योग्य नहीं माना जा सकता है। राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय विकास के क्रम में बुन्देलखण्ड क्षेत्र का आंचलिक ग्राम की स्थानीय को प्रतिस्पर्धा में भागीदार समझता है। अधिकांश ग्राम मेलाओं के धन में किसी भी उपलब्धि के लिए स्थैर्य का प्रयास अन्य किसी कारक से अधिक उत्तरदायी है।

विकास संस्थाओं में अत्यन्तरत अधिकांश ग्राम निवासी ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं एवं इसीलिये उन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। ग्राम मेलाओं को परिवार के विभिन्न सदस्यों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का विवरण तालिका संख्या 31 में दर्शाया गया है। इस आर्थिक सहायता में पिता वर्ग को 60% प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी गिनी है। इसके क्रम में जो न्यून प्रतिशत 11.2% रिश्तेदारों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का प्राप्त हुआ है यह इस बात को स्पष्ट करता है कि अधिकांशतः अल्प वर्गीय परिवार अपने बच्चों को शिक्षा देने का सतत प्रयास करते हैं और इसमें किसी भी प्रकार का आर्थिक उत्तरदायित्व

तालिका संख्या 29 उत्तर प्रदेश में आदू-कूद/बादू-दौना

के विषय में

क्रम संख्या	विषय	उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	योग	प्रतिशत	योग
1.	आदू-कूद	हाँ	4		1.6%	
		नहीं	246	250	98.4%	100%
2.	बादू-दौना	हाँ	9		3.6%	
		नहीं	241	250	96.4%	100%

तालिका संख्या 30 ग्राम सेवाओं का विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं के संबन्ध में विवरण

क्रम संख्या	घटनायें	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	बिल्कुल	23	9.2%
2.	स्वर्ण का प्रभाव	183	73.2%
3.	बैंकिंग साखी	19	7.6%
4.	अज्ञात	10	4%
5.	अन्य कोई	15	6%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 31 ग्राम सेवाओं की शिक्षा के लिये परिवार से विभिन्न सदस्यों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का विवरण

क्रम संख्या	व्यक्ति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उल्लेख
1.	पिता	200	80%	
2.	भाता	12	4.8%	
3.	रिश्तेदार	3	1.2%	
4.	स्वयं	6	2.4%	सम्पन्न परिवार
5.	चाचा	15	6%	
6.	अन्य	14	5.6%	
	योग	250	100%	

रिश्तेदारों से निर्भर नहीं करवाते हैं।

तालिका संख्या 32 में ग्राम मेलाओं द्वारा परिवार से प्राप्त मासिक आमदनी का विवरण दर्शाया गया है। इस वर्गीकरण में 42.8% प्रतिशत उत्तरदाता 200/-रु से 300/-रु के मध्य परिवार से प्राप्त करते हैं। 300/-रु से अधिक आमदनी प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत केवल 4.0% है। तालिका के द्वितीय भाग में 37.2% प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्हें 100/-रु से 200/-रु तक मासिक आमदनी प्राप्त होती है। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि 100/-रु से 300/-रु तक मासिक आमदनी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की अधिकता है।

ग्राम मेलाओं से प्राप्त जानकारी के आधार पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं का नियंत्रण तालिका संख्या 33 में प्रदर्शित किया गया है। इसका अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शिक्षण संस्थाओं का नियंत्रण व्यवस्थापन समितियों द्वारा किया जा रहा है। सरकारी नियंत्रण में प्राप्त शिक्षण संस्थाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत न्यून है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मेधावी सम्बन्धी ग्राम परिवारिकों के लिए व्यवस्थापन समितियों द्वारा नियंत्रित शिक्षण संस्थाएँ सुविधा वातावरण प्रदान करती हैं। इसके साथ सरकारी नियंत्रित शिक्षण संस्थाओं में ग्राम परिवारिकों के आधार कम प्रदान किये जाते हैं एवं शिक्षा के अन्य अधिक और दिखावापन है।

शैक्षणिक/प्रशासनिक नियंत्रण के सम्बन्ध में जो जानकारी ग्राम मेलाओं से एकत्रित की गई है उसको तालिका संख्या 34 में दर्शाया गया है। इस सम्बन्ध में सम्पूर्ण ग्राम मेलाओं के अनुसार

तालिका संख्या 32 ग्राम मेलाडी वासे परिवार से ग्राप्त

मासिक आमदनी का विवरण

क्रम संख्या	मासिक आमदनी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	50/-रु से 100/-रु	38	15.2%
2.	100/-रु से 200/-रु	93	37.2%
3.	200/-रु से 300/-रु	107	42.8%
4.	300/-रु से अधिक	12	4.8%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 33 विभिन्न संस्थाओं का विवरण

क्रम संख्या	विवरण	चीनी मेवाओं की संख्या	प्रतिशत
1.	व्यक्तिगत समितियां	235	94%
2.	सरकारी	15	6%
	योग	250	100%

तालिका संख्या 34 ग्राम सेवाओं का नाम - प्रशासनिक निर्णयन से संबन्धित

क्रम संख्या		उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	प्रशासनिक दृष्टिकोण									
		सैद्धान्तिक-प्रशासनिक योजनाओं में ग्रामों की लगाई अधिक है		संख्या से प्रशासनिक निर्णयन में ग्राम प्रतिनिधि होने से									
				सैद्धान्तिक रूप से सिद्धान्त आवेगी		व्यवस्था की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है		कोई संचार द्वारा नहीं स्थित होगी		संख्या अधिक-		अन्य कारण	
				उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	250	100%	6	2.4%	40	16%	-	-	28	11.2%	-	-
2.	नहीं	-	-	244	97.6%	210	84%	-	-	222	88.8%	-	-
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	-	-	250	100%	-	-

क्षेत्रीय/प्रशासनिक योजनाओं में छात्रों की सलाह उचित है।
शिक्षण स्तर एवं सेवा की व्यवस्था में प्राप्त उत्तरों से स्पष्ट होता है कि छात्रों को अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए। इस प्रतिनिधित्व से न तो शिक्षा के स्तर में गिरावट आयेगी और कोई अव्यवस्था भी उत्पन्न नहीं होगी। सम्पूर्ण तथ्यों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि छात्र समुदाय अपने प्रति होने वाले नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका चाहता है और यदि यह भूमिका उसे प्रदान नहीं होती है तो वह आन्दोलन या अन्य विनाशकारी कार्यों को अपनाता है। इस भूमिका का महत्व उत्प्रेरक एवं नियोजन भावना की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शिक्षण सेवा की प्रशासनिक योजनाओं में छात्र नेताओं ने अपनी जो रुचि दिखाई है उसका विवरण तालिका संख्या 35 में दर्शाया गया है। प्राप्त तथ्यों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्रशासनिक कार्यों, योजना निर्माण एवं छात्रों के हित में छात्र यूनियनों का योगदान महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत सामान्य अधिकारियों से सम्बन्धित जो जानकारी छात्रनेताओं से प्राप्त हुई है उसे तालिका संख्या 36 में दर्शाया गया है। इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि नौकरी करने के पक्ष में 52% प्रतिशत, विपक्ष में 48% प्रतिशत, व्यवसाय के पक्ष में 54.4% प्रतिशत, विपक्ष में 45.6% प्रतिशत, जबकि तटस्थ व्यवसायों के पक्ष में 3.2% प्रतिशत एवं विपक्ष में 96.8% प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अन्वीक्षित सम्बन्धी व्यवसाय के पक्ष एवं विपक्ष में प्राप्त प्रतिशत लगभग समान पाया है।

तालिका संख्या 35 प्रशासनिक दृष्टिकोण से छात्र नेताओं का योगदान

क्रम संख्या	उत्तर	शिक्षण संस्थाओं में छात्रों की राजनीतिक गतिविधियां					
		संस्था के प्रशासनिक कार्यों में विद्यार्थियों की प्राथमिकता		योजना बनाते समय अधिकारियों के साथ समन्वय		छात्रों के हित में सूचनाओं का योगदान	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	204	81.6%	165	66%	230	92%
2.	नहीं	46	18.4%	85	34%	20	8%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 36 छात्र नेताओं की भविष्य संबन्धित अभिलाषाओं का विवरण

क्रम संख्या	उत्तर	अभिलाषायें															
		व्यवसाय संबन्धी								विदेश संबन्धी							
		नौकरी		व्यवसाय		व्यापार		इन्जीनियर		नेता		अन्य		अन्य देश के लिये		निजी		पर्यटन के लिये		स्थाई निवास के लिये	
		उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत
1.	छात्र	130	52%	136	54.4%	0	54.2%	127	50.8%	25	10%	"	"	125	50%	250	100%	67	26.8%		
2.	छात्रा	120	48%	114	45.6%	242	96.8%	123	49.2%	225	90%	"	"	125	50%	"	"	183	73.2%		
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	"	"	250	100%	250	100%	250	100%		

वर्तमान शोध कार्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण जानकारी उत्तरदाताओं से उनके कार्यालय में जाकर एकत्र की गई। इसमें 90% प्रतिशत उत्तरदाता सेवानिवृत्ति को व्यवसायिक दृष्टि से सीधे कोपरेशन का साधन नहीं मानते पाये गये, जबकि 10% प्रतिशत कुछ उत्तरदाता सेवानिवृत्ति को व्यवसायिक दृष्टि कोण से अपनाने को तैयार हैं। इस तथ्य की पुष्टि करने की दृष्टि से उत्तरदाताओं से विदेश पर्यटन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की गई है। इसका विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा के लिये विदेश जाने की अभिरुचि रखने वाले तथा न रखने वाले दोनों वर्गों का प्रतिशत लगभग समान प्राप्त हुआ है। अध्ययन पर्यटन के लिये जाने की अभिरुचि सम्पूर्ण 250 उत्तरदाताओं ने प्रकट की है। पर्यावरण को पूर्ण रूप से परिभाषित करने के लिये वर्तमान शोध विश्लेषण के उत्तरदाता तत्परता से तैयार नहीं हैं। इसका स्पष्टीकरण इस बात से मिलता है कि 73.2% प्रतिशत दोनों वर्गों ने विदेश में स्थाई निवास के प्रति अनिच्छा व्यक्त की है। मात्र 26.8% प्रतिशत का वर्ग इस दिशा में महत्वाकांक्षी परिलक्षित हुए हैं।

शिक्षा एवं प्रशासनिक नीति निर्धारण से सम्बन्धित विभिन्न वर्गों की जानकारी तालिका संख्या 37 में दर्शाई गई है। इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अधिकारियों द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों में शिक्षाविदों का एक बड़ा समूह साथ नहीं होता है। सम्पूर्ण तालिका पर एक दृष्टि पात करने से स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों का प्रतिशत स्थितियों के अनुरूप बदलता या प्रतीत होता है। उदाहरण स्पष्ट होता है कि इन उत्तरदाताओं

तालिका संख्या 37 उत्तरदाताओं के मत - विभिन्न कार्यक्रमों के संबंध में

क्रम संख्या	विभिन्न मत	उत्तर			
		हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	केवल अधिकारियों द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों में विद्यार्थी कम भाग लेता है	39	15.6%	211	84.4%
2.	विद्यार्थियों से स्वतः कार्यक्रम तय हो जाते हैं और अधिकारियों की अपेक्षा कर दी जाती है	218	87.2%	32	12.8%
3.	कार्यक्रम की योजना अधिकारी बनाते हैं एवं क्रियान्वयन विद्यार्थी एवं अधिकारियों की सहमति से होता है	124	49.6%	126	50.4%
4.	विद्यार्थियों को विचार प्रकट करने की छूट दी जाती है परन्तु अधिकारी निर्णय स्वतः लेते हैं और विद्यार्थियों की भावना को महत्व नहीं दिया जाता है	175	70%	75	30%
5.	विद्यार्थियों के विचारों को महत्व देते हुए अधिकारी योजना बनाते हैं	142	56.8%	108	43.2%

में पेशागत स्थायित्व की न्यूनता है ।

शिक्षण संस्था की सफलता की दृष्टि से महत्वपूर्ण कारकों का विश्लेषण तालिका संख्या 38 में दर्शाया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रचेताओं के मत में शिक्षण संस्थाओं में उचित पर्यावरण का अभाव है। इस सम्बन्ध में प्राप्त माँग का प्रतिशत, लगभग 1:3 है । निष्कर्ष स्पष्ट रूप से स्पष्ट करते हैं कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थायें रचनात्मक कम तथा व्यवसायिक अधिक है । इसमें सन्देह नहीं है कि छात्र चेताओं के अनुसार शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न वर्गों के प्रति असमानता अधिक व्याप्त है फिर भी सेवायोजी दृष्टि से महत्वपूर्ण 250 सर्वेक्षित छात्र चेताओं के विचारों को कम्य नहीं समझा जाता है और यह प्रतिशत सोचने के लिये बाध्य करता है कि शैक्षणिक एवं प्रशासनिक पहलुओं में सामन्जस्य होना चाहिये ।

शिक्षा का स्तर एवं छात्र चेतृत्व के उद्भव पर क्या प्रभाव पड़ता है, को वास्तविक रूप में मूल्यांकित करने की दृष्टि से यह आवश्यक था कि छात्रों के सामाजिक निर्माण में उपयोगी व्यक्तित्व के अवधारणा का विश्लेषण किया जाये । तत्सम्बन्धित किस पर एकत्र की गई सूचनाओं से स्पष्ट होता है कि 75.2% प्रतिशत छात्र चेताओं के अनुसार छात्रों का राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना व्यक्तित्व निर्माण में सहयोगी होता है । संस्था का विकास एवं रचनात्मक कार्य छात्रों के व्यक्तित्व के लिये समानुपातिक हैं । छात्रों किसी भी प्रकार की असमानता व्याप्त होने से शिक्षण संस्थाओं की सेवा पर प्रभाव पड़ता है तालिका 39 ।।

तालिका संख्या 38 ग्राम क्षेत्रों के सर्वे - शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था

क्रम संख्या	व्यवस्था	उत्तरदाताओं का मत				
		हाँ प्रतिशत		नहीं प्रतिशत		कुल प्रतिशत
1.	उचित शिक्षा का वातावरण	53	21.2%	197	78.8%	100%
2.	उचित अध्यापन विधि	58	23.2%	192	76.8%	100%
3.	रचनात्मक कार्य	55	22%	195	78%	100%
4.	पुस्तकालय की सुविधा	40	16%	210	84%	100%
5.	अन्य सुविधायें	48	19.2%	202	80.8%	100%

तालिका संख्या 39 ग्राम क्षेत्रों का मद्य - राजनीति से व्यक्तित्व में सहायता

क्रम संख्या	राजनैतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण में सहायता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	188	75.2%
2.	नहीं	62	24.8%
	योग	250	100%

५. निष्कर्ष :-

वर्तमान शिक्षा तथा प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों में बहुत अधिक अन्तर है । यह सही है कि वर्तमान शिक्षा पूर्ण रूप से अंग्रेजी शासकों का देन है और उनका उद्देश्य था भारतीयों को लिपिक बनाना । आज की शिक्षा पद्धति लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति पर आधारित है । परन्तु प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करना था । बालक जब गुरुकुल आश्रम में आता था तब पूर्ण रूप से घर के सारे क्रियाकलापों से दूर होकर शिक्षा में ही संलग्न हो जाता था । वहाँ शिक्षा के द्वारा जीवन की अलग उद्देश्य होता था । प्राचीन भारतीय व्यवस्था में आश्रम व्यवस्था का भी उद्देश्य प्रत्येक आश्रम में रहकर वहाँ के क्रिया कलाप पूरे करना और अगले आश्रम की तैयारी अर्थात ज्ञान प्राप्त करने का ही उद्देश्य था । मनुष्य का प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम था जिसमें वह शिक्षा ग्रहण करता था और अगले आने वाले जीवन की तैयारी का आश्रम था । परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण रूप से बदले हुये हैं । विद्यार्थी शिक्षा से ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहता अपितु अधिक से अधिक डिग्रीयाँ प्राप्त करके नौकरियों के योग्य बनना चाहता है । शिक्षा का उद्देश्य जीवन का चौमुखी विकास का एक एकीय विकास मात्र रह गया है ।

साथ ही साथ यह भी अनुभव किया जा रहा है कि अब से शिक्षण संस्थाओं में राजनीति का प्रवेश हुआ, शिक्षा के स्तर में गिरावट अधिक आने लगी है । वैसे शिक्षा में नेतृत्व की भावना का होना बुरा नहीं है, परन्तु शिक्षण संस्थाओं में राजनीतिक नेतृत्व की भावना आज की शिक्षा के स्तर में गिरावट पैदा कर रही है ।

वर्तमान अध्याय में प्राप्त सैद्धान्तिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों के विवरण से सुनिश्चित होता है कि मुक्तेश्वर क्षेत्र का ज्ञान को अपने

वर्धापरण में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं के प्रति जागरूक है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अंग्रेजों द्वारा अपने भोपी गयी है, स्पष्ट रूप से दोषपूर्ण व्यवस्था है । यह आवश्यक नहीं है कि भूतकाल में जो शिक्षा नीतियाँ निर्धारित की गई है वह आज के प्रत्येक समय में उपयोगी सिद्ध हों । परिवर्तन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया ने कालान्तर में विभिन्न कारकों पर तुलनात्मक प्रभाव डाला है । शिक्षा का क्षेत्र एक ऐसा व्यापक क्षेत्र है, जिसमें दिन-प्रतिदिन नये आविष्कारों का होना एक साधारण सी घटना मान ली गया है ।

इन आविष्कारों के कालान्तर सामाजिक गतिविधियाँ एवं वैयक्तिक रूप से व्यक्ति प्रभावित हुये बगैर नहीं रह सकते हैं ।

आधुनिक वर्धापरण में बेकार, परिवारी समस्या, तलाकी विवाह, एवं अन्य कई कारक व्यापक रूप से विद्यमान हैं । विश्व के किसी भी देश की शिक्षा संस्थाओं को उपर्युक्त कारकों से प्रभावित हुये बिना नहीं पाया जा सकता है । सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का विद्यार्थियों की शिक्षा में अनुचित प्रभाव पड़ता है । भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ मुखिया प्रधान परिवार हैं , शिक्षा स्थानीय तथा राजनैतिक दबावों से भी प्रभावित होती है । मुख्यतौरपर देश की शिक्षा संस्थाओं का नियंत्रण अधिकांश प्रतिशत में व्यक्तिगत संगठनों के द्वारा किया जाता है । यह तथ्य सर्वमान्य रूपेण निर्णयित हुआ है । अतः यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि विभिन्न स्थानीय व्यक्तियों के आपसी मतभेद, पद लोलुपता एवं अन्य अवांछनीय कारकों के कारण शिक्षा संस्थाओं में कुछ इस प्रकार की गतिविधियाँ होना चाहिये जिसे छात्र नेतृत्व की आवश्यकता पड़े और छात्र गतिविधियाँ जन्म लें । शिक्षा की कमियों में मुख्य दूषित कारण बताया की गया है । आज प्राचीन देशों की

की प्रारम्भिक कक्षाओं में यह प्रथा इतनी तीव्र हो चुकी है कि इसका समाप्त करना असम्भव सा प्रतीत हो रहा है। विद्यालयों के भान्नसटल पर इस प्रथा से विपरीत प्रभाव प्रारम्भ से ही पड़ना शुरू हो जाता है। यह वह अवस्था है, जब विद्यार्थी एक क्षेत्रीय व स्थानीय राजनीति से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। धीरे-धीरे इसी प्रवृत्ति के कारण छात्रों का स्थानीय एवं आपस में तनाव व सीधे शिक्षण संस्थाओं में बन्द हो जाते हैं। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं छोटे-छोटे अन्य प्रकार के समूहों की प्रवृत्ति में अन्तर आने से कुन्टेलाइज़ेशन की शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी वर्ग की मनोवृत्ति पर सुविधा प्रभाव वैज्ञानिक अध्ययन से परिलक्षित होता है।

वास्तविक रूप से सोचने वाले प्रत्येक नागरिक के मन में अपने बच्चों को शिक्षित करने की प्रवृत्ति में विकास हुआ है। वैज्ञानिक समय में शिक्षा ने अपना उचित स्थान समाज में बनालिया है। प्राचीन समय में व्यक्तियों का ज्ञान सीमित था। मानव सभ्यता का विकास इतना नहीं हुआ था, जितना वैज्ञानिक समय में उपलब्ध है। प्रारम्भिक शिक्षा संस्कार व्यक्ति को परिवार के माध्यम से ही प्राप्त होता है। ज्ञान की खोज में व्यक्ति को अपनी पारिवारिक सीमाओं से बाहर नहीं जाना पड़ता था। सभ्यता के विकास के साथ-साथ यह आवश्यक सा प्रतीत होने लगा कि समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को संस्कारों से अलग कराया जाये एवं औपचारिक शिक्षण संस्थाओं की आवश्यकता प्रतीत हुई। मानव ज्ञान में वृद्धि के फलस्वरूप समाज सरल से जटिल प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हुआ।

मानव एवं समाज एक दूसरे के परिपूरक हैं । यह एक सिक्के के दो पहलू के समान है एवं इन्हें विलग किया जाना नितान्त असंभव है । मानव समाज में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति एक महत्वपूर्ण इकाई होता है । इस इकाई की उचित शिक्षा से मुक्त नहीं किया जा सकता है । इसके बावजूद समाज का व्यक्तिगत अस्तित्व सम्भव नहीं है । इस प्रकार समाज सुधार को व्यक्ति सुधार से ही सम्भव बनाया जा सकता है और यह व्यक्ति सुधार शिक्षा नीतियों में आमूल परिवर्तनों से ही सम्भव है। समाज में शिक्षण संस्थायें सबसे आवश्यक अंग हैं । इन शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थी वर्ग को अपना बौद्धिक विकास करने का उचित अवसर मिलता है । प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति का यहाँ उल्लेख करना पुनः आवश्यक होगा कि विद्यार्थी ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था में घर परिवार से दूर रह कर गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त किया करते थे ।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विभिन्न स्तरों पर सुधारों की बहुत आवश्यकता है । इसके लिये कई ऐतिहासिक कारण उत्तरदायी हैं । वर्तमान समय में निरक्षता एवं से उच्च शिक्षा के व्यापक तौर से देशों में एक भ्रान्ति पैदा कर दी है । भारत वर्ष को शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र कहा जाता रहा है, जो इस भ्रान्ति का उचित प्रभाव देखने को मिलता है । मुल्तेकाल क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं से सम्बन्धित वर्तमान शोध अध्ययन के व्यापक को उपलब्ध तथ्य सामने आये हैं उनसे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रति इस क्षेत्र के नागरिकों की जागरूकता में वृद्धि हुई है । राष्ट्रीय हित में इस प्रकार की शिक्षा का उचित नीति-निर्धारण होना चाहिये जिससे कि छात्र सहजता उचित रूप से ज्ञान अर्जन करने के पश्चात उपयोगी कार्य कर सकें । शिक्षण

अध्याय ५

छात्र नेतृत्व का राजनीतिक विवरण

1. सामान्य विवरण
2. नेतृत्व के प्रकार
3. राजनीतिक गतिविधियाँ
4. विश्लेषण

1. सामान्य विवरण :-

अंतिम अध्याय में हम नेताओं की राजनीतिक गतिविधियों के बारे में प्राप्त जानकारी का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक व्यवस्था में अन्तर्गत राजनीतिक क्रियाशीलता व्यक्ति में अन्य सामाजिक क्रियाओं के समक्ष विकसित होती है। व्यवस्था आचरण एवं उसके नियन्त्रण हेतु सामाजिक नियन्त्रण की व्यवस्थाएँ प्रत्येक समाज में सभ्यता के विकास के साथ-साथ विकसित होती रही। स्वेच्छा से प्रारम्भ करने वाले आदिम समाजों में संगठित नियन्त्रण की व्यवस्था विद्यमान नहीं थी। एक सार्वभौम सत्ता की तरह व्यक्तियों ने स्वतः नियन्त्रण की प्रक्रिया अपनाई होगी एवं इस प्रक्रिया के फलस्वरूप सामाजिक नियन्त्रण के प्रतिमानों का उद्भव सैकड़ों हो सका। कई हजार वर्षों के पश्चात संस्कृति एवं सभ्यता सामाजिक गतिशीलता के फलस्वरूप वर्तमान रूप प्राप्त कर सके। विश्व के किसी भी देश में इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि व्यक्ति का राजनीतिक उद्भव समाज के अन्तर्गत कहीं होता हो। सैद्धान्तिक रूप से इस दिशा में कई समाज वैज्ञानिकों प्रयास किये गये। इन प्रयासों के फलस्वरूप समाज वैज्ञानिक कुछ सीमा तक यह निर्धारित करने में सफल हुये हैं कि सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत राजनीतिक गतिविधियों की आवश्यकता क्यों पड़ती है।

मानव अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सामाजिक प्राणी कहा जाता है। प्रारम्भिक आवश्यकताएँ जैसे भोजन की व्यवस्था, सुरक्षा एवं विकास के लिये उचित पर्यावरण की प्रमुख है। इन आवश्यकताओं में से किसी एक कमी का सृजन होने पर व्यक्ति के मन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जब असन्तोष की सीमा पहुँचती है तो जैविकीय एवं सामाजिक पर्यावरण व्यवस्था गतिविधियों के फलस्वरूप व्यक्ति उग्र रूप धारण करता है। इस अवस्था में सामान्यतः व्यक्ति अपनी वास्तविक मनोदशा को खो देता है।

किसी भी असामाजिक या विध्वंसकारी कार्य को सुनते हैं उनको बदले की भावना के फलस्वरूप व्यक्ति करने की सोचता है । सामाजिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक नियन्त्रण के तौर-तरीके मूल्य परिवर्तित होते रहे हैं ।

जाति प्रथा के उद्भव से सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया ने निश्चित रूप से समाज व्यवस्था में राजनैतिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान की है । इस व्यवस्था के फलस्वरूप उच्च वर्गीय व्यक्तियों ने निम्न वर्गीय व्यक्तियों का शोषण प्रारम्भ किया और इसी शोषण की पृष्ठ भूमि में विभिन्न उग्रवादी गतिविधियों की शुरुआत हुई । किसी घटना से प्रेरित होकर व्यक्ति स्वतः को तैयार करने का प्रयास करता है एवं इसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर स्पष्ट रूप से पड़ता है । समाज के अन्य सदस्य इस प्रकार के व्यक्तित्व को भली-भाँति अवलोकित करते हैं ।

सामाजिक व्यवस्था का व्यक्तित्व निर्माण में निश्चित रूप से सक्रिय योगदान होता है । इस दिशा में स्थिति एवं कार्यों का स्पष्ट मूल्यांकन किया जाना चाहिये । स्थिति व्यक्ति के लिये वह स्तर होती है जो वह जन्म, विवाह, अन्य, शारीरिक अवस्थायें एवं अपने सामाजिक दायित्वों से प्राप्त करता है । इसके सम्मुख कार्य वह व्यवस्था है जो व्यक्ति किसी स्थिति विशेष में कार्यान्वित करता है । कुप्पाया समाज-शास्त्रीय अभिलेखों में 111 प्रदत्त स्थिति एवं 82 अर्जित स्थिति की विवेचना उपलब्ध है । एक प्रदत्त व्यवहार स्थाई प्रतिमान को परिभाषित करता है, तथा आन्तरिक क्रियाँ से जो कि क्रियात्मक अनुक्रमों को स्थान देते हैं, नियन्त्रित होता है । व्यवहार का यह प्रतिमान अनेक व्यक्तित्व

संबन्धी सूचनाओं का विश्लेषण किया जाता है, जो कि एक व्यक्ति के आन्तरिक हितों की स्थाई प्रतिक्रिया को चित्रित करते हुये होते हैं। किन्तु व्यवहार के गुणों को जो कि आन्तरिक हितों की अनुक्रियाओं को परावर्तित करते हैं, व्यवहार के उन गुणों से जो कि बाह्य आवश्यकताओं की स्थाई अनुक्रियाओं को परावर्तित करते हैं, से किस प्रकार भिन्न किया जा सकता है। बाद की विशेषताएँ स्पष्ट अर्थों में व्यक्तित्व की विशेषतायें नहीं हैं, अपितु सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक प्रकारों के प्रभावों के लिये व्यक्तिगत अनुकूलन के ढंग हैं। मर्फी 1949 । उदाहरण के तौर पर जब एक व्यक्ति विशिष्ट बाह्य आवश्यकताओं की अनुक्रिया में कुछ भूमिकाओं अथवा अन्य प्रभावों से पीछे हटता है अथवा अपने आप को उनके अनुकूल बनाता है, तो वह कम या अधिक स्थाई अनुक्रियाओं के प्रकारों को व्यक्त करता है जो कि उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं पर आवश्यक रूप से व्यापक नहीं है।

यहाँ पर यह निहित अनुमान है कि सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक प्रकार व्यक्तियों पर प्रभाव डालने के लिये कार्य करते हैं, तथा जो व्यवहार के एक या दूसरे वैकल्पिक ढंग को प्रकट करते हैं। व्यक्तिगत अनुकूलन के वैसे प्रकार अक्सर अस्पष्ट रूप से व्यक्तित्व की विशेषताओं के रूप में पहचाने जाते हैं। व्यक्तित्व की विशेषतायें अनुकूलन के प्रकारों से अधिक भिन्नता नहीं रखती है।

सामाजिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत किसी भी क्षेत्र में अभिविन्यास होने से अलग रहने वाले सदस्य इन अभिविन्यासों का विरोध करते हैं। इस विरोध को प्रदर्शित करने के लिये विभिन्न प्रकार के छोटे-छोटे संगठन बनाये जाते हैं। स्थानीय रूप पर यह छोटे संगठन व्यापक गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं। इन संगठनों में

मार्ग निर्देशन एवं क्रियान्वयन की दृष्टि से सम्पूर्ण उत्तर दायित्व एक व्यक्ति पर सौंपा जाता है । यह व्यक्ति संगठन के अन्य सदस्यों से परामर्श कर आवश्यक अग्रिम कार्यवाही हेतु तत्पर रहता है । वास्तविक रूप से यही नेतृत्व की सीमा है ।

2. नेतृत्व के प्रकार :-

समाज-शास्त्रीय कारकों की व्यापक सीमा होने के कारण व्याख्याएं एवं तात्पर्य विभिन्न प्रकार के होते हैं । समाज- मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में इस दृष्टिकोण से अनेकों प्रयास हुये हैं और यह निर्धारित करने की कोशिश की गई है कि व्यक्ति में नेतृत्व सम्बन्धी गुण किस मुख्य सामाजिक कारक पर निर्भर करता है जैसेकि एर्स मिल 1940, हेनसेल 1953, न्यूकोम्ब 1950, मुर्फी 1954, होमेन्स 1950, लाजेन्फल्ड एवं बरलसन 1949, किम्बाल एवं पार्सन्स 1954, गोर्डन 1920, कोन्डे 1915, रिग्ले 1926, बार्नेस 1928, नाके 1930, बोगार्डस 1934।

किम्बाल एवं पार्सन्स ने नेतृत्व को किस प्रकार वर्गीकृत किया है उसका प्रारूप तालिका संख्या 40 में दर्शाया गया है । इस वर्गीकरण में विभिन्न समाजशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित गुणों को भी उचित स्थान दिया गया है ।

3. राजनैतिक गतिविधियां :-

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विधान सभाओं से जो सात प्रतिनिधि वर्तमान लोक सभा में सैद्धान्तिक किये गये हैं उनके द्वारा विभिन्न प्रकार की राजनैतिक गतिविधियों का विवरण वर्तमान अध्याय का मुख्य विषय है । इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि सात क्षेत्रों की सामान्य अभिरुचि किसी राजनैतिक गतिविधियां

तालिका संख्या 40 मैत्रुत्व का वर्गीकरण *

क्रम संख्या	मैत्रुत्व के प्रकार	समाज वैज्ञानिकों का विवरण	
1.	इन्ट्रोवर्ट/अम्बीवर्टिव	गोपिन	1920
2.	कम्पैनी/एक्सपेन्ट्स/पिक्चेन्टेटिवा	डानमे	1945
3.	कायनिटिव/अम्बीवर्टिव	रिवस	1926
4.	कन्फ्लिक्ट/कोर्स आफ इन्टेक्ट	वाकेर	1928
5.	फिक्सिव/इन्ट्रोवर्ट	नार्के	1930
6.	ओर्टिव/डायनामिक	"	"
7.	इम्प्रेसी/एक्सप्रेसी	"	"
8.	एडेप्टिव-डायनामिक/डायनामिक-इन्फ्लुएन्सिव	"	"
9.	पार्सेटिव/डाइरेक्ट	"	"
10.	कनवर्ट/स्पेसिफिकाइन्ड	"	"
11.	टेम्पोरेरी/परमानेन्ट	"	"
12.	डाग्निक्स/प्रोग्नोसिस	"	"
13.	प्रोजेक्शन/आब्जेक्ट	"	"
14.	पर्सेप्ट/इम्प्रेशन	"	"
15.	डायरेक्ट/इनडायरेक्ट	बोगार्डस	1934
16.	सोशल/सेक्स	बोगार्डस	1934
17.	ओटोमेटिव/रेटरनेशिस्टव/टेलीलेक्ट	"	"
18.	इन्ट्रोवर्ट/विलोवर	वर्नन	1934
19.	स्लाव ड्राइव/मास सीकर/पर्सनेलिटेरियन	वर्नन	1934

* सीजर सिम, साइकोलोजी एण्ड आर्गेनाइजेशन सिद्धेन्थियरी एण्ड प्रैक्टिस 1960.

उत्प्रेरित होती है उनका विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। मुख्य रूप से छात्र गति विधियों को शिक्षण संस्था एवं प्रशासनिक कार्यवाहियों के सापेक्ष मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त नियन्त्रण के संदर्भ में छात्र नेताओं की आवश्यकता का मूल्यांकन वर्तमान अध्याय का प्रमुख उद्देश्य है।

वर्तमान सर्वेक्षण में छात्र यूनियनों के विभिन्न पदों पर आसीन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 0.8% से 3.2% तक रहा है। इस सर्वेक्षण में 8% छात्र नेता को पिरोयी छात्र के रूप में शामिल किया गया है। शोध अध्ययन की सुविधा के लिये विभिन्न योग्य छात्रों को किसी अवि छात्र यूनियनों की क्रिया विधि में सम्बद्धता से भी उन्हें भी समायोजित किया गया है एवं उनका प्रतिशत 72.4% है (तालिका सं० 41)।

छात्र नेताओं से प्राप्त जानकारी से स्पष्ट होता है कि छात्र संस्थाओं में व्याप्त अनियमितताओं से प्रेरित होकर 76.4% नेता छात्र आन्दोलनों के पक्ष में हैं। इसके विपरीत केवल 23.6% प्रतिशत छात्र नेता छात्र आन्दोलनों के पक्ष में नहीं है और यह प्रतिशत उन छात्र नेताओं का हो सकता है जो राजनैतिक दृष्टि से अधिक महत्वाकांक्षी नहीं हैं एवं सर्वेक्षण की अवधि में शारीरिक रोगग्रस्त हो जाने के कारण छात्रों के नेतृत्व में समायोजित कर लिए गये हों। (तालिका सं० 42)

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण वर्तमान शोध प्रबन्ध से स्पष्ट होता है कि छात्र वर्ग की गतिविधियों के लिए राजनैतिक दल सदैव जिम्मेदार नहीं होते हैं। इस सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि 92.8% प्रतिशत उत्तरदाताओं

तालिका संख्या 41 खेल खेलाड़ियों का खेल समिति के पदों के अनुसार वर्गीकरण

क्रम संख्या	पद	उत्तर-दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	अध्यक्ष	5	2%
2.	उपाध्यक्ष	5	2%
3.	सचिव	7	2.8%
4.	सहसचिव	3	1.2%
5.	सांस्कृतिक सचिव	6	2.4%
6.	सहसांस्कृतिक सचिव	5	2%
7.	क्रीड़ा सचिव	8	3.2%
8.	सह क्रीड़ा सचिव	3	1.2%
9.	कोषाध्यक्ष	5	2%
10.	सह कोषाध्यक्ष	2	0.8%
11.	खेल विरोधी दल	20	8%
12.	अन्य सहयोगी खेल खेल	181	72.4%
	योग	250	100%

तालिका संख्या ५२ छात्र नेताओं के या - छात्र आन्दोलनों से सम्बन्धित

क्रम संख्या	छात्र आन्दोलनों के पक्ष में	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	191	76.4%
2.	नहीं	59	23.6%
	योग	250	100%

के अनुसार राजनीति में भाग लेना चाहिए एवं 7.2% प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार छात्रों को सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए तालिका संख्या 43। यह प्रतिशत उन छात्रों का हो सकता है जो वर्तमान समय में नेतृत्व का गुण रखने के कारण समायोजित हो गये हों फिर भी भविष्य के प्रति जागरूक होने के कारण उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया हो। इस विश्लेषण में 86% प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार राजनीति में भाग लेने से रोजगार प्राप्त करने में सुविधा होती है। व्यवसायिक क्षेत्रों में बढ़ती हुयी प्रतिस्पर्धा में अपने को अग्रणी स्थान दिलाने के लिये छात्रों के अनुसार सक्रिय राजनीति उपयोगी है।(चित्र सं० 9)

वोट देने के संदर्भ में विभिन्न कारणों से लोकप्रिय छात्र नेताओं से प्राप्त आँकड़ों का विवरण तालिका संख्या 44 में दर्शाया गया है। इस तालिका का मूल्यांकन करने से स्पष्ट होता है कि 46.0% प्रतिशत उत्तरदाता उम्मीदवार की योग्यता को प्रमुख मानते हैं। जाति एवं सम्प्रदाय की भावना पर आधारित उत्तरदाताओं का प्रतिशत लगभग समान प्राप्त हुआ है 10.4%, 11.2%। राजनीतिक दलों की प्रेरणा लगभग 24.0% प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतों से स्पष्ट होती है। प्रदत्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि युनैटेड फ्रन्ट जैसे की विभाजित संस्थाओं का छात्र की राष्ट्रीय राजनैतिक गतिविधियों के प्रति तथा है और उनमें स्थानीय या जातीय जैसी संकुचित राजनैतिक विचार धारा नहीं है।(चित्र सं० 10)

छात्र नेताओं से महिलाओं द्वारा सक्रिय राजनीति में भाग लेने के लिए किये गये प्रश्नों का विवरण तालिका संख्या 45 में दर्शाया गया है। इस सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं से निष्कर्ष निकलता है कि

तालिका संख्या 45 ग्राम क्षेत्रों के व्या० - सक्रिय राजनीति में योगदान

क्रम संख्या	विवरण	राजनीति में आप लेना चाहिये			राजनीति में आप नहीं लेना चाहिये			कुल योग
		रोजगार प्राप्त करने में तुच्छिया	रोजगार प्राप्त करने में उपयोगी नहीं	कुल	रोजगार प्राप्त करने में तुच्छिया	रोजगार प्राप्त करने में उपयोगी नहीं	कुल	
1.	उत्तरदाताओं की संख्या	215	17	232	-	18	18	250
2.	प्रतिशत	86%	6.8%	92.8%	-	7.2%	7.2%	100%

चित्र सं. 9. ज्ञात जातियों का सक्रिय राजनीति में योगदान

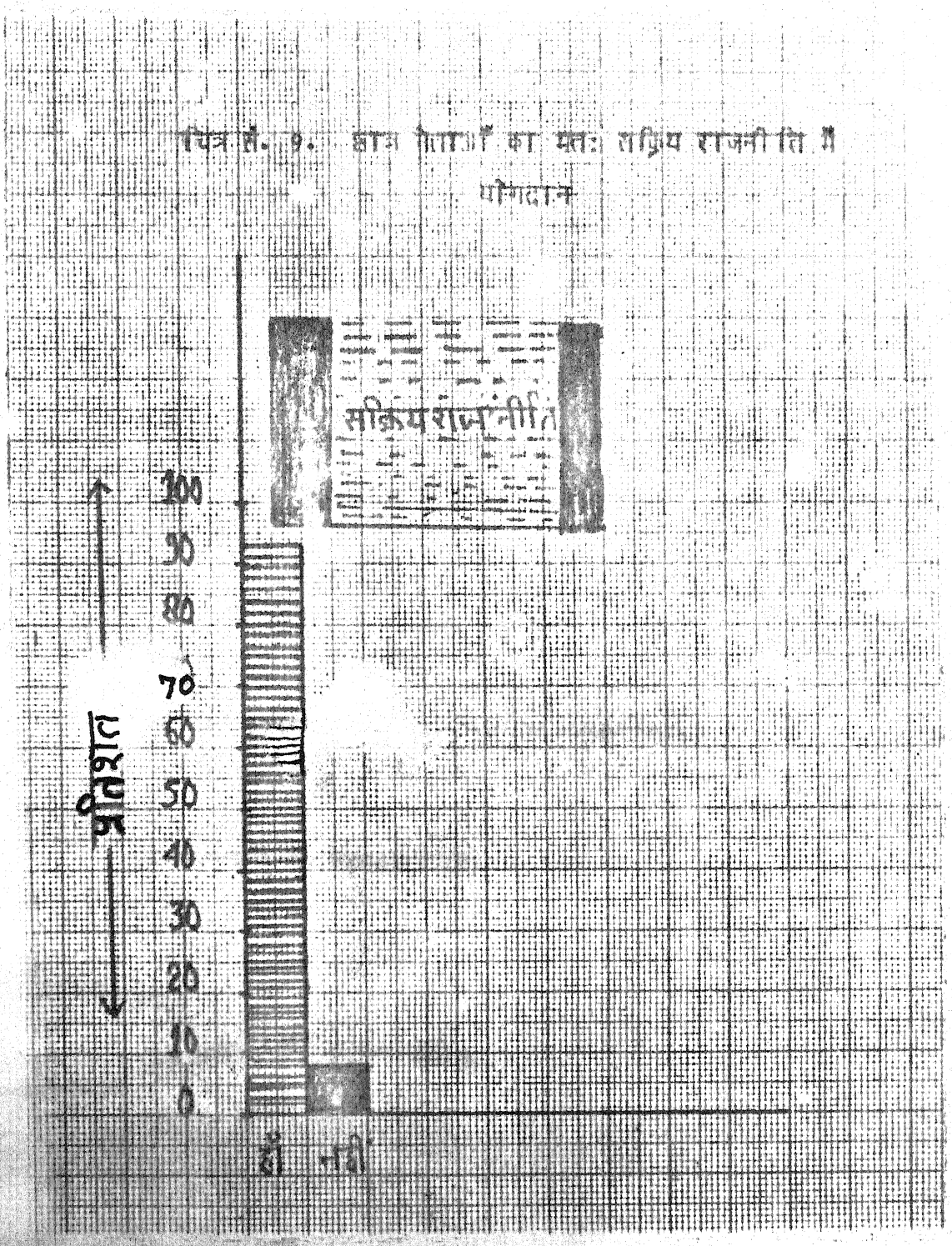

तालिका संख्या 44 ग्राम मेलाओं से मत - वोट देने के संबन्धित

क्रम संख्या	वोट देने का कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	समुदाय	28	11.2%
2.	जाति	26	10.4%
3.	उम्मीदवार की योग्यता	117	46.8%
4.	राजनीतिक दल	62	24.8%
5.	अन्य कोई	17	6.8%
	योग	250	100%

चित्र सं. 10. छात्र नेता * का मतः वोट देने से संबन्धित

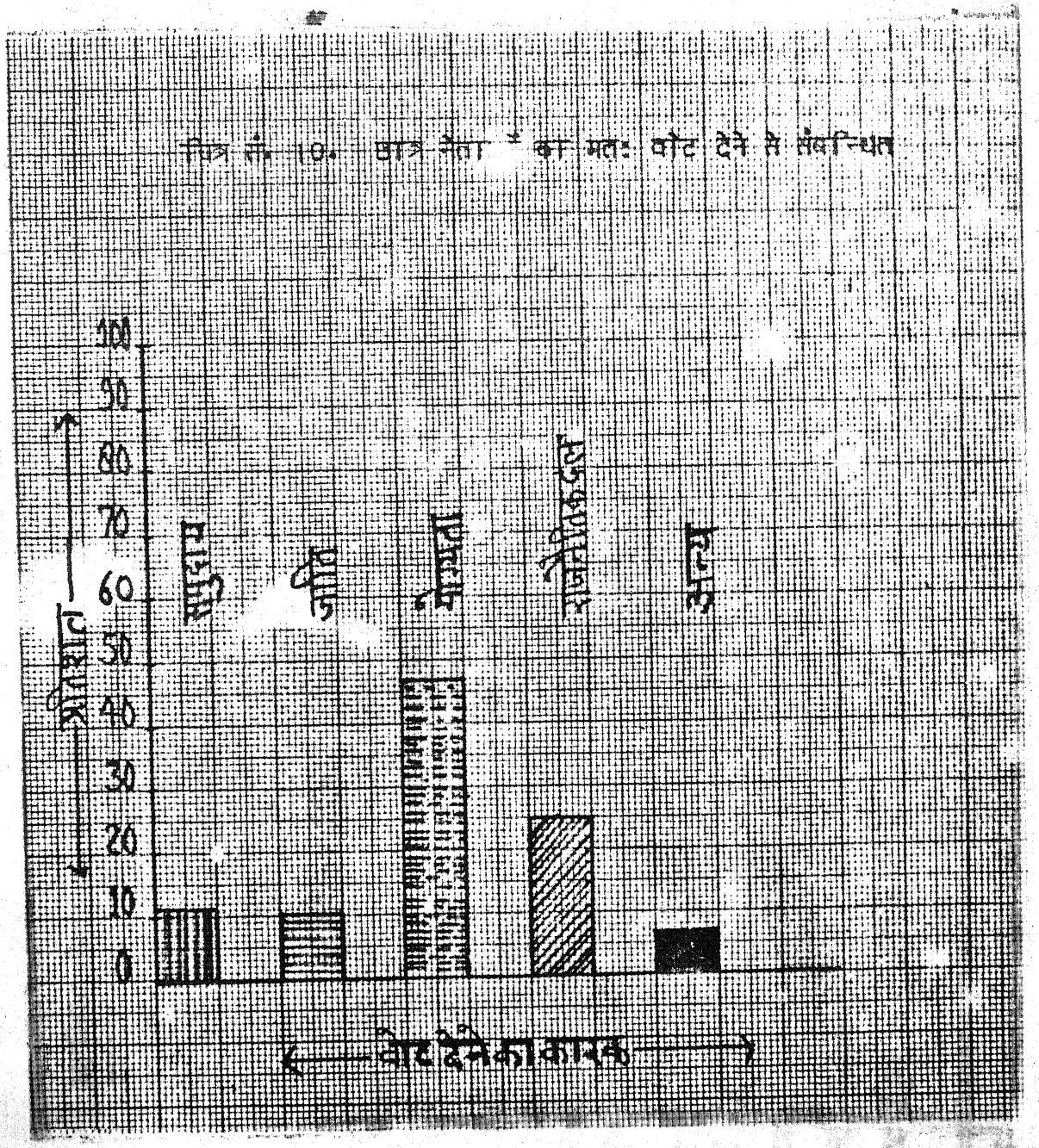

तालिका संख्या 45 ग्राम सेवाओं से या - महिलाओं के राजनीति में योगदान एवं ग्रहण के लिये निर्धारित योग्यता का विवरण

क्र० सं०	उत्तरदाता निर्धारित करने के लिये आधार	महिलाओं को राजनीति में भाग लेना चाहिये		महिलाओं को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिये	
		महिलाओं को वोट देने का अधिकार होना चाहिये	महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिये	महिलाओं को वोट देने का अधिकार होना चाहिये	महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिये
1.	संवैधानिक अधिकार	83	-	56	31
2.	शिक्षित	7	-	5	
3.	कार्य क्षमता	10	-	14	
4.	इण्टर	14	-	9	
5.	ग्रेजुएट	13	-	4	
6.	पोस्ट ग्रेजुएट	7	-	1	
	योग	134	-	116	
	प्रतिशत	53.6%		46.4%	

53.6% प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं को सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। महिलाओं को सक्रिय राजनीति में भाग लेने वाली श्रेणी में उत्तरदाताओं के अनुसार वोट देने का अधिकार क्रमशः वयस्क मताधिकार, बी.ए., मैट्रिक, हाई स्कूल तथा पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा आधारों पर आधारित होना चाहिए। दूसरी ओर महिलाओं का सक्रिय राजनीति में भाग न लेने के पक्ष में भी उत्तरदाताओं ने वयस्क मताधिकार आधार पर आधारित महिलाओं को वोट देने के अधिकार को प्रस्तावित किया है। सम्पूर्ण तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश भाग लेना अपने समक्ष आधार वर्ग को भी देखना चाहते हैं।

सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में विद्यार्थियों के लिये शिक्षकों का अधिक योगदान रहता है। इस योगदान का मूल्यांकन करने की दृष्टि से जो तथ्य एकत्रित किये गये हैं उनका विवरण तालिका संख्या 46 में दर्शाया गया है। तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि भाग लेना शिक्षा एवं सामाजिक समस्याओं को अपने अध्यापकों से अधिकांश प्रतिशत में चर्चा करते हैं। जबकि महिला व राजनीतिक समस्याओं की चर्चा के प्रति प्राप्त प्रतिशत नकारात्मक है। इन वर्गों में जो प्रतिशत प्राप्त स्वीकारात्मक हुआ है उससे स्पष्ट होता है कि ये भाग लेना अध्यापकों के अधिक नजदीक हैं। अन्य विषयों पर छात्रों एवं अध्यापकों के मध्य कुछ कम से चर्चा होती है।

भाग लेनाओं से प्राप्त राजनीतिक जानकारी के तथ्यों का विवरण तालिका संख्या 47 में दर्शाया गया है। इस तालिका का

तालिका संख्या 46 ग्रामीण क्षेत्रों के युवा - शिक्षकों से विभिन्न समस्याओं के बारे में क्या

क्रम संख्या	उत्तर	समस्याएँ									
		शिक्षा		आर्थिक		भविष्य		राजनीति		अन्य	
		उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	213	85.2%	153	61.2%	45	18%	53	21.2%	171	68.4%
2.	नहीं	37	14.8%	97	38.8%	205	82%	197	78.8%	79	31.6%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 47 उत्तर भारत के मत - प्रवासियों के प्रति - प्रवासियों दृष्टि के अनुसार राजनीतिक दल

क्रम संख्या	राजनीतिक दल	प्रवासियों दृष्टिकोण के संबंध		योग
		सकारात्मक	नकारात्मक	
1.	कांग्रेस	36	17	53
2.	भारतीय जनतापार्टी	4	28	32
3.	सम्मिलित पार्टी	20	58	78
4.	लेफ्ट फिसार मोर्चा	20	1	21
5.	अन्य दल	46	20	66
	योग	126	124	250
	प्रतिशत	50.4%	49.6%	100%

विश्लेषण करने से विदित होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र का ग्राम सभी राजनीतिक विचारधारा के लिए आकर्षक प्रतीत होता है। विभिन्न राजनीतिक दलों में किये गये सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि सभी विचार मंच दल का उद्भव इस क्षेत्र में हो चुका है।

सामान्य गतिविधियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण सूचनाओं का संकलन तालिका संख्या 49 में किया गया है इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि 77.6% प्रतिशत ग्राम सेवा क्षेत्र नहीं गये हैं। केवल 22.4% प्रतिशत ग्राम सेवाओं ने क्षेत्र जाने के बारे में स्वीकृति प्रदान की है। इससे यह परिलक्षित होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में पिछले 5 वर्षों में कोई ग्राम आन्दोलन नहीं हुआ है जिसमें ग्राम सेवाओं के बड़े समूह के विरुद्ध कोई ठोस प्रतिरोधक कार्यवाही की गयी हो। संस्थाओं में ग्राम सेवाओं के प्रभावों का मूल्यांकन भी इस तालिका से स्पष्ट प्रदर्शित होता है। कोई भी ग्राम सेवा यह मानने के लिये तैयार नहीं है कि शिक्षण संस्था विकास में ग्राम सेवाओं का कोई प्रभाव नहीं है। अधिकांश उत्तरदाताओं के मत में ग्राम सेवाओं का प्रभाव प्रत्येक शिक्षण संस्था में व्याप्त है। प्रस्तुत तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों में ग्राम सेवाओं की भिन्नता के अनुरूप कुछ विभिन्नता भी प्रतीत होती है। इसका जिलेवार विवरण तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

ग्राम सेवाओं की विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों के बारे में एकत्रित की गयी सम्पूर्ण जानकारी का विश्लेषण तालिका संख्या 49 में प्रदर्शित किया गया है। संस्थागत अभियन्ताओं के फलस्वरूप 92% प्रतिशत ग्राम सेवा शिक्षण संस्था की राजनीति में सक्रियता नहीं लेते हैं।

तालिका 48 छात्र सेवाओं के प्रति - सामान्य गतिविधियों से सम्बन्धित

क्रम संख्या	उत्तर	छात्र आन्दोलन में क्या की गई है ?		विभिन्न विचार							
		उत्तर दाताओं की सं.	प्रतिशत	कोई नहीं		कुछ सीमा तक		सन्तोषजनक		विशेष		अत्यधिक	
				उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	56	22.4%	-	-	202	80.8%	215	86%	210	84%	200	80%
2.	नहीं	194	77.6%	250	100%	48	19.2%	35	14%	40	16%	50	20%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%

तालिका संख्या 49 छात्र नेताओं के मत - राजनीतिक गतिविधियों से संबन्धित

क्रम संख्या	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	राजनीतिक गतिविधियाँ											
			संख्या की राजनीति में सक्रिय भाग		वर्तमान छात्र नेतृत्व के बारे क्या सोचते हैं		परिवार के सदस्यों से पर्याप्त डरते हैं		राजनीतिक भावना					
			विकास में योगदान		दहेज प्रथा को दूर करने में सहायक		जाति प्रथा की बुराईयों को दूर करने में सहायक		पिछड़ीजाति को ऊपर उठाने में सहायक		बड़ों की भावना		विद्यार्थियों का संख्या की राजनीति में भाग	
			उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रति शत
1.	हाँ	230	92%	218	87.2%	180	72%	215	85.2%	219	87.6%	166	66.4%	201	80.4%	245	98%
2.	नहीं	20	8%	32	12.8%	70	28%	37	14.8%	31	12.4%	84	33.6%	49	19.6%	5	2%
	योग	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%	250	100%		

की राजनीति
याह-ताप एवं
लेख से स्पष्ट
काल, जाति
दोष प्रथा को
सरदाता दाय-
र्यों करते है,
ों से वर्ग नहीं
रों से आने वाले
ये है उन्हें उचित
ह तालिका का
उत्तरदाताओं के
चाहिए।
कि छात्र स्तर
ो क्रियां कलापों

रूप प्रयास है कि
उत्तरदायी है।
छात्र संख्या की
व्यक्तिगत
ों वाले छात्र,
र होते है।
के संख्या से
छात्र राजनीति

इससे संकेत प्राप्त होता है कि ग्राम सेवक शिक्षण संस्था की राजनीति में विभिन्न रूप से भाग नहीं लेते हैं। व्यक्तित्व, दृष्टिकोण एवं संस्कार की दृष्टि से महत्वपूर्ण विभिन्न प्रश्नों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्राम सेवक के द्वारा प्रथमतः शिक्षा का विकास, जाति प्रथा की बुराइयाँ, पिछड़ी जातियों की समस्यायें एवं दहेज प्रथा की बुराइयों का निदान सम्भव है। 66.4% प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक गतिविधियों के बारे में परिवार के सदस्यों से चर्चा करते हैं, जबकि 33.6% प्रतिशत उत्तरदाता परिवार के सदस्यों से चर्चा नहीं करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न परिवारों से आने वाले ग्राम प्रतिनिधि जो वर्तमान सत्रों में समायोजित किये गये हैं उन्हें उचित पारिवारिक राजनैतिक संरक्षण प्राप्त है। इसकी पुष्टि तालिका का अवलोकन करने से भी होती है क्योंकि 80.4% प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार किसी संगोष्ठ पर बड़ी ही कार्यवाही होना चाहिए। तालिका के विस्तृत विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्राम स्तर वाले मिलें की सदस्य, यह ग्राम सेवा विभिन्न बड़ी की क्रिया कलापों में भेद होंगे।

५. <u>निष्कर्ष</u> :-

वर्तमान अध्ययन इस आधार से यह प्रमाणित है कि मूलतः ग्राम सेवक के लिए कौन से सामाजिक कारक उत्तरदायी है। इन कारकों के अल्पकालीन या दीर्घकालीन होने से शिक्षण संस्था की शिक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। व्यक्तिगत भेदकों से विभिन्न जाति, आर्थिक स्तर एवं संस्कारों वाले ग्राम, स्थानीय शिक्षण संस्थाओं में प्रतिनिधित्व की ओर अग्रसर होते हैं। इन भेदकों का प्रभाव किस समय से होता है यह उनके संस्था में प्रवेश का समय है। यदि शिक्षण संस्था में पूर्व से ही ग्राम राजनीतिक

गतिविधियाँ तीव्र हैं तो नवागन्तुक छात्र को राजनीतिक दिशा में प्रेरित करने के लिये उपयुक्त आलावरण प्रदान करती हैं। शिक्षण संस्था में कार्यरत प्राचार्य एवं प्राध्यापक छात्र गतिविधियों के लिये सदा वाध्यम बनते हैं।

वर्तमान तीय अध्याय में सम्पूर्ण तालिकाओं का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र का छात्र समुदाय शिक्षा व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, समाज सांस्कृतिक मूल्य एवं अन्य सामाजिक मान्यताओं के प्रति सजग एवं जागरूक है। इन मूल्यों के विपरीत कार्य करने पर छात्र नेता सुविधाओं एवं से उपेक्षित होते हैं। शिक्षण संस्थाओं में छात्र समुदाय एवं अध्यापक समुदाय में उच्चस्तरीय सामंजस्य वर्तमान अध्याय का मुख्य उपलब्धि है।

व्यक्तिगत एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों से प्रेरित होकर छात्र नेताओं का 76.4% प्रतिशत अंश छात्र आन्दोलनों को शिक्षण संस्थाओं के लिये में आवश्यक मानता है। यह प्रतिशत प्रदर्शित करता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में देश की अन्य शिक्षण संस्थाओं के अनुरूप उचित शिक्षा का वातावरण नहीं है। अभी तक पुस्तकालयों एवं तकनीकी शिक्षा का अभाव प्रमुख है। इन शिक्षण संस्थाओं में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा के उचित स्तर में प्रशिक्षित अध्यापकों का भी अभाव है। इन सम्पूर्ण कारकों के कारण बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के शैक्षणिक स्तर में स्थानान्तर प्राप्त किया है 37 वर्षों के पश्चात भी उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है। यह आवश्यक नहीं है कि सब शिक्षण संस्थाओं की संख्या में वृद्धि करके क्षेत्र का शैक्षणिक स्तर सुधारा जाये। इस दिशा में विभिन्न राजनीतिक दलों की गतिविधियों ने भी विपरीत प्रभाव डाला है। जो राजनीतिक दल सत्ता में नहीं है उनके सदस्य विद्यार्थी कठिनाइयाँ

के कारण विभिन्न छात्र यूनियनों के पदाधिकारियों को उत्प्रेरित करके शिक्षण संस्थाओं में राजनैतिक गतिविधियों को शुरू करवाते हैं। ऐसे में वास्तव नागरिक कहे जाने वाले इन राजनैतिक भेड़ाओं की करतूतियों से छात्र समुदाय को काफी दूर रखने की आवश्यकता है।

अध्याय में राजनैतिक गतिविधियों एवं प्रजातन्त्रिक दृष्टि से जो विवरण प्राप्त हुये हैं वह भेहरा (1977), रे (1977), आरलप्पैक (1967, 1968), बाबू (1974), ओमेन (1974) के अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों से समरूपता रखते हैं। इन विवरणों से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शिक्षण संस्थाओं में उचित शिक्षा का वातावरण प्रदान करते हुये राजनैतिक गतिविधियों को दूर रखा जाये।

उचित शिक्षा का वातावरण प्रदान करने की दिशा में रोचक शिक्षण सामग्री का समाहित होना आवश्यक है। तकनीकी शिक्षा प्रदान करके छात्र समुदाय को सक्षमता प्राप्त करने के समय तक जीविकोपार्जन के लिये तैयार करना चाहिये। विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रौढ़ शिक्षार्थियों के लिये ऐसे से शिक्षण संस्थायें होना चाहिये जिससे कि वह अपनी दैनन्दिन कक्षा का प्रतीक अल्पावधि के कार्यों के समझ न कर सकें। प्रजातन्त्रिक दृष्टि से और नियमन की आवश्यकता है। इसके लिये प्रजातन्त्रिक नियन्त्रण को पक्षीय नहीं होना चाहिये। शिक्षण संस्थाओं के विकास के लिये प्रजातन्त्रिक नियन्त्रण को राजनैतिक गतिविधियों से पूर्णतया दूरियाँ होना चाहिये। विद्यार्थी द्वारा निर्धारित कार्यक्रम छात्र समूह की वास्तविक आवश्यकताओं में प्राप्त होने चाहिये। शिक्षण संस्थाओं को राजनैतिक दलों का मुख्य केन्द्रित करने वाली संस्थाओं की तरह कार्य नहीं करना चाहिये। सामाजिक विकास में अत्यधिक उपयोगी भूमिका प्रदान करने वाले छात्रों के लिये में तकनीकी

गोष्ठियों का आयोजन उपयोगी हो सकता है। इन गोष्ठियों की गतिविधियों में छात्रों को अपनी बौद्धिक क्षमता प्रदर्शित करने का पूर्ण अवसर मिलना चाहिये। माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर छात्रों का मानसिक परीक्षण आवश्यक है। इन परीक्षणों के आधार पर उच्च शिक्षा या तकनीकी शिक्षा के लिये विशेष संस्थाओं द्वारा संस्तुति की जानी चाहिये।

राजा कमीशन (1902-1909) ने संस्तुति की है कि व्यक्तियों को राजनीतिक दीक्षा विशेष से प्रदान की जानी चाहिये। यूरोपीय देशों में जो व्यवस्था है वह भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक समान सीधे विद्यमान नहीं हो सकती है। ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारियों की 1882 में लैम्ब्रन एवं मीटिंग में भी यह विचार विचाराधीन था कि विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों के लिये इंग्लैण्ड एवं भारतवर्ष में समान अवसर प्रदान नहीं किये जाने चाहिये। इस चर्चा उल्लेख से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि भारतीय नागरिक राजनीतिक गतिविधियों के लिये योग्यक नहीं है बल्कि यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक सम्पन्नता स्थापित करने में भारत वर्ष को कई दशकों तक प्रयास करना होगा। इन प्रयासों की प्रक्रिया में विशेष संस्थायें महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। इसलिये यह कहना उचित होगा कि भारतीय शिक्षा संस्थाओं से दलगत राजनीति को दूर रखना चाहिये। युनोस्लाव्हेन जैसे छोटे पिछड़े प्रान्त में इस आधार को व्यापक रूप से अपनाने की आवश्यकता है।

छात्र संगठनों द्वारा छात्र हितों के लिये विभिन्न कार्यों का उत्तरदायित्व राजनीतिक गतिविधियों के अतिरिक्त होता है। विभिन्न संगठनों द्वारा जो कार्य प्रारम्भ किये जाते हैं। उनमें

संगठन का निर्माण ही प्रमुख नहीं है। इसके लिये प्रयासों एवं पूर्वाग्रहों तथा साधनों की समस्याओं को पराभूत करना चाहिये। इसी स्थान पर छात्र नेतृत्व की भूमिका प्रमुख रूप से प्रकट होती है। एक व्यक्ति की पहल, उत्साह तथा क्षमता से साधारण रूप में संगठन की आधार संरचना का निर्माण होता है। छात्र नेता चाहे उद्देश्य के प्रति निष्ठा, क्षमता, स्थिति एवं आर्थिक लाभ की सुविधा की दृष्टि से आवश्यकता स्थापित कर देते हैं। इसी छात्र नेता संघ निर्माण के लिये उपयोगी सदस्यों में अनुकूल विचारों का क्रम प्रत्याभूत करना चाहते हैं। अथवा कोई आकस्मिक घटना आपातकालीन या असाधारण घटनाओं का मेल छात्र नेताओं को कार्य में तत्पर कर देता है। आरम्भिक अवस्था में छात्र नेता का कार्य छात्र समुदाय की गतिविधियों को तीव्र करने का होता है। दूसरे शब्दों में यदि हम व्याख्या करें तो स्पष्ट होगा कि छात्र हितों को व्यवस्थित करने के लिये छात्र नेताओं द्वारा उनका उचित प्रस्तुतीकरण किया जाये। इसके पश्चात संगठित रूप से इन हितों के लिये कार्य प्रणाली निर्धारित की जाये।

इन छात्र संगठनों की प्रकृति मुख्य रूप से छात्र नेताओं के कार्य निर्धारित करती है। छात्र प्रयासों का विश्व आर्थिक, मनोरंजन, धार्मिक, अथवा राजनीतिक हितों के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। छात्र नेतृत्व का सफल विकास उन कठिनाईयों के आधीन होता है जो संगठन गोष्ठ हित के अनुसार बदल जाती है।

इन
स्थानों पर आर्थिक लाभ हित मुख्य विचार का अंश है ।
व्यापारिक संस्थानों या आर्थिक संस्थाओं में नेतृत्व के लिये एक तीव्र
पूर्ण प्रतिस्पर्धा विद्यमान रहती है । इसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा
विद्यार्थी संस्थाओं के छात्र समितियों के चुनावों में देखने को मिलती
है । इन चुनावों में योग्य चुने जाने छात्र नेताओं का प्रतिशत
कम होता है । इससे यह आशंका प्रदर्शित होती है कि छात्र नेता
मात्र निर्वाचन करते हुये अपने ही आर्थिक हितों को अधिक महत्व
देते हैं । ये आर्थिक हित समूह छात्र समूह के आर्थिक हितों के
अनुरूप नहीं हो सकते हैं । सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिये
छात्र नेताओं के ये हित अन्य छात्रों के लिये घातक हो सकते हैं ।
व्यक्तिगत मनोवृत्तियों के कारण छात्र नेताओं को प्रदत्त अधिकार
अपने हाथ तोड़ने रखने के उदाहरण आज की विद्यार्थी संस्थाओं में देखे
जाते हैं । इस कारक के फलस्वरूप छात्र समितियों में नौकरशाही
प्रथा भी हो सकती है । अधिक आदर्शवादी दृष्टिकोण के सामान्य
हितों पर आधारित संगठनों की प्रभावी छात्र नेतृत्व के लिये मुख्य
बाधा यह है, कि नेतृत्व अधिकार तीव्र बुद्धि के उत्साहियों के
हाथ में आ जाता है जो अपने उत्साह में कठिन से कठिन कार्य
स्वतः करने के लिये तैयार हो जाते हैं । इस स्थिति में छात्र नेता
कार्य की समस्याओं से सुरक्षित से अलग नहीं होते । राजनीतिक क्षेत्रों
में इसके महत्वपूर्ण उदाहरण देखे जा सकते हैं कि किस प्रकार नेतृत्व के
अस्वस्थ दायित्व व बलिदान योग्य अभ्यार्थियों के मार्ग में बाधक
बनते हैं । इस प्रकार यह क्षेत्र उन व्यक्तियों के लिये छोड़ दिया
जाता है जो अधिकार अथवा वैयक्तिक लाभ की दिशा में प्रयत्नशील
रहते हैं ।

****

अध्याय ६

छात्र नेतृत्व एवं स्थानीय राजनीति

वर्तमान अध्याय का लेखन इस आशय से किया गया है कि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन रत छात्र नेताओं का स्थानीय राजनीति में क्या योगदान रहा है ?

बुन्देलखण्ड क्षेत्र का राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय योगदान स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से रहा है । अतः विभिन्न क्षेत्रीय शिक्षण संस्थाओं पर विभिन्न राजनैतिक दलों की गतिविधियों का मूल्यांकन समाजशास्त्रीय दृष्टि से सर्व प्रथम है । इसके माध्यम से छात्र नेताओं द्वारा स्थानीय राजनीति में योगदान का मूल्यांकन सहज हो सकेगा । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इस क्षेत्र में कांग्रेस, स्वतंत्र, जनसंघ, भारतीय क्रांतिदल, एवं कम्युनिस्ट पार्टी राजनैतिक रूप से सक्रिय रहे हैं । आपातकाल की घोषणा दिनांक 26 जून 1975 को होने के पश्चात भारतीय जनता पार्टी ने सन् 1977 के आम चुनावों में बहुमत प्राप्त करके देश में सरकार की स्थापना की । लगभग 19 महीने के आपात काल में देश की राजनैतिक गतिविधियों में एक निश्चित मोड़ दृष्टि-गोचर हुआ । जनता पार्टी के शासन के पतन के पश्चात कांग्रेस आई। सक्रिय दल के रूप में स्थापित हुआ और वर्तमान समय तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है ।

वर्तमान दृष्टि से विकास की धारा रखने वाले छात्र संगठनों में विभिन्न राजनैतिक दलों का योगदान एक स्थापित तथ्य है । राज-नैतिक गतिविधियाँ समाज का महत्वपूर्ण अंग होती है । जो राजनैतिक दल शासन में नहीं होते हैं वे इन शिक्षण संस्थाओं को विनाशकारी कार्यविधियों के लिये प्रेरित करते हैं ।

वर्तमान शोध समस्या की अवधि में विभिन्न दलों से प्राप्त

सूचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न सेवाओं का एवं विशेष रूप से डाक सेवाओं का स्थानीय राजनीति में क्या योगदान रहा है। सामान्य सूचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि सत्तर एवं अस्सी के दशक डाक तार विभाग के आम चुनावों में प्रचार का माध्यम बनाये गये हैं। इन चुनावों में कौन सी डाक प्रतिनिधियों ने सक्रिय भाग लिया है।

जाति व्यवस्था पर आधारित विभिन्न सेवाओं में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की अपनी परम्परा है। सामाजिक सीढ़ी में जाति को सीढ़ी के रूप में माना जाता है। व्यवसायिक विशिष्टीकरण की जाति जातियों की पृथक राजनैतिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण अंग है। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवेक्षण की अवधि में देखी गई इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का उल्लेख इस दृष्टि से आवश्यक होगा कि प्रमुख जातियों वाले परिवारों से आने वाले डाकों की व्यक्तिगत गतिविधियाँ किस दिशा में प्रेरित होती हैं। यह कार्यालय सत्य है कि पारिवारिक जाति एवं आर्थिक स्तर का डाकों के व्यवहार पर सशक्त प्रभाव पड़ता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सक्रिय राजनीतिक गतिविधियों को ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है वस्तुतः ब्रिटिश दमनकारी नीतियों के विरोध के लिये प्रत्येक प्रमुख नागरिक सजग था। प्रमुख इस बन्दी के कालिदास में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की कार्यरत थी। कुछ स्वतन्त्र विचारों वाले आन्दोलन कारी विभिन्न की कांग्रेसजन थी सागर, बन्दोबस्त आबाद, कालपुरकर आदि प्रमुख हैं। सक्रिय कम्युनिस्ट के सदस्य न रहते हुये भी बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सीमाओं में देश की आजादी के लिये कार्य रूप बनाये रहे। सैद्धान्तिक दृष्टि से इन व्यक्तियों को गर्म दल का क्रान्तिकारी कहा जाता था।

सिक्ख तीर्थयात्रियों के संदर्भ में छात्र आन्दोलनों का इतिहास महत्व का ही उपलब्ध हो सका है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रजातांत्रिक संस्थाओं का उदय हुआ और पेशेवर नेतृत्व रखने वाले व्यक्तियों के सक्रिय प्रयासों से विभिन्न राजनीतिक दल देश में उभर कर आये और उनके प्रभाव से गुरुद्वारा क्षेत्र भी दूर न रह सका।

राजनीतिक दलों का सिक्ख तीर्थयात्रियों के संदर्भ में जो योगदान रहा है वह सामान्य दृष्टि से तुलनात्मक अधिक है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक होगा कि विभिन्न राजनीतिक दलों से संबन्धित छात्र प्रतिनिधि सिक्ख तीर्थयात्रियों की सूचियों के तुलनार्थ में प्रतिस्थापित किए जाते रहे हैं। इससे आत्मक प्रजातांत्रिक दृष्टि से विभिन्न सिक्ख तीर्थयात्रियों में कठोर नियन्त्रण की आवश्यकता प्रतीत होती रही है। इसके बावजूद भी गुरुद्वारा क्षेत्र की किसी भी सिक्ख तीर्थ में यहाँ से चौबीस घंटे तक कार्य हेतु नियम साक्षी रखा की गई है, छात्र आक्रोश की पराकाष्ठा पर अधिक विनाश की अपेक्षा नहीं देखी गई है। विभिन्न सिक्ख तीर्थयात्रियों में जो सामान्य से छात्र आन्दोलन हुए हैं, उनमें मान मारे गये, तीर्थ अधिकारियों का घेराव, धुआँ-धुआँ, तोड़-फोड़ की कार्यवाही एवं आपस देने की प्रक्रिया ही सम्मिलित रही है। यह भी देखा गया है कि कुछ ही विद्यार्थी नेता सिक्ख तीर्थयात्रियों से निकलने के बाद देश की राजनीति में उतरे-जैसे एस. एस. यू. आदि दूसरा अकाली किसी राजनीतिक पार्टी में सक्रिय भाग लिया। लेकिन अधिकांश विद्यार्थी नेता सिक्ख तीर्थयात्रियों से निकलने के बाद राजनीति से स्वतन्त्र अलग हो गये।

उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि गुरुद्वारा क्षेत्र की सिक्ख तीर्थयात्रियों के छात्र प्रतिनिधियों का स्थानीय राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में रचनात्मक योगदान रहा है।

अध्याय ७

ग्राम आन्दोलन एवं पुनर्गठीकरण

वर्तमान अध्याय का संकलन इस आशय से किया गया है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं में ज्ञान नेतृत्व जिन कारणों के सामूहिक होकर विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय को आधार रखता है। इन निर्णयों के आधार पर क्षेत्रीय सामाजिक व्यवस्था पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। ज्ञान केन्द्रों के निर्णयों से सामाजिक व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन समाज शास्त्रीय विषय वस्तु के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयोगी है। इस प्रकार के अध्ययनों की दिशा में विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों का आकर्षित होना स्वाभाविक है। पिछले दो दशकों में अमेरिका, यूरोपीय एवं भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञान आन्दोलनों एवं उसके प्रभावीकरण की दिशा में बहुविधि अध्ययन के प्रयास किये गये हैं। वर्तमान समस्या के संदर्भ में फिर भी कोई अत्यधिक वैचारिक सिद्धांत की स्थापना नहीं की जा सकी है जो पूर्ण सफलता से ठोस आधार बन सके एवं व्यवहारिक रूप से अनुरूप सफल सिद्ध हुआ हो। सामान्य रूप से समाज वैज्ञानिक ज्ञान नेतृत्व एवं प्रभावीकरण की दिशा में संलग्न तो रहे हैं, परन्तु समस्या की गूढ़ प्रकृति होने के कारण सार्थक निष्कर्ष एवं सिद्धांत प्रतिपादित करने में सफल प्रतीत नहीं होते हैं। इस संदर्भ की परीक्षा या अपरीक्षा जानकारियों के अनुसार आधार निर्णय होता है कि इस दिशा में अधिक अवधि वाले क्षेत्राध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये जाने चाहिये।

वर्तमान शोध कार्य में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं में हुई विभिन्न ज्ञानगतिविधियों के बारे में संकलन किया गया है। स्थानीय एवं क्षेत्रीय दीर्घायु प्राप्त व्यक्तियों से ज्ञान आन्दोलनों के बारे में सूचनायें प्राप्त की गयी। विभिन्न स्थानीय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों के अभिलेखागार में उपलब्ध सूचनाओं का संकलन किया गया। जिससे यह स्पष्ट हो सके कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में वैचारिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण ज्ञान-आन्दोलन कब-कब हुए हैं और उनका क्या प्रभाव सामाजिक व्यवस्था पर पड़ा है?

वर्तमान सम्पूर्ण शोध अवधि में विभिन्न स्थानों पर मिलने वाले छात्र नेताओं एवं अभिभावकों से भी क्षेत्रीय छात्र गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया। दैनिक टिप्पणियों में इन सूचनाओं को दैनिचर्या के अन्तर्गत अंकित कर लिया जाता था। इस समस्या के निदान के लिए कोई प्रभावशाली अथवा अनुकूली क्रमविधि निर्मित नहीं की गयी कि छात्र नेता इन विधियों से जानकारी प्रदान करने में सहयोग का अनुभव करते हैं। इसके साथ-साथ विभिन्न कार्यालयों से सूचना प्राप्त करने के लिए किसी सांगठनिक तकनीकी की आवश्यकता ही नहीं थी।

छात्र नेताओं द्वारा समस्या विश्लेषण क्षेत्रों में निर्णय लिये जाने के समय विभिन्न पर्यावरणीय कारक अपना योगदान करते हैं। इस क्षेत्रों में नेता का व्यक्तित्व एवं समस्या से सम्बन्धित विभिन्न कारक प्रमुख होते हैं। इन छात्र नेताओं के द्वारा निर्णय लिये जाने के समय उपर्युक्त कारकों को कम्य नहीं माना जा सकता है। विभिन्न सेन्थाओं के सम्बन्ध में छात्र नेतृत्व की समस्याओं एवं उनकी प्रभावीकरण की दिशा में दीर्घावधि शोध कार्यों की आवश्यकता है। अल्पावधि वाले शोध कार्यों से यह स्पष्ट रूप से विश्लेषित नहीं किया जा सकता है कि छात्र नेता प्रशासनिक, सांस्कृतिक एवं अन्य सामाजिक समस्याओं के लिए किस विधा का निर्णय लेंगे। अल्पावधि के शोध कार्यों से भी पूर्वानुमान के आधार पर ही कुछ निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं।

छात्र समितियों एवं इनका प्रभावीकरण एक वांछित समस्या है विभिन्न विभिन्न सेन्थाओं में छात्र नेताओं के निर्णय एवं प्रभावीकरण एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं, इसके साथ यह अन्य पर्यावरणीय कारकों द्वारा प्रभावित होते रहते हैं।

सातवाँ अध्याय का आशय इस तात्पर्य से है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप की अन्तर्वैयक्तिक एवं अन्तरसमूहिक पारस्परिक सम्बन्धों में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सम्बन्ध में कितनी पारस्परिकता है। इन सम्बन्धों के अर्थ छात्र समूहों एवं प्रभावी छात्र नेतृत्व का कितना व्यापक असर पड़ता है। छात्र की समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। इनके क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं के सक्रिय व निष्क्रिय राजनैतिक प्रोत्साहन को उचित रूप से समझा जाना चाहिए। तकनीकी एवं आर्थिक विकास का सशक्त प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र की राजनीति पर पड़ता है। स्थानीय आर्थिक सम्प्रदाय इस हेतु महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करते हैं। प्राचीन संस्कृति सभ्यता, सामाजिक नियम एवं परिवर्तनशील मूल्यों का प्रभाव शिक्षण - संस्थाओं पर निश्चित रूप से पड़ता है। सामाजिक अभिकरणों समूह रूप से छात्र गतिविधियों को प्रोत्साहित एवं नियन्त्रित करती है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में दीर्घ समय तक क्षेत्र परीक्षण की अवधि में यह अनुभव किया गया है कि शिक्षण संस्थाओं की राजनीति में विद्यार्थियों का एक वर्ग विशेष ही सक्रिय भाग लेता रहा है। छात्र नेतृत्व जाति, पारिवारिक आर्थिक सम्बन्धता एवं राजनैतिक दलों से प्रेरित होकर हीनमन्य होता है। प्रत्येक समाज विकास की प्रक्रिया निरन्तर गतिशील रहने वाली अवस्था है। इसे गतिशीलता प्रदान करने के लिये उचित निर्देशन आवश्यक है। छात्र शिक्षण संस्थाओं के क्षेत्रों में यह गतिशीलता एवं निर्देशन का दिशाविधि छात्र नेतृत्व का परोक्ष रूप है। शिक्षण संस्थाओं से संबन्धित प्रशासनिक, आर्थिक, गतिविधियाँ छात्रों की परिधि से दूर नहीं होती है। तकनीकि कुशलता के कारण विद्यार्थी वर्ग को प्राप्त अधिकार जिसे शिक्षण संस्थाओं में छात्र यूनियनों का निर्माण है, इस दिशा में एक सकारात्मक कारक के रूप में उपलब्ध हुआ है।

मैक्लिवी (1925) के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि व्यक्ति अपने अनुभव एवं सामाजिक निर्देशन में गतिशील रहते हैं और इसी सामूहिक गतिशीलता के फलस्वरूप समाज का गतिशील होना संभव होता है। इस नियम को "गतिशीलता का नियम" कहते हैं। यदि किसी समाज या वर्ग में व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिशीलता न हो तो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विकास दृष्टिगोचर नहीं हो सकता है। गुलमैन (1956) के शोध अध्ययनों से स्पष्ट है कि मात्र सामूहिक गतिशील व्यवहार भी समाज के विकास में सहयोगी नहीं हो सकता है, अपितु निर्देशन के माध्यम से नेतृत्व आवश्यक है और जो सामाजिक विकासों की दृष्टि से व्यक्तिगत नेतृत्व कहा जाता है। वार्ने डाइक (1932) के अनुसार विद्यार्थियों का, उचित व्यवहार एवं गतिशीलता उचित निर्देशन से ही निर्धारित की जा सकती है। इस क्षेत्र में मेयर, गोयल एवं बनी (1940) के महत्वपूर्ण अध्ययन उपलब्ध हैं।

भारत वर्ष में प्राचीन गुरुकुल पद्धति में किसी भी प्रकार के छात्र नेतृत्व की व्याख्या नहीं की है। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत शिक्षा प्रणाली में निरीक्षण एवं से विकास हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति की अवधि तक अधिक बालक छात्र नेतृत्व या छात्र सेवी के प्रभाव रेखीयात्मक शोध वर्षों में वृद्धि नहीं है। राजनैतिक गतिविधियों के फलस्वरूप एवं राजनैतिक नेताओं के आंदोलन से प्रेरित होकर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं अन्तिम प्रान्तों में छात्रों द्वारा शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया गया। इन छात्र बहिष्कारों को ब्रिटिश साम्राज्य में, अपनी दमनकारी नीति के माध्यम से दबाने का अथक प्रयास किया गया। इसी अवधि में अंग्रेजी शिक्षा हटाने के आन्दोलन सुझाव उपलब्ध हैं।

उपर्युक्त वर्णित विवरण से प्रमाणित ब्रिटिश कालीन अन्य भारत एवं वर्तमान परिवेशजन्य तेन है, विशेष रूप से उन परिवारों में जहां से वर्तमान शोध कार्य हेतु विद्यार्थी चयनित की गयी है, छात्र आन्दोलनों का कोई प्रभाव उपलब्ध नहीं हो सका है। स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के

प्रशासनिक अधिकारी एवं छात्र समुदाय में असंतोष होने के कारण अल्पकालीन शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार दृष्टिगोचर हुआ है। यद्यपि इन छुट-पुट असंतोषों से सामान्य जन-प्रशासन या जन-सुविधाओं को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई है। छोटे स्तर के छात्र बहिष्कारों में जिन प्रभावी छात्र नेताओं का योगदान रहा है वह क्षेत्रीय या राष्ट्रीय दृष्टि से अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हुए हैं। इन छात्र नेताओं की गतिविधियाँ विद्यालय के प्रशासन के सहयोग या अपनी माँगों के समर्थन में स्थानीय अधिकारियों को ज्ञापन देने तक ही सीमित रहीं है।

वर्तमान अध्याय में सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण करने से परिलक्षित होता है कि विभिन्न कारक, जो छात्र आन्दोलनों एवं प्रभावीकरण से सम्बन्धित हैं, का मूल्यांकन संतुलन आधारक नहीं था। सम्पूर्ण जानकारी विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित है। विवरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण विभिन्न सूचनाओं को प्रकाश या किसी भी विशेष से संतुलन को समाप्त आत्मीय दृष्टिकोण से अधिक नहीं समझा जाता है। इसीलिए विभिन्न सूचनाएँ जो जिस रूप में प्राप्त होती गयीं, उनको आधारों में अंकित कर लिया गया। इसके पश्चात सम्पूर्ण सूचनाओं को अलोकित करने वर्तमान अध्याय के निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। जो मुख्य निष्कर्ष स्थापित हुआ है, वह इस प्रकार है कि "बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के छात्र प्रतिनिधि आर्थिक प्रभावी प्रतीत नहीं होते हैं। वो स्थानीय अथवा राष्ट्रीय प्रशासनिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में अधिक प्रतिनिधित्व की आशा रखते हैं"।

सामान्यतः जिन शिक्षण संस्थाओं से वर्तमान शिक्षण सामग्री एकत्रित की गयी है उनमें प्राध्यापक एवं छात्र वर्ग में सहज एवं सामान्यतः पूर्ण वातावरण उपलब्ध है। इस स्थिति में स्पष्ट करना उचित होगा कि यह सामान्यतः पूर्ण वातावरण उपलब्ध है तो वर्तमान शोध समस्या का अध्ययन किस प्रकार की सीमा तक उचित है। आनुभाविक तथ्यों से प्रेरित

जातियों का एक सूक्ष्म तंत्र पाया: सभी तंत्रवादों में पाया जाता है और यही वर्ग असामाजिक व्यवहार के लिए प्रोत्साहित करता है। वर्तमान शोध प्रयास भी इस आशय से किया गया है कि वर्गीय सूक्ष्म व्यवहार वर्ग से सम्बन्धित कौन से ऐसे सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनैतिक कारक हैं जिनका प्रादुर्भाव व्यवहार पर है। समाज-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस दिशा में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की किसी तंत्रवादों में कोई शोध कार्य वर्तमान समय तक नहीं किया गया है। अतः सामाजिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण किसी तंत्रवादों में व्यवहार सूक्ष्म व्यवहार की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। अतएव वर्तमान शोध विषय का चयन सभी तरह, उचित एवं सामयिक है।

अध्याय ८

व्यापितता अध्ययन

1. सामान्य विवरण
2. व्यापितता अध्ययन पद्धति
   - आंकड़ा संकलन किये गये
   - छात्र संख्याओं का विवरण

(1) छात्र महाविद्यालय

(2) छात्रा महाविद्यालय

(3) मेडीकल कालेज

(4) माध्यमिक विद्यालय

(5) विश्वविद्यालय

4.1 सामान्य विवरण

समाज शास्त्रीय शोध ग्रन्थों में उपयुक्त विभिन्न सामाजिक अध्ययन पद्धतियों में व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः अन्य सामाजिक विधियों के माध्यम से उपलब्ध सूचनाओं में पूर्वानुमान के आधार पर कुछ त्रुटिपूर्ण सूचनाएँ उत्तर-दाता देते हैं। सामाजिक आदतों के सम्बन्ध में व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति से उपलब्ध जानकारी पूर्वानुमान से परे होती है। विभिन्न सामाजिक शोधों में उपयोग की जाने वाली विधियों को मुख्यतः दो श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) परिमाणात्मक विधि
(ब) गुणात्मक विधि

सामान्य रूप से सांख्यिकीय पद्धतियों को परिमाणात्मक विधि कहते हैं। इसके सापेक्ष व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति को गुणात्मक विधि कहा जा सकता है। इस पद्धति में अनगिनत अनेकों विषयों के बारे में जानने की इच्छा को त्यागकर एक ही विषय में अधिकाधिक जानकारी का प्रयास किया जाता है। इसलिये इसे व्यक्तिगत या वैयक्तिक अध्ययन पद्धति कहा जाता है। बारटन (1961) के अनुसार व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है " कि हम किसी इकाई को, उसके सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में रखकर परिपूर्ण रूप में अध्ययन करते हैं (तो उसे) वैयक्तिक या व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति कहते हैं। जैसे इकाई हम किसी व्यक्ति विशेष को अथवा किसी परिवार सामाजिक समूह, सामाजिक संस्था या समुदाय को बना सकते हैं। विशुद्ध सांख्यिकीय पद्धति के विपरीत व्यक्तिगत अध्ययन में हम

विशेष प्रकार के तथ्य अनुभवों का एक क्रमबद्ध चित्र प्रस्तुत करते हैं। इस रूप में समय प्रवाह में विभिन्न अनुभवों का सामाजिक घटनाओं तथा प्रभावों की पृष्ठ भूमि में किसी इकाई का गहन व तर्कपूर्ण अध्ययन ही व्यक्तिगत अध्ययन है। क्लार्क (1926) के अनुसार व्यक्तिगत अध्ययन विधि एक प्राचीन पद्धति है, एवं तर्कपूर्ण ढंग का उपयोग अनुमान द्वारा किसी नवीन उपकल्पना पर पहुँचने की अपेक्षा प्रस्तावना एवं तथ्यों को समझाने व तर्कसंगत करने के लिये किया गया था।

व्यक्तिगत अध्ययन वास्तव में गहन अध्ययन की एक पद्धति है। गहन अध्ययन के लिये यह बात जरूरी है कि शोध की दृष्टि से अध्ययन किये जाने वाली इकाईयों की संख्या बहुत ही सीमित एवं सीमित हो। व्यक्ति ही नहीं, गहन व्यक्तिगत अध्ययन में यह इकाई जैसा परिवार, संस्था, समूह या समुदाय भी हो सकती है। इकाई चाहे जो भी हो इस पद्धति के अन्तर्गत उसके प्रत्येक दृष्टिकोण से उसकी सम्पूर्णता में गहन अध्ययन किया जाता है। बैंग (1960) ने व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति को इस प्रकार परिभाषित किया है कि "व्यक्तिगत अध्ययन किसी सामाजिक इकाई, चाहे वह व्यक्ति, परिवार, संस्था, सांस्कृतिक वर्ग अथवा समस्त जाति हो, के जीवन का अनुसंधान व उसकी विवेचना करने की एक पद्धति को कहते हैं।" इस पद्धति के द्वारा सामाजिक शोधकर्ता एक सामाजिक इकाई के अनुभवों उसे प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों को एक समन्वित संरचना के रूप में देखने का प्रयास करता है।

वास्तव में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति भूतकाल एवं वर्तमान काल से संबन्धित उपलब्ध सूचनाओं या तथ्यों पर आधारित होती है। एक सामाजिक इकाई के संबन्ध में इन सूचनाओं को अनुसंधान कर्ता जैसा साक्षात्कार, निरीक्षण आदि विधियों के माध्यम से ही संकलित करता है, यह स्थिति भिन्न है। वास्तव में यह जैसा प्राथमिक स्रोतों से ही

नहीं अपितु द्वितीयक स्रोतों व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक प्रलेखीय स्रोतों। जैसे शिक्षा ग्रंथ, पत्र, डायरी, वैयक्तिगत प्रलेख, सरकारी व गैर सरकारी रिकार्ड, समाचार पत्र-पत्रिकायें आदि से भी अपने अध्ययन विषय सामाजिक सफाई। के सम्बन्ध में तथ्य एवं सूचनायें एकत्रित करता है। इस प्रकार अध्ययन सफाई से संबन्धित समस्त परिस्थितियों व अवस्थाओं का वास्तविक अध्ययन करने का हर संभव प्रयास किया जाता है। इस दृष्टि से सामाजिक अनुसंधान कर्ता को अत्यधिक सूझबूझ एवं व्यवस्थित व नियोजित ढंग से अपने अध्ययन कार्यों को आगे बढ़ाना होता है ताकि उसे पूर्णता की प्राप्ति हो सके। पूर्णता का अर्थ है - पूर्ण अध्ययन के द्वारा अध्ययन सफाई के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान प्राप्त करना अथवा विषय वस्तु या सफाई के बारे में जानकारी प्राप्त की जाये-पूरी जानकारी प्राप्त की जाये। साथ ही, उस जानकारी की वास्तविकता एवं सत्यता की परीक्षा के लिए प्रत्येक तथ्य का सूक्ष्म विश्लेषण भी आवश्यक है। इसी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत अध्ययन विधि को प्रयोग करते समय शोधकर्ता को अत्यधिक सजग रहना चाहिए।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के 20 छात्र नेताओं का पूर्वचयन व्यक्तिगत अध्ययन के लिए किया गया। इन छात्र नेताओं से अपने कार्यों को गोपनीय रखने का अनुरोध शोधकर्ता ने किया था। इस लिए छात्र नेताओं का विवरण सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के सन्दर्भ में क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

2. <u>व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति द्वारा चयनित किये गये छात्र नेताओं का विवरण</u> :- (क) छात्र महाविद्यालय :-

1. (अ) चयन की अवधि में संबंधित किस संस्था से सम्बद्ध स्थापित

किया गया वे एक हृष्ट-पुष्ट 25 वर्ष की आयु के ठाकुर बालिग है हैं । शिक्षा की दृष्टि से आप एम0ए0 प्रथम वर्ष के छात्र हैं । जब इनसे सम्पर्क स्थापित किया गया, उस समय वे अपने मित्रों के साथ बातचीत करने में मग्न थे । औपचारिक अभिवादन के पश्चात बातचीत प्रारम्भ करते ही इन्होंने काफी उत्साह दिखाया । अपरोक्ष रूप से जो सूचनायें एकत्र की गई है उनका विवरण इस प्रकार है : शोध समस्या का शीर्षक समझते हुये इन तरुणनेताओं ही विस्मय कारी दृष्टि से देखते हुये कहा " अरे साहब कालेज में नेताओं की क्या कमी है । हर कक्षा का हर छात्र नेता है और जो नेता नहीं होता उसे हम लोग अपने प्रभाव से नेता बना लेते हैं । तत्पश्चात उस छात्र नेता के आर्थिक आधार के बारे में जानकारी एकत्र की गई तो पता लगा कि वह एक सम्पन्न आर्थिक परिवार का है । भविष्य के बारे में चर्चा करने पर यह छात्र नेता कुछ आशंका से ग्रसित हुये । कोई विशिष्ट कार्यक्रम इनके पास नहीं था ।

इस महाविद्यालय की छात्र समिति के एक सक्रिय पद पर आसीन छात्र नेता को तलाश करने पर इस तरुण से कालेज के पास स्थित कैन्टीन में मुलाकात हो सकी । आप देखने में एक गम्भीर व्यक्तित्व वाले तरुण है,आप ठाकुर बालिग है बीस पच्चीस युवक हैं तथा एम0ए0 प्रथम वर्ष के छात्र हैं।मेरे पहुंचते ही आपने मुझे चाय के लिये आमंत्रित किया तथा बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यवहार किया । शोध कार्य की उपयुक्तता को समझते हुये उन्होंने बड़ी ही गम्भीरता से उत्तर दिया कि "अक्सर नेताओं को कालेज के प्राध्यापक ही तैयार करते हैं और विद्या तैयार परिसर में रहने की अच्छे-खासे होते हैं, अतः कालेज के प्राध्यापकों का पूरा योग-दान रहता है ।" यह पूछे जाने पर कि प्राध्यापक विशेष का नाम बता सकेंगे, तो वह कहकर चले गया कि "अरे साहब इस समय क्लास में है

नहीं पहुंचा हूँ ।"अतिरिक्त जानकारी एकत्र करने पर यह ज्ञात हुआ कि आर्थिक दृष्टि से तन्यन्काका का आभाव उनकी बातों से नहीं हो रहा ।

(iii) तर्नेजा की अवधि में स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्र-समिति के अध्यक्ष पद पर आसीन छात्र नेता के विषय में मालूम हुआ कि वे सम्पन्न छात्रावास में ही रहते हैं । छात्रावास में जब आपके कमरे में पहुंचा तो पहले तो देखकर कुछ सहम गये परन्तु जब मेरा उद्देश्य उन्हें पता लगा, तो आश्वस्त हो और बड़ी ही गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया । आप कुर्सी बढ़ाते हुये कुछ आश्चर्य से दिखने वाले अन्य साथियों के साथ गप-शप करते हुये कमरे में मिले । आप ठाकुर जाति के हैं तथा पारिवारिक जीवकोपार्जन का साधन कृषि मात्र नौकरी है । आपकी आयु 22 वर्ष तथा एम. ए. द्वितीय वर्ष के छात्र हैं । विषय सामग्री बड़े ही उत्साह से समझते हुये कहा "साक्षात्कार से मेरा आपको इस कार्य के लिये चाहिये, मैं सभी को यहीं बैठे-बैठे बुला दूँगा । जो अपने काम में मदद नहीं करेंगे उनको अनुपस्थित बुलवा लिया जायेगा । चर्चा के दौरान पता चला विभिन्न कठिन आर्थिक परिस्थितियों से जूझकर ये नेताओं से प्रभावित हैं एवं उन्हीं के भांति इनमें नेतागीरी के कार्य करने की स्वीकृति छात्र नेता ने अपनी बात-चीत में दी । चर्चा को और आगे बढ़ाने पर यह भी उस छात्र नेता का मत था " कि यदि देश को तरक्की करना है तो सभी शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थी एवं छात्र नेताओं को जागरूक रहना चाहिये ।"

(iv) तर्नेजा की अवधि में एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय के एक सौम्य से दिखने वाले छात्र नेता से पान की दुकान पर भेंट हुई । जानकारी से यह ज्ञात हुआ कि यह पिछड़ी जाति का छात्र नेता है तथा निम्न आर्थिक स्तर का है । शिक्षा की दृष्टि से यह बीएस्सी द्वितीय वर्ष का

20 वर्षीय छात्र है। जब उसे सामान्य सी चर्चा में यह बताया गया कि वर्तमान सूचनायें अपर्याप्त हैं तो इस सज्जन ने जो व्यवहार तत्काल प्रस्तुत किया उसी बारे में पूर्वानुमान करना भी दुर्लभ था। उसी के शब्दों में "साहब सभी कालेजों की परीक्षाओं में नकल हो रही है, लेकिन हमारे यहाँ के प्रधानाचार्य नकल रोकने के प्रयत्न में रहते हैं। इस पर इन लोगों का तो यही कहना है कि छात्र इन्कलाब का नारा बुलन्द करें।" इसी बीच थोड़ा सा खखारते हुये उसने कहा "साहब क्या आप सहमत करते हैं।" पुनश्च जानकारी हासिल करने पर यह ज्ञात हुआ कि जिस किसी भी राजनैतिक दल से इस छात्र नेता को जाने-पीने के लिये मिल जाता है, उसी का काम करने लगता है।

इस। एक अन्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्र समिति के उपाध्यक्ष पद पर आसीन छात्र नेता से सम्पर्क स्थापित करने के लिये उसके घर जाना पड़ा। बड़ी ही सौम्यता से उसने अपने लगे हुये आसन क्रम में हमें बैठाया तथा चाय, नाश्ते के लिये आग्रह किया। यह छात्र नेता अच्छे व्यक्तित्व वाला 20 वर्षीय स्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र तथा जैन जाति का है। यह अपने माता-पिता की एक मात्र सन्तान है और इसका पारिवारिक वातावरण का काफी हाथ है। पहले इनसे अन्य विषयों पर चर्चा होती रही, इसके बाद जब इन्हें अपने आने का कारण बताया और वर्तमान शोधकार्य का उद्देश्य बताते हुये उनसे इस विषय पर राय माँगी तो उन्होंने बड़ी ही विनम्रता से कहा कि "छात्र राजनीति को कॉलेज परिसर से बाहर नहीं से आना चाहिये, और छात्रों को राजनीति में उतना ही भाग लेना चाहिये जिससे से उनकी पढ़ाई पर असर न पड़े।"

छात्रा महाविद्यालय

प्र॰ . महाविद्यालय की छात्रा समिति के अध्यक्ष पद आसीन छात्रा श्रेया से महाविद्यालय में ही सम्पर्क स्थापित किया गया। इनसे मिलने के लिये महाविद्यालय की कैन्टीन में थोड़ा इन्तजार करना पड़ा क्योंकि उस समय वह अपनी कक्षा में अध्ययनरत थीं। यह बीस वर्षीय बी०ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा हैं तथा ठाकुर जाति की हैं। औपचारिक अभिवादन के पश्चात मैंने अपने विषय पर आते हुये उन्हें यह बताया कि वर्तमान कार्य शैली से सम्बन्धित है, इस बारे में आप क्या विस्तृत जानकारी देंगी। उत्तर दाता ने मुस्कुराते हुये कहा कि "देश की वर्तमान समस्याओं में छात्र-छात्राओं का सक्रिय भाग लेना आवश्यक है, मेरी व्यक्तिगत राय है मैं किसी राजनीतिक दल की सदस्या नहीं हूं।"

प्र॰ एक अद्युनिक सी दिखने वाली छात्रा से सायंकाल के समय महाविद्यालय के छोड़ा स्थान पर सम्पर्क स्थापित किया जा सका। जानकारी से यह ज्ञात हुआ कि इनके पिता रेलवे सर्विस में कार्यरत हैं और यह यादव जाति की हैं। इनकी आयु 19 वर्ष तथा बी०ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा हैं। पहले तो यह शिक्षा क्षेत्र में व्यस्त थीं [illegible]। उसी पर सामान्य चर्चा होती रही, यह अपने क्षेत्र के विषय में उत्सुक दिखाई पड़ रहीं थी। तदोपरान्त उन्हें अपने आने के उद्देश्य के विषय में बताते हुये कहा कि वर्तमान कार्य शैली से सम्बन्धित है और इस सम्बन्ध में आप क्या उपयोगी सूचनायें दे सकती हैं। उत्तरदाता ने कहा कि देखिये साहब आप कोई भी काम करोगे, लेकिन वर्तमान समाज की प्रमुख समस्या दहेज है और प्रत्येक क्षेत्र का उद्देश्य दहेज विरोधी अभियान जारी का होना चाहिये। मैं भी आप इस दहेज विरोधी अभियान में सक्रिय रूप से भाग ले रही हूं, और इस हेतु मुझे किसी से भी लड़ना पड़े मैं चिन्ता नहीं करूंगी।

॥॥। एक अन्य सौम्य सी दिखने वाली छात्रा मेरा जो कि महाविद्यालय की छात्रा समिति के सांस्कृतिक सचिव पद पर आसीन थी, भेंट करने के लिये महाविद्यालय के छात्र तथा कार्यालय में आना पड़ा । उन्होंने बड़ीही शिष्टता से स्वागत करते हुये मुझे बैठाया तथा विस्तृत जानकारी में यह बताया कि वे व्यवसायिक परिवार से हैं एवं विस्तृत जानकारी मे यह पता लगा कि वह वैश्य जाति की हैं । आप स्नातकोत्तर वर्ष की 22 वर्षीय छात्रा हैं । अन्य विषयों पर चर्चा के बाद उन्हें बताया गया कि वर्तमान कार्य शोध से सम्बन्धित है, इस बारे में आप कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दें । यही तो सौम्यता से उत्तरदाता ने कहा कि "शिक्षण संस्थाओं को राजनीति का केन्द्र नहीं बनाना चाहिये, पूरे शिक्षण काल में यदि सौम्यता का वातावरण बना रहे तो छात्र समिति के सदस्य चुनाई के पात्र होना चाहिये ।"

॥६। छात्रा महाविद्यालय की छात्रा समिति के द्वीतीय सचिव पद पर आसीन छात्रा मेरा के निवास स्थान पर जाकर भेंट करनी पड़ी । कुछ गृह-कार्य में व्यस्त होने के कारण कुछ समय इन्तजार करना पड़ा । उनके आने पर उनके चेहरे से यह अनुमान हो रहा था, कि वे गृहकार्य में काफी रुचि लेती हैं तथा व्यस्तता अनुभव करती हैं । विस्तृत जानकारी से यह पता चला कि वह मध्यमवर्गीय परिवार एवं जैन जाति की हैं । वे 22 वर्षीय स्नातकोत्तर वर्ष की छात्रा हैं । अन्य विषयों पर चर्चा करते हुये जब यह अपनी व्यस्तता से कुछ आश्वस्त हुई तब अपने शोध कार्य के विषय पर चर्चा करते हुये उनकी राय जानने का प्रयत्न किया । पूर्ण उत्सुकता दिखाते हुये उसने पूछा कि " यह कार्य आप कब से कर रहे हैं ? मेरी व्यक्तिगत धारणा यह बनी है कि छात्र समितियों के पदाधिकारियों को रचनात्मक गतिविधियों में योगदान करना चाहिये। उन कार्यों को किसी राजनीतिक प्रभाव पड़े, प्राध्यापकों द्वारा समय-समय पर सहयोग करना चाहिये ।"

[illegible] छात्रा महाविद्यालय की एक छात्रा नेहा के विषय में जानकारी मिलने पर उन्हें महाविद्यालय में ढूँढना पड़ा। काफी परेशानी के बाद उनसे महाविद्यालय के प्रवेश द्वार पर भेंट हो सकी। ये काफी लैंगरेयी छात्रा नेहा हैं। उन्हें जब सामान्य सी चर्चा में यह बताया गया कि वर्तमान कार्य बोध से सम्बन्धित है, इस बारे में आपकी क्या राय है? बड़े ही डरते हुये उसने उत्तर दिया कि " क्षमा करें श्रीमान् इस बारे में मैं अपनी कोई राय नहीं दूँगी।" सहयोगी छात्राओं से विस्तृत जानकारी से पता चला कि यह पिछड़ी जाति की छात्रा है तथा निम्न आर्थिक स्तर वाले परिवार से है। उनकी आयु के विषय में जानकारी प्राप्त न हो सकी, अनुमानतः 18 से 20 वर्ष के मध्य की आयु की बी०एस० प्रथम वर्ष की छात्रा थी।

[illegible] मेडिकल कालेज

[illegible] मेडिकल कालेज में जब व्यक्तिगत अध्ययन के लिये गयी तो वहाँ का माहौल अन्य दूसरे महाविद्यालयों से अलग ही प्राप्त हुआ। छात्रावास की अनुमति तथा कक्षायें व्यवस्थित देखने को मिलीं। वहाँ से एक छात्र नेहा, जो कि छात्र समिति का पदाधिकारी है, से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। यह 22 वर्षीय हृष्ट-पुष्ट सुन्दर व्यक्तित्व वाला छात्र है जो कि एम०बी०बी०एस० अन्तिम वर्ष का छात्र है। आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी हासिल करने पर ज्ञात हुआ कि यह वैश्य जाति का व्यवसायिक परिवार का पुत्र है। अतिन मेडिकल कॉलेज के बाहर कैन्टीन में बैठकर सम्बन्धित विषय पर चर्चा करने की इच्छा व्यक्त की। यह सामान्य सी चर्चा में यह बताया गया कि वर्तमान कार्य बोध से सम्बन्धित है, इस बारे में आपकी क्या राय है? उत्तरदाता ने बड़ी ही सहजता से कहा कि" सारा आजकल देश में इस प्रश्न में ग्रस्त किये है, आप जैसे युनेस्कोग्रस्त देश है

अभी ही क्यों जानकारी एकत्र कर रहे हैं ? यदि आपको कई और समाचार पत्र-पत्रिकायें चाहिये हों तो मैं हर प्रान्त के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं को बता दूँ, आपको दे सकता हूँ । इतना सच है कि व्यवसायिक शिक्षण संस्थाओं में अगर हम लोग ज्यादा राजनीति में भाग लेते हैं तो हमारे परीक्षाओं में व्यवधान उत्पन्न किया जाता है । इसलिये चाहते हम लोग कालेज में घुसकर राजनीति में भाग नहीं ले पाते, जिससे कि हमारे कोर्स तथा प्रयोगिक परीक्षायें समय पर पूरे हो जायें ।"

(ख) एक अन्य छात्रा प्रतिनिधि, जिसकी आयु 23 वर्ष की और जो एम.बी.बी.एस. पंचम वर्ष की छात्रा है, से इस विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया । वह एक सम्पन्न उच्च ब्राह्मण परिवार की युवती है । कक्षा के बाहर बरामदे में ही उसे घेरकर विषय पर चर्चा शुरू की गई । पहले तो उसने विषय पर विशेष रुचि नहीं ली । परन्तु जब यह बतलाया गया कि वर्तमान कार्य शोध से ही सम्बन्धित है और इस विषय में उनकी क्या राय है तब सन्तुष्ट होकर उसने उत्तर दिया कि "हम लोग व्यवसायिक शिक्षण संस्थाओं के छात्र हैं और यदि सक्रिय राजनीति में भाग लेते हैं तो वर्ष के अन्त में अप्रत्याशित परीक्षा परिणाम आते हैं ।" इससे अधिक टिप्पणी करने से उसने इन्कार कर दिया ।

(ग) मेडिकल कालेज की छात्र समिति के सक्रिय पद पर आसीन एक छात्रा प्रतिनिधि से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया गया । उसने कालेज में समय का अभाव बताया पर दोपहर बाद होस्टल में आने का आग्रह किया । होस्टल में अपने कमरे में बड़ी सभ्यता का परिचय देते हुये चाय तथा नाश्ते की व्यवस्था की । तदोपरान्त की जानकारी से ज्ञात हुआ कि वह एक आर्थिक सम्पन्न ठाकुर परिवा

के परिवार की है तथा उसकी आयु 21 वर्ष और एम०बी०बी०एस० तृतीय वर्ष की छात्रा है । जब उसे बताया गया कि प्रस्तावित कार्य शोध से सम्बन्धित है और इस विषय पर आपका क्या मत है? तब बड़ी ही उत्सुकता से उसने उत्तर दिया कि "विश्व में इस बात के कई प्रमाण उपलब्ध हैं कि नारी किसी पुरुष वर्ग की तुलना में अब पीछे नहीं रहा है । ताजा समाचारों के अनुसार महिला पर्यवेक्षकों ने अन्तरिक्ष यात्रा का साहस किया जा सकता है, अतः चेतना के मामले में भी नारी वर्ग आगे बढ़ रहा है । फिर भी व्यवसायिक शिक्षण संस्थाओं में छात्र-छात्राओं को सक्रिय राजनीति से दूर रहना चाहिये ।"

अब एक अन्य छात्रा प्रतिनिधि जो कि उपाध्यक्ष पद पर आसीन है, होस्टल के डैन्टीन में सम्पर्क स्थापित किया गया । उसने समय की कमी को बताते हुये भोजन के साथ-साथ विषय पर चर्चा करने की इच्छा व्यक्त की तथा शोध कर्ता को भी भोजन के लिये आमन्त्रित किया । विस्तृत जानकारी से ज्ञात हुआ कि वह कानपुर के विचारों से प्रभावित एक मध्यमवर्गीय परिवार की है । वह 20 वर्षीय सुन्दर व्यक्तित्व वाली वैश्य जाति की कन्या है तथा एम० बी०बी०एस० द्वितीय वर्ष की छात्रा है, शोधकर्ता ने जब अपने कार्य को शोध से सम्बन्धित बताया और उसकी राय जानने का प्रयत्न किया तो उत्तरदाता ने कहा कि "यह बहुत ही महत्वपूर्ण शोध कार्य है, एवं इस प्रकार के कार्य शिक्षण संस्थाओं के स्तर में किये जाने चाहिये । प्रजातन्त्रिक दृष्टिकोण से छात्र-छात्राओं को दबाया नहीं जाना चाहिये । संविधान में जब यह प्रावधान निर्धारित किया गया है कि व्यक्ति को बोलने एवं वोट देने का अधिकार है तो शिक्षण संस्थाओं में भी इनका उपयोग किया जाना चाहिये ।"

३४। एक अन्य छात्र प्रतिनिधि से हॉस्टल के कमरे में जाकर सम्पर्क स्थापित किया गया। छात्र बड़ा ही प्रफुल्लित दिखाई दे रहा था। कुर्ता पैजामा पहने हुये पलंग पर लेट कर किसी उपन्यास का अध्ययन कर रहा था। पहले तो शोधकर्ता को देखकर उसने कुछ नाराजगी प्रकट की परन्तु बाद में शोध कर्ता का उद्देश्य ज्ञात होने पर बड़े ही अच्छे व्यवहार से पेश आया। विस्तृत जानकारी से पता चला कि दूसरे दिन अवकाश होने के कारण वह आराम से समय व्यतीत कर रहा था। अन्य जानकारी से पता चला कि वह एक उच्च आर्थिक स्तर वाले वैश्य जाति के परिवार का सदस्य है। उसकी आयु 23 वर्ष और एम०बी० बी०एस० की अन्तिम वर्ष का छात्र है। उसे शोध विषय पर अपनी राय प्रकट करने के लिये कहने पर उसने उत्तर दिया कि "वैसे तो हम सभी राजनैतिक गतिविधियों से परिचित हैं, फिर भी सक्रिय छात्र राजनीति क्या कॉलेजों के कालेजों में अधिक होती है, क्योंकि उन्हें कोई प्रायोगिक कार्य नहीं करने पड़ते हैं। व्यवसायिक शिक्षण संस्थाओं में छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं को उचित रूप से प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिये छात्र समितियों की आवश्यकता है।"

14। माध्यमिक विद्यालय

वर्तमान सर्वेक्षण की अवधि में जिन माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों से सूचना एकत्र की गई उनमें वस्तुतः कोई छात्र यूनियन नहीं थी। इसके लिये कक्षा प्रतिनिधियों से जानकारी प्राप्त की गई।

15। माध्यमिक शिक्षण संस्था के एक कक्षा प्रतिनिधि से शिक्षण संस्था के बाहर की कुछ सम्बन्धित तथ्यों के बारे में जानकारी एकत्र की गई तो ज्ञात हुआ कि वह मध्यम वर्गीय सुखी परिवार एवं वैश्य जाति का है, उसकी आयु 15 वर्ष तथा 9वीं कक्षा का छात्र था। शोध विषय के बारे में उसका कहना था कि " छात्रों इस जानकारी का हमारे कक्षाध्यापक या प्रधानाचार्य को पता नहीं चलना चाहिये।" उसके विचार से प्रत्येक छात्र को शिक्षण संस्था की राजनीति में खुलकर भाग लेना चाहिये।

16। एक अन्य माध्यमिक शिक्षण संस्था के कक्षा प्रतिनिधि से सम्पर्क स्थापित किया गया। स्कूल के चौराहे पर स्थित पान की दुकान पर उससे चर्चा हुई। चर्चा के माध्यम से पता चला कि वह छात्र एक अच्छे सुखी परिवार का सदस्य है और ठाकुर जाति का है। उस 20 वर्षीय 12वीं कक्षा के विद्यार्थी के चेहरे से उम्र से अधिक प्रौढ़ता नजर आ रही थी तथा नेतागीरी की भावना झलक रही थी। वह अपनी कक्षा में लगातार 2 वर्ष से अनुत्तीर्ण हो रहा था, फिर भी कक्षाध्यापक उसको कक्षा प्रतिनिधि इसलिये बना देते थे जिससे वह अन्य छात्रों पर नियन्त्रण रख सके। छात्र सम्बन्धित तथ्यों के बारे में जानकारी एकत्र की गई तो उसने कहा कि "छात्र देश की राजनीति के बारे में हम ज्यादा नहीं जानते हैं, पर जहाँ तक हमारे कालेज का सवाल है हमारे प्रधानाचार्य महोदय सभी ज्यादा राजनीति करवाते हैं।"

अ॥ एक अन्य शिक्षण संस्था की एक छात्रा कक्षा प्रतिनिधि से शिक्षण संस्था में ही सम्पर्क स्थापित किया गया। विस्तृत विवरण से पता चला कि यह छात्रा एक मध्यम आर्थिक स्तर वाले परिवार एवं ब्राह्मण जाति की है। उसकी आयु 19 वर्ष तथा 12वीं कक्षा की छात्रा है। छात्रा से सामान्य सी चर्चा में यह बताया कि वर्तमान कार्य शोध से सम्बन्धित है इस बारे में आपकी क्या राय है? पहला तो प्रश्न उसका यह था कि "यह शोध कार्य क्या होता है।" दूसरा उसका कहना था कि " हम लोग अपने अध्ययन में व्यस्त रहते हैं और अध्ययन के बाद घर के कार्यों में भी हाथ बटाना पड़ता है, अतः राजनैतिक विषय में भाग लेने का सवाल ही पैदा नहीं होता। वैसे भी छात्र-छात्राओं को राजनीति से दूर रहना चाहिये।"

अ॥ माध्यमिक शिक्षण संस्था की एक अन्य छात्रा प्रतिनिधि से सम्पर्क स्थापित करने पर विस्तृत जानकारी से पता चला कि वह एक अध्य वर्गीय परिवार तथा ब्राह्मण जाति की है। उसके पिता किसी फैक्ट्री में सुपरवाइजर हैं, अतः आर्थिक दृष्टि से उसके अच्छे रहन-सहन का पता चलता था। उसकी आयु 19 वर्ष तथा 12वीं कक्षा की छात्रा है। जब उससे यह कहा गया कि वर्तमान जानकारी शोध कार्य के लिये एकत्र की जा रही है तो उसने कहा कि "हमारे पाठ्य क्रम में भी वनस्पति शास्त्र के विषय में परियोजनाएँ दी हैं। यदि राजनीति से शिक्षण संस्था को दूर रखा जाये तो विद्यार्थियों एवं देश का सर्वांगीण विकास हो सकता है।

अ॥ शिक्षण संस्था के एक अन्य कक्षा प्रतिनिधि जो कि निम्न आर्थिक स्तर वाले परिवार तथा पिछड़ी जाति का है, से विस्तृत जानकारी से पता चला कि वह 11वीं कक्षा का 18 वर्षीय छात्र है।

चर्चा में उनसे यह बताया गया कि वर्तमान कार्य शोध से सम्बन्धित है तो उसने सरल भाव से उत्तर दिया कि "साहब यह शोध वगैरह तो हम जानते नहीं हैं, आप तो एक-एक करके प्रश्न पूछते चलें, जो हम जानते होंगे उनका हम जवाब देंगे, और जो नहीं जानते होंगे उनका जवाब नहीं देंगे। रही बात छात्र राजनीति के सम्बन्ध में तो अपनी बात कहने का सभी को अवसर प्रदान किया जाना चाहिये।

1.8. विश्लेषण

उपर्युक्त व्यक्तिगत अध्ययनों से जो उपयोगी सूचनायें प्राप्त हुई हैं। उनका विश्लेषण तालिका (50) में दिया जा रहा है।

उपर्युक्त तालिका की व्याख्या करने से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश के विभिन्न जाति के प्रतिनिधि वर्तमान क्रीड़ा में (1:1) में प्राप्त हुये हैं जिससे स्पष्ट होता है कि व्यवसायिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों में छात्रों को शिक्षण संस्थाओं में कुछ रूप से नेतृत्व का अवसर मिला है। वर्तमान 20 व्यक्तिगत अध्ययनों में पिछड़ी जाति के मात्र 3 प्रतिनिधि प्राप्त हुये हैं, जो ब्राह्मण जाति से प्राप्त प्रतिनिधियों की संख्या से समानता रखते हैं (1:1)। आयु समूह का वर्गीकरण करने से स्पष्ट होता है कि 20 से 25 वर्ष के युवा छात्र-छात्राओं में शिक्षण संस्थाओं की राजनीति एवं देश-विदेश की घटनाओं के बारे में जानकारी है। 20 वर्ष से कम आयु के छात्र क्षेत्रों में राजनीतिक जानकारी तुलनात्मक दृष्टि से कम दिखायी है।

तालिका संख्या 150 : व्यक्तिगत अध्ययन पर आधारित उपलब्ध तथ्य

क्रम संख्या	शिक्षण संस्थायें		जाति	आयु (वर्ष)	शिक्षा	आर्थिक स्तर
1.	डी.ए.वी. महाविद्यालय	1	ठाकुर	25	एम.ए. द्वितीय वर्ष	उच्च
		2	ठाकुर	20	एम.ए. प्रथम वर्ष	निम्न
		3	ठाकुर	20	एम.ए. द्वितीय वर्ष	मध्यम
		4	पिछड़ी जाति	20	बी.ए. द्वितीय वर्ष	निम्न
		5	वैश्य	20	एम.ए. द्वितीय वर्ष	उच्च
2.	डी.ए.वी. महाविद्यालय	1	ठाकुर	20	बी.ए. द्वितीय वर्ष	मध्यम
		2	यादव	19	बी.ए. द्वितीय वर्ष	मध्यम
		3	वैश्य	22	एम.ए. द्वितीय वर्ष	उच्च
		4	जैन	22	एम.ए. द्वितीय वर्ष	उच्च
		5	पिछड़ी जाति	18-20	बी.ए. प्रथम वर्ष	निम्न
3.	वैज्ञानिक कालेज	1	वैश्य आगरा	22	एम.बी.बी.एस. चतुर्थ	उच्च
		2	ब्राह्मण आगरा	23	एम.बी.बी.एस. पंचम	मध्यम
		3	ठाकुर आगरा	21	एम.बी.बी.एस. तृतीय	उच्च
		4	वैश्य आगरा	20	एम.बी.बी.एस. द्वितीय	मध्यम
		5	वैश्य आगरा	23	एम.बी.बी.एस. फाइनल	उच्च
4.	माध्यमिक विद्यालय	1	वैश्य आगरा	15	9वीं कक्षा	मध्यम
		2	ठाकुर आगरा	20	12वीं कक्षा	उच्च
		3	ब्राह्मण आगरा	19	12वीं कक्षा	मध्यम
		4	ब्राह्मण आगरा	19वीं	12वीं कक्षा	उच्च
		5	पिछड़ी जाति आगरा	18	11वीं कक्षा	निम्न

अध्याय १

उप तैयार

1. तपीश
2. सिरीज
3. सुझाव

।। । समीक्षा

वर्तमान अध्याय पिछले सम्पूर्ण अध्यायों की एक संक्षिप्त समीक्षा है । यह उन मुख्य परिभाषाओं, क्षेत्रों एवं सिद्धान्तों का मूल्यांकन करेगा जो दुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में छात्र नेतृत्व से जुड़ी हुई है । प्रारम्भ में यह आवश्यक होगा कि नेतृत्व की मूल व्याख्याओं को समझा जाये । इस दिशा में विभिन्न दार्शनिकों के विचारों का संक्षिप्त विवरण सम्भव नहीं है । यद्यपि इस दिशा में जो वैचारिक प्रगति समय: समय: हुई है, उसका यहाँ संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

वर्तमान शोध कार्य के विषय में समय-समय पर छात्रों से चर्चा करने पर विभिन्न विचारों सामने आते रहे हैं । छात्रों के स्थायित्व बनाने के लिये वर्तमान शिक्षा को स्थायी रोजगार परक बनाने पर बल दिया जाये । पिछड़े वर्गों के आरक्षण की व्यवस्था को या तो समाप्त किया जाये या फिर उसका आधार जातीय न होकर आर्थिक रखा जाये । छात्रों, चुनावों जैसी अन्य सामाजिक समस्याओं के लिए चुना वर्ग को स्वयं पहलना चाहिए तथा विरोध करना चाहिए । असामाजिक तत्वों को विद्यालयों में प्रवेश न दिया जाये । छात्र संघ चुनावों में पैसे की बरबादी रोकी जाये तथा विद्यालयों को हिंसा का केन्द्र न बनने दिया जाये । परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति को रोका जाये ।

उपरोक्त विचारों का अधिकांश छात्र नेताओं ने सामान्य चर्चा में भी व्यक्त किया है । इनके क्रियान्वयन के लिए उन्होंने कहा कि सामाजिक और राजनीतिक चेतना एवं नेतृत्व के गुणों को विकास के लिए सभा-विद्यालयों में छात्र संघों के चुनाव आवश्यक हैं । छात्र-छात्राओं को राजनीति में रुचि रखनी चाहिए । जिले आय के अन्त राजनीतिक

वातावरण को दूर किया जा सके । छात्र स्थानीय राजनीति में भाग लेने से अपने उद्देश्य से विमुख नहीं होते हैं । बल्कि अपने आपको अच्छा तरीकों से उभारने के लक्ष्य से विमुख हो जाते हैं । आज नयी पीढ़ी को प्रगतिशील विचारों को अपनाना है और सामाजिक कुरीतियों को दूर करना है । दहेज और बलात्कार जैसी समस्यायें जो आज भी नारी का शोषण कर रही हैं, दूर करने के लिये युवकों को ही आगे आना है।इन चुनावों के विरुद्ध जन जागृति पैदा करनी है । छात्र नेताओं को ऐसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी जिससे उनका उद्देश्य छात्र नेता सप्ताह, पत्रिका प्रकाशन और राजनीति के अतिरिक्त समाज के रचनात्मक कार्यों को पूरा करना हो । छात्र संघ चुनावों में यदि छात्र आपसी प्रतिद्वन्द्वता त्याग दें तो पैसे की बर्बादी रोकी जा सकती है । सामान्य वर्ग में एक आम धारणा ने सह-शिक्षा को अधिक नहीं माना है । उनका कहना है कि छात्राएँ छात्रों के प्रभाव के कारण अपना स्वयं का व्यक्तित्व स्थापित नहीं रख पातीं तथा सह-शिक्षा अनुशासनहीनता का एक कारण है ।

छात्र संघों के चुनाव में देश के राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये । साथ ही साथ जो राजनीतिक दल अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिये छात्रों को दल का सदस्य बनाते हैं या उनका इस्तेमाल करते हैं,यह भी नहीं होना चाहिये । राजनीति में आने से छात्र शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पाते हैं । आज की राजनीति के कारण ही छात्रों में गुटबाजी, जाति-वाद एवं सैन्य की भावना पनप जाती है। प्रत्येक राजनीतिक दल इस प्रयास में रहते हैं कि देश की अधिक से अधिक छात्र शक्ति उनके साथ रहे । छात्रों को राजनीतिक दलों से सदस्य रहकर असामाजिक कार्यों का विरोध करना चाहिये । छात्रों को जातिवाद तथा क्षेत्रवाद की राजनीति का विरोध करना चाहिये । यदि ऐसा नहीं होता तो निश्चित ही आतंकवाद और अलग जैसी समस्यायें हर पल बढ़ी हो सकती हैं क्योंकि आज बीहों

की राजनीति में जितना बढ़ावा जातिवाद को दिया है उतना ही वर्ग संघर्ष पनप रहा है। शिक्षण संस्थाओं में ये सभी समस्यायें पनप रही हैं। जाति-वाद और क्षेत्रवाद की राजनीति शिक्षा एवं देश के लिये समस्या बन गई है। इसलिये राजनीति के चंगुल से शिक्षा को आजाद करना होगा। ये राज-नैतिक दल ही हैं जो अपने स्वार्थपूर्ण कार्यों में हिंसा अनुशासनहीनता, उद्दंडता आदि को बढ़ावा दिलवाते हैं। ऐसे तत्वों से प्रशासन के सहयोग से छात्रों को निपटना होगा तथा असामाजिक तत्वों के महाविद्यालय में प्रवेश का विरोध करना होगा।

विश्वविद्यालय के छात्र संघों के चुनावों में अंधाधुन्ध पैसा खर्च किया जाता है। बाहरी राजनीति उसमें प्रविष्ट हो जाती है एवं उसके कारण पढ़ाई में रुकावट होती है। इससे विद्यार्थी वर्ग का बहुमूल्य समय नष्ट होता है। अनेकों अफवाहें फैलायें घोषित होती हैं। जिसके कारण अशांति फैला होती है। इस स्थिति का निदान आज नहीं तो कल करना ही होगा ताकि शिक्षा-क्षेत्र दूषित होने से बचाया जा सके।

इस सिलसिले में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा डा० माधुरी शाह ने गुण्डागर्दी और हिंसा को रोकने तथा विश्वविद्यालय परिसरों में फैली हुई राजनीति को हटाने हेतु यह व्यवहारिक सुझाव दिया कि छात्र संघों के चुनाव समाप्त किये जायें। यह एक सुझाव है और इस पर सम्बन्धित पक्ष गम्भीरता से विचार करें। विश्वविद्यालयों में व्याप्त राजनीति हटाने का तात्पर्य है छात्र परिषद के चुनाव समाप्त करना। चुनाव के स्थान पर प्रतियोगिता के आधार पर छात्र परिषद गठित की जाये एवं उसके लिये छात्रों का मनोनयन किया जाये। अधिकांश विद्यार्थी छात्र संघों के चुनाव के कारण अध्ययन में पिछड़ जाते हैं। राजनैतिक दलों द्वारा समर्थित छात्र चुनावों में भारी खर्च करते हैं। शिक्षा मन्दिरों में अव्यवस्था, गुण्डागर्दी और हिंसा अधिकतर निहित स्वार्थों की शंका पर होती है। यही कारण है

कि कई निर्दोष छात्र ऊँची पढ़ाई में पिछड़े जाते हैं। डा० आर० का दृढ़ मत है कि प्रवीणता के आधार पर छात्रों को मनोनयन से विद्यालयों का वातावरण सुधर जायेगा और परिस्थितियाँ अनुकूल बन जायेंगी।

भारतीय अल्प संख्यक आयोग द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार छात्र अशांति के लिये बीच में निराशा और राजनीतिज्ञों द्वारा उनका शोषण उत्तरदायी है। श्री बी. एन. झुटा, जिन्होंने आयोग की ओर से अध्ययन किया है, ने पटना में कहा था कि राज्य में क्षेत्रीय राजनीतिज्ञों द्वारा दबाये जाने छात्रों के दल को अपने तरीके तथा कुछ प्रकरणों में अपने केन्द्र से अलग रखा जाना एक सामान्य बात है। युवकों की दुखद और विस्फोटक समस्या का कारण राजनीति में छात्रों की सम्बद्धता के साथ इतिहास को दुहराते हुये प्रतिदिन में चुनाव प्रचार की कार्य प्रणाली की ओर इंगित किया गया है, जिसमें छात्र राजनीतिज्ञों के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता है।

नेतृत्व के गुणों के विषय में अनेकों शोध कार्य हो चुके हैं। अनेकों विद्वान इस विषय पर अपने विचार प्रकट कर चुके हैं। जिन अनेकों गुणों का वर्णन इन अध्ययनों में मिलता है उनका वर्तमान राजनैतिक नेताओं में अभाव है। वर्तमान समय में नेताओं के प्रति समाज में अच्छे विचार देखने को नहीं मिलते हैं। यद्यपि नेता व्यक्तियों से घिरा रहता है परन्तु उस नेता के प्रति अधिकांश व्यक्तियों के मन में आदर नहीं होता बल्कि कोई न कोई स्वार्थ निहित होता है। बिना किसी स्वार्थ के व्यक्ति नेता के पास जाने से भी कतराता है जिसका प्रमुख कारण नेतृत्व के गुणों का अभाव होना है। वर्तमान

समय में यह अनुभव किया जाता है कि वही व्यक्ति तकड़ा नेता बन सकता है जिसके पास एक शक्तिशाली शारीरिक संगठन, दाव पहलवानी, कुश्ती एवं मुख्य रूप से स्वास्थ्य हो। वर्तमान वर्षों में सभी गुण वह व्यक्ति पसन्द करते हैं जिन्हें अपने स्वार्थ इन्हीं साधनों से पूरे होते दिखाई पड़ते हैं। यद्यपि आम जनता इस प्रकार के गुणों को पसन्द नहीं करती है और इसी कारण से साधारण व्यक्ति नेता शब्द को अपमान-जनक समझता है। वर्तमान समय की विभिन्न संस्थाओं में भी छात्र-नेतृत्व के विकास में यही उपरोक्त बातें अनुभव की जा रही हैं।

यह अटल सत्य है कि युवा शक्ति एक बहुत बड़ी शक्ति है। यह शक्ति सामूहिक रूप से जिस तरफ भी जायेगी आँधी-तूफान की तरह सबको बहा देगी। इस तथ्य को राजनैतिक नेता भी पूर्ण रूप से अनुभव करते हैं। आज का प्रत्येक राजनैतिक नेता तथा राजनैतिक दल इस शक्ति को स्वार्थवश अपने साथ रखना चाहते हैं। यह बात विभिन्न संस्थाओं में छात्र समितियों के चुनाव के समय पूर्ण रूप से देखी जा सकती है। ये राजनैतिक दल छात्रनेताओं को आर्थिक मदद देते हैं तथा अन्य दूसरी सहायतायें भी करते हैं। फलस्वरूप छात्र नेता इन बड़े राजनैतिक नेताओं के बल पर समाज विरोधी कार्य करते हैं तथा उनके हाथ की कठपुतली बन कर रह जाते हैं।

उपर्युक्त बातों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के देशों में नेतृत्व के तात्पर्य व्यवहारिक दृष्टि से परिवर्तित होते रहते हैं। अतः यह आवश्यक है कि नेता अथवा छात्र नेता का सही अर्थ समझा जाये।

नायक अथवा नेता शब्द का अर्थ होता है ले जाना। अर्थात् ऐसा पुरुष जो समाज अथवा समूह को दिशा प्रदान करे। यह दिशा अभीष्ट उद्देश्य की ओर लक्षित करती है। इसका अर्थ है कि अभीष्ट

उद्देश्य का निर्णय करते हैं। समूह की आवश्यकता अथवा स्वयं नेता की अन्तर्दृष्टि से ? सच्चा नायक वही है जो अपने अनुयाइयों को अन्धे से सच की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाये। जिससे अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति हो सके। असतो मां सद्गमय, तमसो मां ज्योतिर्गमय - बी. एस. मूर्ति ता० 2026। जो नेता अनुयाइयों को उन्हीं के द्वारा बनाये गये उद्देश्य की ओर ले जाता है तो यह आवश्यक नहीं है कि वह अनुयाइयों को सदैव एक ही दिशा में ले जाता हो। इसके विपरीत जो नेता अपने मन चाहे मार्ग पर अनुयाइयों को ले जाता है वह भी आवश्यक रूप से अनुयाइयों को ध्येय की ओर नहीं पहुंचाता है। जब तक की सामूहिक रूप से उचित गन्तव्य का निर्णय न हो गया हो। जो नेता केवल अपने स्वार्थवश अथवा अल्प समूह की अनुचित मांगों के दबाव में आकर अनुयाइयों को सम्पूर्ण समूह के विपरीत चलाने का प्रयत्न करता है वह व्यापक अर्थ में नेता नहीं कहा जा सकता है। वास्तविक रूप से नेता में वह प्रतिभा होती है जिसके कारण वह अनुयाइयों को अपने आदेशानुसार अनुशासन करने का भाव विद्यमान रखता है।

भारत वर्ष में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व नेता शब्द का बड़ा गौरव था। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक अथवा राजनैतिक हो। नेतृत्व के गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति को सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नेता शब्द का उपयोग केवल राजनैतिक क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया है। ऐसा कह गया है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के नेताओं के कार्य-कलाप जन आशाओं के अनुरूप नहीं रहे हैं। अनेक अवसरों पर नेताओं के आचरण संदिग्ध और कभी-कभी निन्दित रूप से प्रकट हुये हैं। इसलिये वर्तमान समय में नेता के प्रति पूर्व जैसी धारणा का लोप हो रहा है।

नेता शब्द विशेष कर नेतागिरी के संदर्भ में । ऐसे पुरुष का द्योतक बन गया है जो खद्दर की वर्दी, गांधी आदि नेताओं के नाम और दूसरे किसी प्रतिष्ठा प्राप्त बाह्य चिन्हों को धारण करके परमिट लाइसेन्स और दूसरी लाभ की वस्तुओं को दलाली, घूस एवं अधिक आदि के बल पर प्राप्त करता है । यह नेता ऊँचे-ऊँचे सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुये स्वयं अच्छे आचरणों में उत्साह नहीं दिखाते हैं । शब्दार्थ की दृष्टि से नेता जन-कल्याण के लिये नेतृत्व करने वाला है परन्तु वास्तविक रूप से व्यवहार में नेता इसके विपरीत आचरण करते हैं । इस धारणा के अनुसार किसी भी संगठित राजनैतिक दल अथवा विशेष तौर पर शैक्षिणिक संस्थाओं में विद्यार्थी वर्ग में प्रभावता रखने वाले को नेता कहा जाता है । यद्यपि अनेक स्थितियों में ऐसा नेता स्वयं सही रास्ते पर नहीं होते हैं । और न ही उनमें उचित नेतृत्व करने के गुण होते हैं । अतः वे अनुकरण अथवा आज्ञा पालन के पात्र नहीं होते हैं ।

जहाँ तक नेताओं में नेतृत्व के गुणों वाली बात है उन गुणों में सबसे महत्वपूर्ण यह है जिसके द्वारा नेता सम्पूर्ण समूह के लिये आदर्श का पात्र बन जाये । नेता को स्वयं स्वार्थ त्याग कर सामूहिक स्वार्थ को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिये । वर्तमान समय में सभी राजनैतिक नेता तथा दल छात्र समुदाय को अपने स्वार्थमय राजनैतिक मशीनरी के पुर्जों के रूप में उपयोग करने के प्रयास में लगे हुये हैं । यह विद्यार्थी समूह दिशा भूमिका है उन्हें सही मार्ग निर्देशन की आवश्यकता है जो यह नेतागण नहीं कर रहे हैं । उदाहरण के तौर पर श्री जय प्रकाश नारायण ने छात्रों तथा छात्रों को राजनीति में आमंत्रण किया था । परन्तु उचित मार्ग निर्देशन नहीं किया । जिस कारण तोड़-फोड़, लूट-पाट, गुण्डागर्दी तथा शिक्षा में व्यवधान आदि अधिक देखने को मिला । इस कारण उचित रूप से सरकार प्राप्त नहीं हो सकी है । इसी प्रकार से अन्य दूसरे राज-

नेतिकता को कुछ दलों के नाम से राजनीति में भाग ले रहे हैं तथा धर्म को साथ में लेकर चल रहे हैं। उनका सही ध्येय/मार्ग निर्धारण नहीं कर रहे हैं। उचित मार्ग निर्देशन के अभाव से छात्रों में असंतोष, अनुशासनहीनता शिक्षा के प्रति अरुचि तथा अन्य समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं तथा वह पूर्ण रूप से दिशा भ्रमित दिखाई पड़ते हैं।

वर्तमान शोध कार्य की अवधि में शोधकर्ता को छात्र नेतृत्व के आधार से अपरोक्ष बातों का अनुभव हुआ। छात्र नेताओं से आत्म चर्चा में जो विचार आत हुये उन्हें आधारक रूप कर वर्णन किया गया।

वर्तमान मशीनी मानव की उत्पादन क्षमतायें सामाजिक कारणों पर अवलम्बित है। इन सामाजिक कारणों से व्यक्ति की स्वतन्त्रता, एक दूसरे को समझने की क्षमता, अनुभव एवं आपसी व्यवहारों को नियंत्रित करने में प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः यह विषय ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन का क्षेत्र रहा है। मानव व्यवहारों को समझने के लिये हमें उन विधियों एवं सिद्धान्तों को समझना होगा जिससे मानवीय आचरणों को सरल रूप में विश्लेषित किया जा सके। यह सर्वमान्य सत्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजीकरण की प्रक्रिया के प्रथम चरण में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि मनुष्य अपने संस्कारों पर अवलम्बित है। दीर्घ जीवन के विभिन्न स्तरों में एकाकी मानव का विकास सतत प्रक्रिया नहीं है।

व्यक्तिगत प्रभावों के फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक नियंत्रण परिवर्तित होते रहते हैं। सैद्धान्तिक संस्थायें पूर्ण रूप से सामाजिक व्यवस्था की अवधारणायें हैं। शिक्षण संस्थायें विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तिगत प्रेरणायें सैद्धान्तिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन व्यक्तिगत व्यवहारों का मूल्यांकन करने की दृष्टि से पर्यावरणीय कारकों का समझना आवश्यक होगा। सैद्धान्तिक

समीक्षाओं से स्पष्ट होता है कि नेतृत्व विभिन्न कारणों से उत्प्रेरित एवं नियंत्रित होता है।

समाज मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से नेतृत्व को सामाजिक व्यवस्था का मुख्य अंग माना गया है एवं यह विभिन्न कारणों से प्रभावी होता है। व्यवहारिक दृष्टि से उपयोगी नेतृत्व एवं विभिन्न कारकों का सम्बन्ध भिन्न प्रारूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है :-

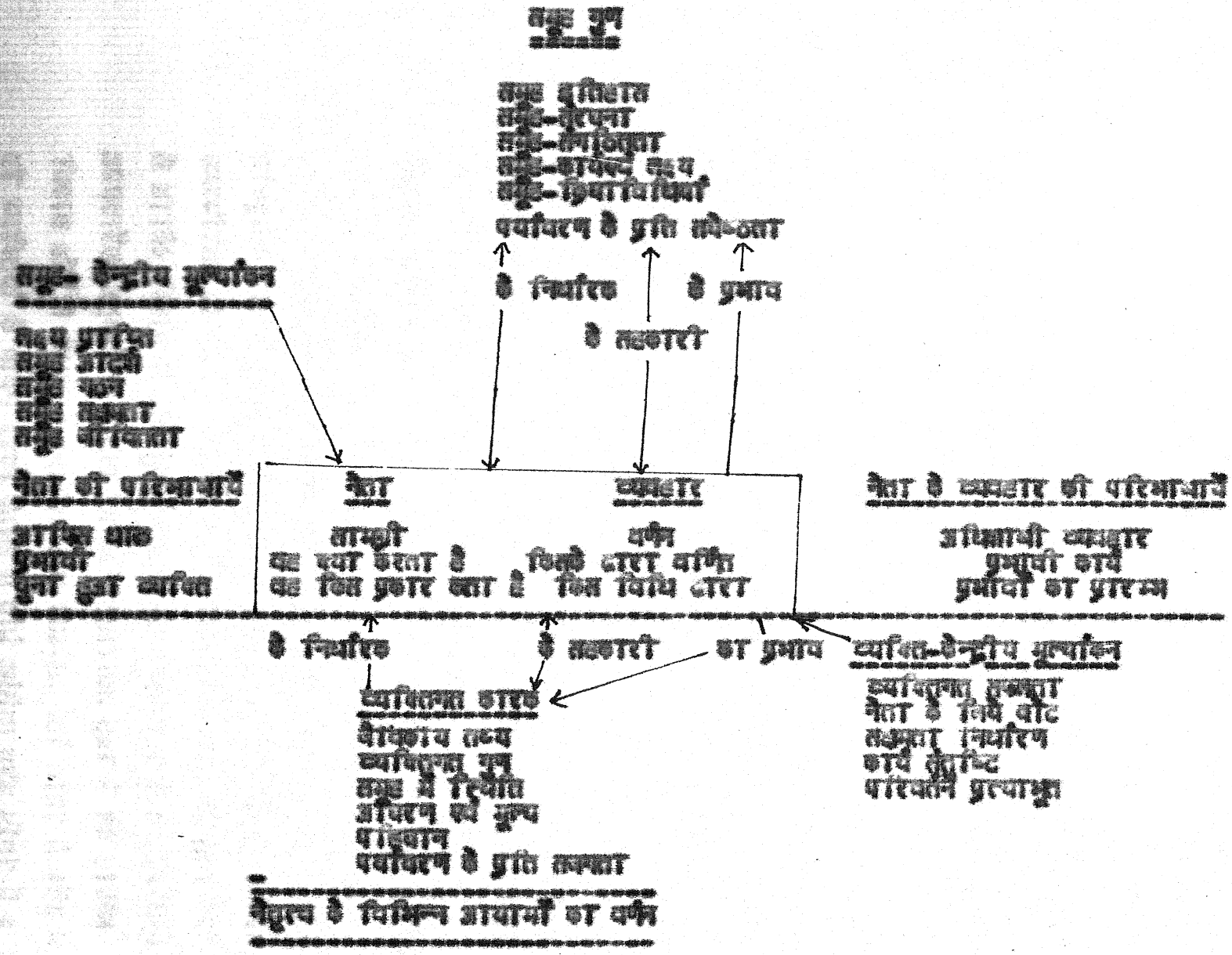
समूह गुण
समूह इतिहास
समूह-संरचना
समूह-संस्कृति
समूह-सांख्यिकीय लक्षण
समूह-क्रियात्मकताएँ
पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
के निर्धारक
के प्रभाव
के सहकारी
समूह- केन्द्रीय मूल्यांकन
लक्ष्य प्राप्ति
समूह आदर्श
समूह मूल्य
समूह सहकार
समूह बाध्यता
नेता की परिभाषायें
आकृति वाद
प्रभावी
पुना हुआ व्यक्ति
नेता
व्यवहार
तात्पर्य
वह क्या करता है
वह किस प्रकार करता है
किसके द्वारा वर्णित
किस विधि द्वारा
नेता के व्यवहार की परिभाषायें
अधिकारी व्यवहार
प्रभावी कार्य
प्रभावी का प्रारम्भ
के निर्धारक
के सहकारी
का प्रभाव
व्यक्ति-केन्द्रीय मूल्यांकन
व्यक्तिगत सहकार
नेता के लिये वोट
सहकार निर्धारण
कार्य तीव्रता
परिवर्तन प्रत्याशा
व्यक्तिगत कारक
वैयक्तिक तत्व
व्यक्तिगत गुण
समूह में स्थिति
अधिकार एवं मूल्य
पारितोषण
पर्यावरण के प्रति सहकार
नेतृत्व के विभिन्न आधारों का वर्णन

नेतृत्व सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्त समय-समय पर प्रतिपादित किये जाते रहे हैं। जिनके माध्यम से व्यक्तियों की क्रिया-कलापों अन्तः पारस्परिक क्रियाओं का मूल्यांकन किया जा सके। आधुनिक का नियंत्रण सामाजिक मान्यताओं के द्वारा जितनी सफलता से किया जा सकता है उतना किसी अन्य माध्यम से सम्भव नहीं है। अतः आज नेतृत्व से सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक कारकों के विश्लेषण का वर्तमान शोध प्रयास उपर्युक्त दिशा में एक उपयोगी कड़ी सिद्ध होगा।

विकासशील देशों में युवा आक्रोश एवं उनका निर्देशन एक दूसरे के साथ जुड़े हुये प्रतीत होते हैं। अनेकानेक छात्र आन्दोलनों को विकास रूप न मिलने पाये इसके लिये नीति निर्धारक तत्व उत्तरदायी हैं। प्रारम्भिक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति उग्र स्वभाव वाला नहीं होता है। यह उग्र स्वभाव सामाजिक कारक है और एक हद तक परिवेश उत्तरदायी होता है। राष्ट्रीय विकास की दिशा में व्यक्तियों का यह प्रभावी प्रयास रहता है कि उपलब्ध मानवीय मौलिक स्रोतों का इस प्रकार उपयोग करें जिससे अच्छे जीवन आदर्श किया जा सके। समाज के सतत परिवर्तन में प्रभावशाली व्यक्तियों का निरन्तर कार्यरत होना आवश्यक है। जिसके फलस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति सामाजिकता हो सके। राष्ट्रीय विकास की अवधारणा मात्र आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं है। अपितु इसमें सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास, राजनैतिक विकास एवं मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक विकास समावेशित होते हैं। पिछले दशकों में राष्ट्रीय विकास को मुख्य रूप से आर्थिक विकास के साथ मूल्यांकित किया जाता रहा है। विभिन्न अध्ययनकर्ताओं अनुभवों के आधार पर यह प्रतिपादित हुआ है कि आर्थिक विकास होने से सामान्य जनजीवन स्तर विकसित नहीं होता है और न ही व्यक्तियों के जीवन यापन पद्धति में कोई सकारात्मक वृद्धि होती है। इस कारण राष्ट्रीय विकास के क्षेत्रों में कुछ नहीं अवधारणाओं को मूल्यां-

चिंता करने का आधार बना प्रतीत हुई है । इनमें से मुख्य

1. बेकारी,
2. आय का असमान वितरण,
3. अमीर एवं गरीब के बीच अन्तर,
4. अशिक्षा एवं अज्ञानता,
5. पौष्टिक आहारों की कमी,
6. निम्न स्तरीय आवासीय व्यवस्था एवं अन्य सामाजिक समस्यायें,
7. सभी प्रमुख शहरी बस्तियों एवं शहर सेवाओं की समस्यायें ।

शिक्षा संस्थाओं में बढ़ती हुये उद्दण्ड आचरण की समस्या सामाजिक परिवर्तन से कारणत्व सम्बन्ध से जुड़ी है । इस संदर्भ में आधुनिक शिक्षा एवं विज्ञान को दोषित करना त्रुटिपूर्ण नहीं होगा । बढ़ती हुई आवश्यकताओं एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से कारणत्व शिक्षण संस्थाओं में दूषित वातावरण व्याप्त है । राष्ट्रीय विकास मुख्य रूप से मानव जीवन, भौतिक सुविधायें, अध्यात्म, सामाजिक मूल्यों एवं व्यक्तिगत क्रिया कलापों सैद्धान्तिक सारसम्य के साथ ही अपेक्षित हो सकता है ।

नवीन स्वतंत्रता प्राप्त देश जो धीरे-धीरे ब्रिटिश साम्राज्य के नियंत्रण से बाहर निकल रहे हैं विकास की दृष्टि से विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक राजनीतिक एवं शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित रहे हैं । इन देशों की समस्यायें गम्भीर हैं क्योंकि इनमें रहने वाले व्यक्ति समाज सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं के विरोधी नहीं हो पा रहे हैं । इस प्रकार के चलित समय में राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से शान्ति के महत्वपूर्ण योगदान को नकारा नहीं जा सकता है । राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के रूप में विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक विचारों वाले व्यक्तियों को एक स्तर पर लाने का कार्य शान्ति समुदाय समाज से कर सकता है ।

इस दुस्साहस पूर्ण कार्य के लिये छात्र वर्ग एवं शिक्षण संस्थाओं का सक्रिय योगदान सम्भवतया पर अपेक्षित रहा है। अपनी राष्ट्रीय परम्पराओं एवं संस्कृति के विकास की दृष्टि से छात्र वर्ग के अपर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। द्वितीय पुनर्वास नेशनल डेवलपमेन्ट काउन्सिल ने विकास की दृष्टि से जिन मुख्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। वह इस प्रकार है :-

(1) मानवीय स्तर के जीवन यापन के क्रम से कम साक्षर,
(2) व्यक्तियों का नियमित विकास,
(3) नारी का उचित विकास,
(4) जन्म-व्यवस्था का समान वितरण,
(5) स्वास्थ्य, पोषक, आवासीय एवं सामाजिक विकास,
(6) पर्यावरण की सुरक्षा,
(7) सक्रम शिक्षा।

वर्तमान शोध कार्य में जिन सिद्धान्तों को प्रतिपादित किये जाने का प्रयास किया गया है, वह मेधावत्व की व्याख्या करने में उपयोगी है। विभिन्न विश्लेषणों से निकाले गये निष्कर्षों के आधार पर छात्र मेधावत्व की सार्थकता पर प्रकाश पड़ता है। सामाजिक अन्वेषण में मापन एवं प्रकार पर आधारित कारक मुख्य रूप से अध्ययन का विषय होते हैं। कुछ कारकों को वैज्ञानिक अवलोकन पद्धति के माध्यम से अध्ययन करके सिद्धान्त एवं परिकल्पनायें आधारित की जाती हैं। अनेक प्राप्त निष्कर्षों एवं पुनरावृत्ति विधि से प्राप्त सार्वभौम निष्कर्षों में समान समानता होती है। एक समूह में जो विभिन्न व्यक्तियों के आपसी सहयोग से क्रियान्विता रहता है, यदि कोई अकेले पूर्ण सफलता के साथ क्रियाशील नहीं होती है। तो समूह का सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

प्रस्तुत निष्कर्षों से प्रारम्भिक परिकल्पना की पुष्टि होती है कि छात्र चेतना पर विभिन्न सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। वर्तमान छात्र वर्ग जिसके अग्र राष्ट्रीय विकास का उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य अकांक्षा है, आधुनिक शिक्षा अन्वेषणों एवं उपयोगी रचनात्मक क्रिया-कलापों में सामन्जस्य स्थापित करने में असमर्थ है। शिक्षा जो किसी जाति या वर्ग विशेष का एक मात्र अधिकार नहीं है, दिग्भ्रमित छात्र समुदाय को उचित पथप्रदर्शन प्रदान करने के लिये उत्तरदायी है।

औद्योगिक एवं तकनीकी के आधुनिक विकास में अधिकांशतः व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करने लगे हैं, एवं तथाकथित प्रचार के कारणवश अपने बच्चों को शिक्षित करने के प्रयास में जुटे हुये हैं। इस मूलभूत कारण के कारणवश वर्तमान शोध सर्वेक्षण में न्यादर्श छात्राओं में अधिकांश छात्र नेता ग्रामीण क्षेत्रों के हैं। उत्तरदातायों का अधिक प्रतिशत संयुक्त परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है। इन परिवारों में अधिकतर प्रमुख पितामह दादा एवं पिता वर्तमान शोध सर्वेक्षण में पाये गये हैं। यह इस बात का प्रदर्शित करता करता है कि पुरानी पीढ़ी आज भी संयुक्त परिवार प्रथा में विश्वास करती है। अन्य प्रकार के परिवार तुलनात्मक दृष्टि से कम पाये गये हैं। यह प्रश्न स्वाभाविक है कि वर्तमान संयुक्त परिवार प्रथा कितने समय तक जीवित रहेगी। यह एक ऐसा काल्पनिक विचार है जो विभिन्न रूप से समय के तारत्व पर निर्भर करता है।

वर्तमान शोध सर्वेक्षण में अधिकांश प्रतिशत अविवाहित छात्र नेताओं का प्राप्त हुआ है। यह विभिन्न रूप से एक अच्छी सामाजिक उपलब्धि है और इंगित करती है कि मुस्लिम समाज की सामाजिक व्यवस्था में बाल विवाहों की प्रथा तुलनात्मक दृष्टि से कम है। बाल-विवाह की प्रथा को नितान्तरूप से एक सामाजिक अभिशाप कहीं जाती है वर्तमान में इस क्षेत्र का अधिकांश क्षेत्र नहीं मानो का सकती

है । छात्र नेताओं से प्राप्त अधिकांशतः वैवाहिक जानकारियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि विजा या अन्य तरीकों द्वारा किए गये विवाहों का प्रतिशत अधिक है। छात्र नेताओं के व्यक्तिगत मतों में प्रेम विवाह को कुछ हद तक अधिक माना गया है, परन्तु अन्तर्जातीयविवाहों के सम्बन्ध में इन छात्र नेताओं के मत परम्परागत मान्यताओं पर आधारित है । इस विषय से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तिगत मूल्यों में पारिवारिक, सांस्कृतिक मूल्यों का सशक्त प्रभाव छात्र नेताओं के विचारों पर है ।

वर्तमान शोध अध्ययन में पर्यावरणीय कारकों का समग्र रूप से प्रभाव छात्र नेताओं की शिक्षा अभिरुचियों पर दृष्टिगोचर होता है । अधिकांश छात्र नेताओं के मत में शिक्षा सुधार सम्बन्धी प्रयास वैज्ञानिक तरीकों की बहुत आवश्यकता है। सम्पूर्ण सर्वेक्षित किये गये छात्र नेताओं के अनुसार शिक्षण संस्थाओं का वातावरण दूषित है और इतनी खामियाँ व्याप्त है कि उपयोगी शिक्षा के लिए आवश्यक सुविधायें उपलब्ध नहीं है । कुछ छात्र नेताओं के मत में शिक्षण विधि दूषित है, कुछ छात्र नेताओं के मत में उपयोगी पुस्तकालयीन सामग्री का अभाव है । छात्र नेताओं का एक बड़ा प्रतिशत समग्र रूप से यह कहने के लिए तैयार है कि छात्र जो वर्तमान शिक्षण संस्थायें विभिन्न दृष्टिकोणों से उपयोगी नहीं है वो उचित शिक्षा प्रदान कर सके । वास्तविक रूप से यह केवल शिक्षण संस्थाओं को दोषी सिद्ध करना ही नहीं अपितु वर्तमान सरकार की ओर भी संकेत है ।

वर्तमान सर्वेक्षण में यह अनुभव किया गया है कि उत्तरदाताओं का अधिक प्रतिशत अपने अध्यापकों से सामन्जस्य बनाये हुये है एवं उनका आदर करता है । छात्र नेताओं का अध्यापकों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार

निर्णिमा रूप से समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण उपलब्धि है। छात्र नेताओं का कुछ प्रतिशत अध्यापकों के साथ मनोरंजन करना स्वीकार करता है। वह विश्वास करते हैं कि प्राचीन गुरु शिष्य- परम्परा बौद्धिक विकास की दिशा में उपयोगी है। वास्तविक रूप से यह एक विचार था जो उत्तरदाताओं से पूछा गया इसमें कितनी सत्यता है यह कहना कठिन है, क्योंकि विभिन्न छात्र आंदोलनों के समय व्यक्तिगत रूप से कुछ छात्रों को अध्यापकों के साथ अशुद्ध व्यवहार करते हुए देखा गया है।

वर्तमान अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला है कि छात्र नेताओं का अधिकांश प्रतिशत अपनी मान्य एवं अमान्य मांगों के हेतु में छात्र - आन्दोलनों को अधिक महत्वपूर्ण है। विस्तृत विवरण प्राप्त करने पर यह जानकारी प्राप्त हुई है कि कुछ छात्र नेता व्यक्तिगत रूप से छात्र आन्दोलनों में भाग लेना नहीं चाहते हैं, परन्तु छात्र समिति के संगठन की दृष्टि से उन्हें भाग लेना पड़ता है, जिससे छात्र समुदाय में छात्र समिति की छवि प्रदर्शित हो सके।

अनुसूचियों के द्वारा व्यक्तिगत स्तर में निर्णिमा परिवर्तन पड़ता है, परन्तु पर्यवेक्षण की इस दिशा में महत्वहीन नहीं कहा जा सकता है। वर्तमान अध्ययन में छात्र नेताओं द्वारा दी गई जानकारी का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि वे अपने पड़ोस के प्रति सजग हैं। उत्तरदाताओं ने पड़ोस में रहने वाले विभिन्न व्यवसायिक व्यक्तियों के बारे में प्रभावी सूचनायें दी है। इन व्यवसायिक व्यक्तियों के सांस्कृतिक एवं अन्य सामाजिक प्रभावों से छात्र नेता निकल नहीं रह सकता है। प्रेरणा प्राप्त करने की दिशा में छात्र नेता को अपने पड़ोस के प्रति आभारी रहना चाहिए।

आयु समाजीकरण की प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुयी है। वर्तमान सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि उत्तरदाता कम आयु वर्ग वाले भिन्न अधिक पाये जाते हैं। यह सिद्ध हो चुके तथ्य के बावजूद उत्तरदाताओं में महिला भिन्न बनाने की ओर अभिरुचि दिखायी है। इस सम्बन्ध में अधिकांश उत्तरदाता अपनी महिला मित्रों को पहले परम्परागत पारिवारिक रूढ़ियों के कारण परिवार के सदस्यों से नहीं करते हैं।

वर्तमान शोध अन्वेषण की दृष्टि से प्रमुख राजनैतिक पक्षधरों का विश्लेषण विशिष्ट रूप से स्थानीय एवं राष्ट्रीय दृष्टि से गम्भीर चिन्तन है। वर्तमान अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश छात्र संस्थाओं की राजनीति में सक्रिय भाग लेते हैं। इनमें से कुछ विभिन्न राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियों की गतिविधियों से साथ जुड़े होने को स्वीकार करते हैं। विभिन्न संस्थाओं में व्याप्त अव्यवस्थाओं से उत्तेजित होकर छात्र समुदाय आन्दोलन की ओर प्रेरित होता है। जिससे उनका अधिकांश समय व्यर्थ जाता है और वह शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को अर्जित करने में सक्रिय नहीं रह पाते हैं। वर्तमान शोध सर्वेक्षण से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि वर्तमान सरकार की ओर अधिकांश छात्र नेता आलोचनात्मक दृष्टि से देखते हैं। सम्पूर्ण छात्र नेताओं के वर्तमान सर्वेक्षण से यह प्रदर्शित होता है कि अधिक प्रतिशत सम्मुलिष्ट विद्यार्थियों का है। भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश जहाँ सरकार का गठन वोट के आधार पर होता है, वोट जैसी इकाई को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। वैचारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तरदाताओं के छात्र यह स्वीकार करते हैं कि वह अपना मत उम्मीदवार की योग्यता पर देते हैं। जाति या समुदाय पर आधारित मत देने का

प्रतिशत वर्तमान अध्ययन में एक समान प्राप्त हुआ है। राजनीतिक दलों की प्रेरणा का योगदान छात्र नेताओं के विचारों से प्रदर्शित होता है। अच्छे लोकतांत्रिक प्रणालात्मक राष्ट्र के लिये नेतृत्व रूप में उम्मीदवार की योग्यता को ही प्रमुख माना जाना चाहिये।

भारत वर्ष में वयस्क मताधिकार की लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। इस दिशा में उत्तरदाताओं के मत आमन्त्रित किये गये। इन मतों के अनुसार यह दृष्टि होती है कि वयस्क मताधिकार प्रमुखता से होना चाहिए। इस सम्बन्ध में कुछ उत्तरदाताओं ने मताधिकार के लिये शिक्षा स्तर प्रयोग करने की सिफारिश की है। वर्तमान संविधान में उत्तरदाता सीमित मताधिकार के पक्ष में देखे गये हैं, फिर भी इनका प्रतिशत विरोधियों के विचारों से काफी अधिक नहीं है। तीसरे व्यवस्था के विकास के कारणवश पड़ोसी देशों के घटनाओं से दुष्टेलक्ष्य देश का विचारधी वर्ग अछूता नहीं है।

शैक्षणिक संस्थाओं के प्रशासनिक दृष्टिकोण से प्राप्त जानकारी के अनुसार स्पष्टतः निष्कर्ष है कि विद्यार्थी वर्ग विभिन्न नीति निर्धारण में अधिक प्राथमिकता चाहता है। किसी भी छात्र नेता के मत में यह प्रदर्शित नहीं होता कि छात्र यूनियनों से शिक्षण स्तर, प्रशासन एवं संस्था की सांस्कृतिक गतिविधियों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। यह प्रतिशत छात्र नेताओं के अनुसार शिक्षण संस्थाओं में छात्र यूनियनों का होना अनिवार्य है। इन छात्र यूनियनों की पारस्परिक गतिविधियों के कारणवश सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं भौगोलिक विकास सम्भव है। इस दिशा की महत्वपूर्ण जानकारी सर्वर (1970) के अध्ययन से प्राप्त होती है। इनके अनुसार यदि छात्र अधिक समय तक शिक्षण संस्थाओं में जुड़ा रहे तो वह राष्ट्रीय गतिविधियों में अधिक रुचिकर प्रदान करता

चाहता है । इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि ग्राम संस्थाओं में ग्रामों द्वारा अधिक समय व्यतीत करने की दृष्टि से उपयोगी एवं व्यवहारिक शिक्षा की आवश्यकता है । अन्यथा ग्राम में समय का दुरुपयोग करने के लिये विनाशकारी गतिविधियों की ओर उन्मुख होगा ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष डी कोठारी के अनुसार उच्च शिक्षा में नियन्त्रण की आवश्यकता है । यह तथ्य उन्होंने शिक्षा आयोग की प्रोक्षा रिपोर्ट में स्पष्ट किये है । भारतीय शिक्षा प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन की आवश्यकता है और इसकी पूर्ति लिये शिक्षा प्राप्ति का आधार निर्मित किया जाना चाहिये । प्रारम्भिक शिक्षण संस्थाओं में कार्य पद्धति पर आधारित अनुभव युक्त शिक्षा प्रणाली उपयोगी हो सकती है । माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं में व्यवहारिक दृष्टि से उपयोगी प्रशिक्षण की आवश्यकता है । उच्च शिक्षा में साधारण बौद्धिक स्तर रखने वाले विद्यार्थियों के प्रवेश को अनुचित किया जाना चाहिये । जिससे इस सम्पूर्ण व्यवस्था के कार्य स्थानीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उचित एवं सक्षम बौद्धिक क्षमता रखने वाले युवकों को पहुँच सकें । इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के लिये मूलभूत स्तर पर प्रशासनिक योजनाओं की तैयारी एवं नियमन आवश्यक है । इस समीक्षा की विवेचना करने से स्पष्ट होता है कि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अल्पसंख्यक ग्राम समुदायों के लिये एक निर्देशिका शिक्षा प्रणाली आवश्यक है जिससे ग्राम आन्दोलन की व्यवस्था का अहसास न हो सके ।

वर्तमान समय में ऐसा अनेकों जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है । इन समस्याओं के माध्यम से यह विदित होता है कि संख्या की दृष्टि से संख्यात्मक एवं अनुपातिक ग्राम समुदायों में होना आवश्यक है । यदि

अधिक ज्ञान नेतृत्व की आवश्यकता भी है तो विज्ञान संस्थाओं से सम्बन्धित अधिकारियों को छात्रों से सम्बन्धित समस्याओं का गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए। जिससे ये छात्र देश की रचनात्मक गतिविधियों में वांछित योगदान दे सकें। विज्ञान संस्थाओं के क्षेत्रों में जातिगत एवं क्षेत्रीय प्रादेशिक मान्यताओं को अत्यधिक प्रभावी नहीं होने देना चाहिये। वर्तमान समय में आदर्श छात्र नेतृत्व स्थापित करने के लिये संकीर्ण विचारधाराओं को विज्ञान संस्थाओं से दूर रखना चाहिये।

सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से राष्ट्रीय हित में उपयोगी क्रिया-कलापों के लिये प्रतिभाओं को व्यक्तिगत हितों के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं रहना चाहिये। यदि व्यक्तिगत हितों की भावना सक्रिय रहती है तो राष्ट्रीय प्रगति की कल्पना व्यर्थ है। इसलिये यह आवश्यक है कि छात्र एवं छात्रों को अविलम्ब से प्रति अधिक संवेदनशील एवं संकीर्ण विचारधाराओं से दूर रखना चाहिए। यदि कुछ अपरिहार्य कारण इस प्रक्रिया में बाधक बनें तो नीति निर्धारित सत्रों का उत्तरदायित्व अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। शिक्षाविद्, समाजसेवी एवं अन्य सामाजिक संगठन राष्ट्रहित में छात्र शक्ति का दुरुपयोग न करके उचित मार्ग निर्देशन एवं पथप्रदर्शन प्रदान करें।

12. निष्कर्ष

भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में किये गये छात्र आन्दोलनों एवं छात्र नेतृत्व के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि इस दिशा में वर्तमान समय पर किये जाने की शीघ्र प्रयास किये गये हैं अन्यथा 1973।

जिन शिक्षण संस्थाओं में अधिक छात्र आन्दोलन हुये हैं और उनका समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया उनमें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, उस्मानियां विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रमुख हैं । वर्तमान शोध कार्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र नेता कुछ विशेष गुण वाले होते हैं । इस सम्बन्ध में सहयोगी जानकारी एकत्र करने से स्पष्ट होता है कि छात्र नेताओं में सामान्यतः निम्नलिखित गुण पाये जाते हैं :-

1. निम्न शिक्षा का स्तर :- यह बात निश्चित रूप से प्रमाणित है कि माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों में आन्दोलन एवं नेतृत्व की प्रवृत्ति कला संकायों के छात्रों की तुलना में कम है । वर्तमान शोध सर्वेक्षण में अधिकांश छात्र नेता उच्च शिक्षण संस्था वाले प्राप्त नहीं हुये हैं, और वह अपनी अध्ययन गतिविधियों के सम्बन्ध में अधिक चर्चा करना उचित नहीं समझते हैं । यह तथ्य आ० 1968 रास 1969 एवं अब 1958 से 1977 तक, औ मैन 1974 बोना 1968 आदि के द्वारा दूसरी संस्थाओं से समर्थित एवं है ।

2. <u>उच्च आर्थिक स्तर</u> :- छात्र नेताओं में वर्गों की दृष्टि से अत्याधिक विभाग प्रदर्शित होता है । वर्तमान शोध सर्वेक्षण की यह उपलब्धि आ 1968 एवं बो मा 1969 के अध्ययनों से समर्थित है । बोना ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र नेताओं के बारे में कहा है कि उनमें भारतीयता बोलने की तीव्र इच्छा होती है, और अपने अनुयायियों को परिस्थितियों के अनुकूल छात्र नेता सफलता के साथ एकत्रित कर लेते हैं ।

3. प्राध्यापकों के साथ सम्बन्ध एवं उनकी राजनीतिक गतिविधियाँ

इ.आई :- वागल छात्र नेता शिक्षण संस्थाओं के प्राध्यापकों के साथ सम्बन्धित होते हैं। इसके कारण प्राध्यापकों की राजनीतिक गतिविधियों से वे पूर्ण रूप से अवगत होते हैं। वर्तमान शोध सर्वेक्षण की यह उपलब्धि है (1977), या (1969) एवं बोगा (1968) के द्वारा विभिन्न तथ्यों के साथ समानता रखती है।

4. राजनीतिक भविष्य एवं राजनीतिक दलों के साथ सम्बन्ध :- यह निष्कर्ष रूप से सही है कि वर्तमान शोध सर्वेक्षण में अधिकांश छात्र नेताओं ने राजनीतिक दलों के साथ सम्बन्धित होना स्वीकारा है, परन्तु वर्तमान अध्ययन की उपलब्धियों जैन (1974) के दिल्ली विश्वविद्यालय में किये गये सर्वेक्षण से भिन्नता है। जो जैन के अध्ययन में 66.67 प्रतिशत छात्र नेताओं ने राजनीतिक नेतृत्व ग्रहण करने की आकांक्षा व्यक्त की है, जबकि वर्तमान अध्ययन में अधिकांश छात्र नेताओं ने भविष्य में राजनीतिक गतिविधियों को अपना आधार बनाने से इंकार किया है।

5. नेतृत्व की आकांक्षा :- विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से सम्बन्धित छात्र नेताओं के वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं ने स्पष्ट रूप से शिक्षण संस्था परिसर में नेतृत्व प्रक्रिया पर गहरी आस्था व्यक्त की है। इस सम्बन्ध में कुछ छात्र नेताओं का मत था कि छात्र समितियों के चुनाव में रेन्क-ऑर्डर प्रकार का पद ग्रहण होना चाहिए। इस प्रकार के निष्कर्ष जा (1969) एवं बोगा (1968) के निष्कर्षों से भी प्राप्त होते हैं।

6. भिक्षण संस्थाओं के आस-पास निवास करने की प्रवृत्ति :-

अधिकांश छात्र नेताओं की प्रवृत्ति शिक्षण संस्थाओं के आस पास निवास करने की होती है। वह अधिकांश समय कार्यक्रमों का नियोजन एवं उनके क्रियान्वयन में व्यतीत करते हैं। यह अवधि सन् 1950 से लेकर 1970 के अध्ययनों से समानता रखती है।

वर्तमान शैक्षिक विकास की जटिल प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य के अध्ययन की दृष्टि से जिस परिकल्पना का निर्माण किया गया था कि विभिन्न सामाजिक कारकों का छात्र नेतृत्व पर प्रभाव पड़ता है, उसकी पुष्टि वर्तमान शोध अध्ययन में प्राप्त विभिन्न तथ्यों से होती है। वर्तमान शोध अध्ययन की दृष्टि से जिन मुख्य तथ्यों को निर्धारित करने का प्रयास किया गया था उसकी समीक्षा निम्न प्रकार से है :-

1. छात्र नेतृत्व का सामाजिक उद्गम :- पूर्व निर्धारित समाज मनोवैज्ञानिक मान्यताओं के अनुरूप वर्तमान शोध कार्य यह पुष्टि करता है कि छात्र नेतृत्व जटिल सामाजिक प्रक्रिया एवं सामाजिक व्यवस्थाओं से भिन्न नहीं है। सामाजिक प्रक्रियाओं एवं व्यवस्थाओं से परे रहते हुए छात्र नेतृत्व का व्यवस्थित अस्तित्व सम्भव नहीं है। छात्र नेतृत्व की प्रक्रिया पर समायोजन के विभिन्न कारक यथा आयु, लिंग, परिवार, समाज एवं पर्यावरण का सशक्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

2. छात्र नेतृत्व के प्रकार :- पूर्व निर्धारित समाज मनोवैज्ञानिक

ग्राम नेतृत्व के विभिन्न प्रकारों का आंशिक एवं परीक्षण शोध अध्ययन में विभिन्न ग्राम नेताओं के व्यक्तित्व में देखा गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न तहसीलों के क्षेत्रों में जिन ग्राम नेताओं से तथ्य एकत्र करने में सहायता प्राप्त की गई उनके व्यक्तित्व एवं अभिवृत्तियों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दीर्घकालिक एवं स्थाई ग्राम नेतृत्व की भावना का अभाव है।

3. ग्राम आन्दोलन एवं समूह विकास की धारा :-

ऐतिहासिक दृष्टि से अनेकानेक बुन्देलखण्ड क्षेत्र की विभिन्न तहसीलों में परीक्षण अवधि तक विनाशकारी ग्राम आन्दोलन नहीं देखे गये हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विनाशकारी गतिविधियों से इस क्षेत्र का ग्राम समुदाय दूर रहकर समूह विकास की धारा रहा है। यह आवश्यक नहीं की सार्वजनिक हितों की रक्षा की दृष्टि से सदैव आन्दोलन का मार्ग अपनाया जाय। सामाजिक एवं राजनैतिक सामंजस्य मौलिक धारा के अनुरूप स्थापित किया जा सकता है।

4. ग्राम नेतृत्व का समाज-आर्थिक कारकों से सम्बन्ध :-

प्रत्येक समाज में प्रभुत्व एवं नेतृत्व की दृष्टि से विभिन्न समाज-आर्थिक कारकों का योगदान रहा है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आर्थिक दृष्टि से ठाकुर एवं यादव सम्पन्न जातियाँ हैं। कार्यिका की दृष्टि से भी इस क्षेत्र में यादव एवं ठाकुर जातियों का बाहुल्य है। इन जातियों

का मुख्य आर्थिक स्रोत कृषि है । इसके फलस्वरूप वर्तमान अध्ययन में ... इन जातियों से आने वाले छात्रों का अधिक प्रतिशत उपलब्ध हुआ है । आर्थिक दृष्टि से यदि व्यक्ति को सम्पन्नता प्राप्त न हो तो विकासशील वर्ग में उसकी विभिन्न सामाजिक गतिविधियाँ प्रभावित हो जाती हैं ।

5. छात्र नेतृत्व का स्थानीय एवं राष्ट्रीय विकास के क्षेत्रों में

योगदान :- राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में शिक्षण संस्थाओं का अत्यधिक योगदान रहता है । छात्र शिक्षण संस्था की धुरी है । इसके सक्रिय योगदान के बिना शिक्षण संस्था का अस्तित्व असम्भव सा प्रतीत होता है । वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि स्थानीय सैद्धान्तिक समिति की छात्रों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों के मध्य उभर आते हैं उनका निराकरण भी स्थानीय स्तर से हो जाता है । वर्तमान समय तक की प्राप्त जानकारी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के क्षेत्रों में कोई भी छात्र समस्या राष्ट्रीय चिन्ता का विषय नहीं बनी है । यह इंगित करता है कि इस क्षेत्र का छात्र वर्ग प्रबुद्ध एवं सामुदायिक विकास के प्रति जागरूक है और इस जागरूकता से वह स्थानीय व राष्ट्रीय विकास में सक्रिय योगदान के लिए पूर्ण सक्षम है ।

6. सुझाव

समाजशास्त्रीय शोध विषय ( ) विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर सरकार से पूर्वाग्रह ग्रस्त रहते हैं । व्यक्ति एवं

पर्यावरण के बीच सामंजस्य स्थापित करने का कार्य समाज वैज्ञानिकों के द्वारा सम्भव है। छात्र नेतृत्व को मात्र तात्कालिक उग्र रूप नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि में अनेकों सामाजिक समस्यायें विद्यमान रहती हैं। भविष्य के नीति निर्धारण में यह आवश्यक है कि देश व्यापी एवं विश्व व्यापी समस्यायें वर्तमान शीघ्र शिक्षा के मुख्य पहलू पर गम्भीरता से विचार किया जाये। इसके सापेक्ष राजनीतिज्ञों का गम्भीर चिन्तन अपेक्षित है। राष्ट्रीय विकास में उपयोगी छात्र समुदायों का व्यक्तित्व हिंसा के लिए शोषण न हो।

सभी प्रजातांत्रिक देशों में यह कहावत है कि आज का छात्र कल का भावी नागरिक है। स्वतंत्रता की पूर्व की पीढ़ी ने कई वर्षों के निरन्तर संघर्ष के पश्चात वर्तमान प्रजातांत्रिक रूप को प्राप्त किया है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत ऊँच नीच का भेद मिटाकर सभी नागरिकों को समान अधिकार की व्यवस्था की गई है। आज का छात्र व्यक्तित्व योग्यताओं के कारण राष्ट्रहित में महत्वपूर्ण योगदान रखता है, इसकी निरन्तरता इस बात पर निर्भर करती है यह शिक्षा उच्च एवं गतिशील है। प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को दीर्घायु करने की दिशा में विभिन्न संस्थाओं एवं छात्र वर्ग का योगदान कम्य समझा जाएगा। व्यक्ति की पहली हुई आदर्श परम्परायें स्वीकारने के साथ-साथ प्राचीन मूल्यों की रक्षा करना चाहिये। विभिन्न सामाजिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से निरन्तर आविष्कार हो रहे हैं, एवं इन आविष्कारों के फलस्वरूप मानव मनोवृत्ति परिवर्तित प्रतीत होती है। इन परिवर्तनों के अनुरूप ही व्यक्ति दिशा भ्रमित नहीं होना चाहिये और उसी से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका आचरण व्यवहार एवं गतिविधियाँ नैतिक मूल्यों के अनुकूल होंगी। इस अवधारणा में व्यक्तित्व हिंसा को सर्वोपरि

नहीं माना जाना चाहिये, अपितु सार्वभौमिक हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। वर्तमान समय में विश्व में अनेक समुदाय आ गये हैं। व्यक्तित्व की दृष्टि से दो व्यक्ति भिन्न होते हैं। और उनके लक्ष्य विभिन्न होते हैं, सार्वभौमिक हित में सामंजस्य स्थापित करते विभिन्न व्यक्तित्व वाले व्यक्ति निर्धारित लक्ष्य की ओर सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। वर्तमान समय में यदि विकसित राष्ट्र की परिकल्पना करना है तो छात्र समुदाय को उचित शिक्षा के अवसर प्रदान किये जाना चाहिये। राष्ट्रहित में छात्रों को नेतृत्व गुण विकसित करने की सुविधा होना चाहिये। राष्ट्र व्यापी विभिन्न गतिविधियों जैसे नीति निर्धारण आदि में छात्र हितों को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिये। छात्रों में सामुदायिक विकास, गम्भीरता एवं अपने कार्य के प्रति लगन की आवश्यकता से सम्पूर्ण मानवता का विकास होगा।

उपर्युक्त सिद्धान्त का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि भविष्य सम्बन्धी राष्ट्रीय गतिविधियों में छात्र प्रतिनिधित्व आवश्यक सा प्रतीत होता है। छात्रों को यह जानना चाहिये कि वे देश के लिये किस प्रकार मददगार एवं उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। उनको दृढ़ संकल्प यह हो जानी चाहिये कि उनके सोचने का तरीका व्यापक हो। परम्परागत वादविवाद, प्रदेशवाद एवं क्षेत्रीय तंगदिली भावनायें जो कि व्यक्ति के आचरणों में विद्यमान है, वर्तमान परिवेश में निष्प्रभावी होना चाहिये। वार्षिक बजट, जिसमें सामाजिक प्रगति का ह्रास होता है, को आगामी वर्ष से सुधार कर राष्ट्रहित में बाधक नहीं होने देना चाहिये। व्यक्तियों में यदि एक सूत्र की भावनाओं को आदर करने की प्रवृत्ति का विकास होगा, तो भी जैसी संकीर्ण विचार धारा को विकास का बाधक नहीं बनाया जा सकता है।

तकनीकी विकास के कारण विश्व के विभिन्न देश एक दूसरे से जुड़े हुये हैं इसलिये यह आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय विचारधारा का विकास किया जाये। आपसी हितों के सारभौमिक तथ्यों को समझने के लिये यू.एन.ओ. के सभी प्रयास उल्लेखनीय हैं। इस दिशा में भारतवर्ष मुख्य भूमिका प्रदान कर रहा है। इन प्रयासों से मानव प्रवृत्ति को विभिन्न क्षेत्रों में नई दिशायें प्राप्त हुई हैं।

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को अनुपयोगी मानकर नहीं छोड़ा जा सकता है। जीवन में चरित्रहीन व्यक्ति निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने में असफल होते हैं। चरित्र निर्माण केवल उपदेश सुनने या किताबें पढ़ने से ही अर्जित नहीं होता है अपितु इसके लिये व्यक्तिगत क्रियाकलाप उत्तरदायी होते हैं। व्यक्ति को अच्छे आचरणों की उपयोगिता समझना चाहिये। विवेकशीलता के द्वारा किये गये कार्यों से विनाश की ओर व्यक्ति की प्रवृत्ति अवरोधित होती है। इन बुराईयों को दूर रखने के लिये छात्र वर्ग को प्रभावी छात्र सेवाओं को रचनात्मक क्रिया कलाप में संलग्न रहना चाहिये चाहे वे और इस प्रकार के कदम उठाने चाहिये कि छात्र वर्ग अनुत्पादक गतिविधियों, उत्तेजनात्मक बन्दियों, साहित्यों एवं व्यक्तिगत आवेदों से दूर रहकर शिक्षण संस्थाओं की गरिमा बनाये रख सकें। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आचरण ही एक मात्र ऐसा आधार है जिससे सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना सम्भव है।

व्यक्तिगत आचरणों के साथ-साथ सुनियोजित ढंग से कार्य करने की पद्धति भी आवश्यक है। आडम्बरी विचारों वर्ग सुनियोजित रूप से अधिक आकर्षित करता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल

शिक्षा होता है। इस संदर्भ में शिक्षा प्राप्त छात्रों के भविष्य के बारे में उल्लेख करना अधिक तर्क संगत नहीं होगा। पारिवारिक एवं सामाजिक आर्थिक स्थापित्व के लिये छात्र वर्ग को अनुशासन प्रिय एवं आज्ञाकारी होना आवश्यक है।

भारतवर्ष जैसे विकासशील राष्ट्र में छात्र असन्तोष की समस्या ने विकराल रूप ले लिया है। यद्यपि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के छात्र प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय गतिविधियों के प्रति अधिक असंतोष प्रकट नहीं किया है, परन्तु छात्र असन्तोष की समस्या शिक्षा विदों एवं समाजशास्त्रियों के लिये महत्वपूर्ण शोध का विषय बनी हुई है। इस दिशा में सुदृढ़ समितियों का स्थापन निर्माणात्मक रूप से छात्र गतिविधियों को नियन्त्रित करने में सक्षम हो सकता है। छात्र समितियों के माध्यम से सांस्कृतिक एवं सामूहिक विकास के कार्यों का संचालन यदि होता रहे तो विभिन्न शिक्षण संस्थाओं का अधिकांश छात्र प्रतिनिधि विनाशकारी गतिविधियों के लिये प्रेरित नहीं हो सकता है। इसके साथ छात्र वर्ग को यदि आर्थिक संरक्षण भी प्राप्त हो जाये तो छात्र आक्रोश जैसी गम्भीर समस्या का उचित निदान सम्भव है।

समाजीकरण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान करने वाली परिवार एवं समाज व्यवस्थायें छात्र आक्रोश नियन्त्रित करने के लिये अत्यधिक उपयोगी हो सकती है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उचित बौद्धिक विकास के साथ-साथ परम्परागत संस्कृति एवं संस्कार, आर्थिक सुरक्षा एवं भविष्य की सुरक्षा प्रदान किये जाने से सम्बन्धी छात्र आक्रोश को नियन्त्रित किया जा सकता है। यदि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व शान्ति की चर्चा की जाती है तो इसका बौद्धिक आधार छात्र समुदाय के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो

सकता है। व्यक्ति की गतिशीलता बेकारी एवं सामाजिक दृष्टि से नियन्त्रित रहते हुये दीर्घावधि हो सकती है। निर्धारित समाज मान्यताओं के प्रति सीधा आक्रोश सामाजिक प्रगति में अवरोधक है। इसीलिये व्यक्ति द्वारा पहले किसी भी अपव्यवहार के प्रति अरुचि नहीं दिखाना चाहिये अपितु उसको भली-भाँति समझने का प्रयास किया जाना चाहिये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शैक्षिक संस्थाओं की संख्या में चित्त्यकारी वृद्धि हुई है। वास्तविकता क्या है आज तिक में कितने कार्य किये गये हैं। यह गम्भीरता से विवेचना का विषय है। संविधान निर्माण के पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में अनगिनत शैक्षिक विकास कार्यक्रम बनाये गये हैं। दुर्भाग्यवश राजनैतिक प्रदूषणता के कारण आज का शिक्षा प्रतिमान इन शैक्षिक कार्यक्रमों से लाभान्वित हुआ है, कहना कठिन है। नीति निर्धारक तत्वों का यह प्रयास कि शिक्षा आज उपयोगी हो मात्र आकर्षी कार्यवाही है। इन कार्यक्रमों में वित्तीय रूप से धन की बहुत बड़ी मात्रा का दुरुपयोग किया गया है। शिक्षा कार्यक्रमों पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं पर व्यय किये गये धन का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि क्रमशः 153, 256 व 560 करोड़ रुपये की राशि खर्च करने के बावजूद भी शिक्षा प्रतिमान कम ही लाभान्वित हुआ है।

जिस दो दशकों में यह प्रयास किया गया कि विभिन्न शिक्षण एवं प्रशिक्षण विद्यालयों में शिक्षारत विद्यार्थियों को विषय चयन प्रक्रिया के लिये निर्देशित किया जाये। जिससे वह भावी जीवन में जीविकोपार्जन के साधन सुलभता से अर्जित कर सके और राष्ट्रीय विकास में सक्रिय योगदान दे सके। सभी प्रान्तों में इस प्रकार के ब्यूरो स्थापित किये गये हैं। बढ़ती हुई विद्यार्थियों की संख्या वास्तविक रूप से

छात्र प्रगति में बाधक प्रतीत होती है । उपर्युक्त वर्णित अवधारणाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छात्र आन्दोलनों को यदि शिक्षण संस्थाओं से दूर रखना है तो छात्र समुदायों के वास्तविक हितों को सही दिशा में क्रियान्वित करना होगा । इस संदर्भ में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संस्थाओं का सक्रिय योगदान अपेक्षित है । व्यवस्थित रूप से यह अनुभव किया गया है कि छात्र हित में कुछ कार्यक्रम क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जाना चाहिये ।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का स्तर एक समान होना चाहिये । राष्ट्र के सम्पूर्ण विश्वविद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों में एक सी शिक्षण वस्तु होना चाहिये । प्रत्येक शिक्षण संस्था में आवश्यक सुविधा, निशुल्क शिक्षा एवं छात्रवृत्ति की उपयोगी योजनायें गतिशील रहना चाहिये । इतना आवश्यक है कि इस बात के भी प्रयास होना चाहिये जिससे इन योजनाओं के कार्यान्वयन वास्तविक छात्र को सामान्यतः हो सकें । छात्र आन्दोलनों की स्थिति नियन्त्रित करने के लिये सरकार राजनीतिज्ञों एवं शिक्षाविदों को सामाजिक वार्ता करना चाहिये । समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इन आन्दोलनों को शिक्षण संस्था में अधिक समय तक न चलने देना ही शिक्षा के विकास में उपयोगी है । यद्यपि कभी-कभी प्रशासन के अदूरदर्शिता पूर्ण रवैये से निर्दोष छात्रों का अहित होता है । फिरभी प्रशासनिक नियन्त्रण आन्दोलनों की दिशा में उचित योगदान करते हैं । छात्र आन्दोलनों की किसी भी कठिनाई के समय प्राचार्य, प्राध्यापकों, प्रशासनिक अधिकारियों, छात्र नेताओं एवं सरकार के मध्य वार्ता से उपयोगी हल निकाले जा सकते हैं । शिक्षा पद्धति जिससे कि अनेक छात्र असन्तुष्ट हैं, को भी पुनरावलोकन करके सुविधोपयोगी करना चाहिये । वर्तमान शिक्षण संस्थाओं की यह भी समस्या है कि प्राध्यापकों का कुछ प्रतिशत विषय सामग्री को उचित ढंग से नहीं पढ़ाते हैं । जिससे

छात्रों का एक वर्ग कक्षाओं के बाहर अनियन्त्रित रूप से उद्दण्ड कार्यवाहियों में संलग्न रहता है। इस दिशा में प्राध्यापकों को उचित प्रकार से व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिये। जिससे वह शिक्षण सामग्री को सुरुचि पूर्ण तरीके से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने एवं समझाने का प्रयास करें कि इस सामग्री में बौद्धिक एवं राष्ट्रीय विकास सम्भव है।

छात्र समुदाय को दिशाहीन करने में राजनीतिक नेताओं एवं दलों को उपेक्षणीय नहीं कह सकते हैं। अधिकांश छात्र शिक्षण संस्थाओं में जब छात्र समितियों के चुनाव होते हैं तब स्थानीय व प्रादेशिक राजनीतिक नेताओं की गतिविधियाँ शिक्षण संस्था के परिसर में भी देखी जा सकती हैं। स्वतन्त्रता के आन्दोलन में छात्र समुदाय का आवाहन राष्ट्र हित में किया गया था। परन्तु वर्तमान समय में व्यक्तिगत हितों को प्रमुख मानकर विभिन्न राजनीतिक नेता समय-समय पर छात्र वर्ग को उत्तेजनात्मक व्याख्यान देते हुये सुने जाते हैं। वस्तुतः में यही वह अवस्था है जब छात्रों के बड़े समूह को दिशा भ्रमित होने से रोकने के लिये कठोर नियन्त्रण की आवश्यकता है। जैसा अब स्वतन्त्रता प्राप्त कर ही चुका है तब यदि यह छात्र शक्ति रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित की जाये तो राष्ट्रीय विकास के लक्ष्य को अर्जित करने में कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होगी। इसका नवीन उदाहरण स्वर्गीय जय प्रकाश नारायण के द्वारा 1955-56 में बिहार में चलाये गये छात्र आन्दोलन में देखने को मिलता है। वास्तविक रूप से यह आन्दोलन विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध चलाया गया था, और इस आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों की अराजकता को समाप्त करना था। जिस छात्र समुदायों ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया उसी सम्बन्धित छात्र नेता उचित रूप से मार्ग निर्देशित न होने के कारण छात्र समुदाय को नियन्त्रित न कर सके। जिसके फलस्वरूप विनाश व तोड़फोड़ की भी कार्यवाही छात्रों द्वारा इस

समय की गई उनकी त्रिकालस्थायित्व प्राप्ति के 37 वर्षों के अन्तराल में अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है।

उपर्युक्त वर्णित संक्षिप्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विश्व शान्ति और राष्ट्रीय, क्रान्ति छात्रों के माध्यम से तभी सम्भव है जबकि उन्हें शैक्षणिक, प्रशासनिक, राजनीतिक एवं धार्मिक दृष्टि से समय-समय पर रचनात्मक कार्यों के लिये प्रेरित किया जाये। भारतवर्ष जैसे देश की शिक्षण संस्थाओं में छात्र नेतृत्व की समस्या एक बड़ी जटिल समस्या है। इसमें केवल व्यक्तित्व गुण, स्थिति की प्रवृत्ति तथा समूह के उद्देश्य ही सम्मिलित नहीं होते, अपितु प्रशिक्षण की समस्या भी सम्मिलित है। व्यक्तियों द्वारा विभिन्न कार्य दक्षतायें प्राप्त करने में जिस प्रकार प्रशिक्षण उपयोगी होता है, उसी प्रकार प्रशिक्षण के द्वारा नेतृत्व सम्बन्धी दक्षताओं को भली-भाँति अर्जित किया जा सकता है। वर्तमान शोध अध्ययन से छात्र नेतृत्व से सम्बन्धित पुनर्स्थापन के कार्यों के लिये नवीन दिशा प्राप्त होती है। परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों का वर्तमान परिस्थितियों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने का दायित्व समाजशास्त्रियों शिक्षाविदों एवं राजनीतिज्ञों का है। व्यवहारिक स्तर पर समाज के हर वर्ग को छात्रों के समक्ष आना होगा। वृहद रूप से सकारात्मक विचारधारा सांस्कृतिक विकल्प प्रस्तावित किये जाना चाहिये। इस प्रकार की सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता है। जिससे देश की अक्षुण्णता स्थापित रह सके। वर्तमान परिस्थितियों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि छात्रों की समस्याओं के प्रति उपेक्षा का आभास न होने दें एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में इनकी समस्याओं का निराकरण करें। इस दिशा में राजनीतिक जागरूकता अत्यन्त आवश्यक है। जिसके उपयोग में लाकर उपयोगी छात्र संस्थाओं का कार्य कलाप दूषित न हो और शिक्षा अर्जन के महान लक्ष्य से अधिकांश छात्र समुदाय वंचित न रह सके। यदि हम ऐसा करने

में अग्रसर रहते हैं तो विश्व के विभिन्न देशों की शिक्षण संस्थाओं में तरतम्बन्धित अभियन्त्रिकाओं की जो घटनायें हैं उनमें अपनी गणना करवाने के लिये बाध्य होंगे। यदि इस दिशा में वांछित तत्परता नहीं बरती गई तो सांस्कृतिक मूल्यों की संपदा से प्राप्त गौरव को हम सदैव के लिये खो देंगे।

=:=:=:=:=:=:=:=:=

सन्दर्भ सूची

REFERENCES

Ackrson, L. 1942. Children's behaviour problems : Relative importance and intercorrelations among traits, Chicago University, Chicago.

Agrawal, S.D.(Maj.) 1965. 'Random Thoughts on Leadership'. The Cadet, Vol.XVI. pp. 49-55. Kanpur Printing Press, Delhi.

Agger, R.E. 1956. ' Power Attributions in the Local Community: Theoretical and Research Consideration'. Social Forces, Vol. 34. pp. 322-331.

Agger, R.E. and Goldrich, D. 1958. 'Community Power Structures and Partisanship'. American Sociological Review, Vol. 23. pp. 383-392.

Ahluwalia, S. 1963. 'Student Movement in India : A Historical Background'. Unpublished Manuscript, pp. 22.

Aiken, H.D. 1948. ' Moral and Political Philosophy'. (Ed.) David Hume's. New York, Hafner Publishing Co.

Altbach, P.G. 1967. A Select Bibliography on Student, Politics, and Higher Education. Cambridge: Harvard University Press.

Altbach, P.G. 1968. ' Student Politics in Bombay'. Bombay and New York : Asia Publishing House.

Altbach, P.G. 1968. 'Turmoil And Transition'. 'Higher Education and Student Politics in India'. Basic Books, Inc., Publishers, New York.

Altmann, J. 1974. Observational Study of Behaviour : Sampling Methods. Behaviour X LIX 3-4. pp. 227-267.

Ardrey, R. 1966. The Territorial Imperative. New York: Dell.

Ausubel, D.P. 1950. 'Problems of adolescent adjustment'. Bull. nat. Assoc. Second Sch. Principals, 34, pp. 1-84.

Baker, H.J. 1945. 'Mental Hygiene Problems of Adolescent Boys'. Nerv. Child, 4, pp.. 151-158.

Bandura, A. 1965. Influence of models reinforcement contingencies on the acquisition of imitative responses. J. of personality and Social Psychol. pp. 589-595.

Bandura, A. and Auston, A.C. 1964. Identification as a process of incidental learning. J. of Abn. Social. Psychol. pp. 1-9.

Bandura, A. and Walters, R.H. 1963. Social learning and personality development. New York: Holt, Rinehart and Winston.

Banham, K.M. 1952. 'Obstinate Children are adaptable'. Ment. Hyg., N.Y., 36. pp. 84-89.

Barnes, H. 1928. 'Leadership and propaganda. In Graves, W.B. (Ed.). 'Readings in public opinions. New York: Appleton-century.

Bass, M. 1960. 'Leadership, Psychology, and Organizational Behavior; New York: Harper & Row.

Basu, A. 1974. The Growth of Education and Political Development in India, 1898-1920. New Delhi: Oxford University Press.

Bentz, V.J. 1950. In R.Y.Norris and M. Seeman, (Ed.) 'The problem of Leadership: An Interdisciplinary Approach'. American Journal of Sociology. 56. pp. 149-155.

Bennett, J.W. and Tumin, M.M. 1948. 'Social Life'. New York: Knopf.

Berkowitz, L. 1953. An exploratory study of the roles of aircraft commanders. HRRC. Research Bull. pp. 53-65. San Antonio, Texas.

Bernstein, I.S. 1970. Primate status hierarchy. In 'Primate Behaviour' (Ed.) L.A. Rosenblum. Academic Press, New York pp. 71-109.

Bogardus, E.S. 1934. 'Leaders and Leadership'. New York: Appleton-Century.

Benjean, M. and Olsen, D.M. 1964. 'Community Leadership: Directions of Research'. Administrative Science Quarterly. Vol. 9. pp. 278-300.

Bernald, L.L. 1926. 'The Development of Methods in Sociology'. pp. 306.

Bose, P.K. 1977. 'Higher Education At Cross Roads'. Calcutta: The World Press Private Ltd.

Brown, C.C. and Cohen, T.S. 1958. The Study of Leadership. Dawn Ville, Illinois: Interstate Printers. pp. 1.

Burns, T. 1954. 'Psychology and Leadership'. Ft. Leavenworth, Kan. Command and General Staff School Press.

Carter, J.H. 1952. Military Leadership. Military Rev., 32, pp. 14-18.

Carter, Launor F. 1953. 'Group Relations at the Crossroads'. New York : Harpers pp. 262.

Cary, N.E. 1948. 'Looking at teen-age problems'. J. Home Econ., 40. pp. 575-576.

Cheney, T. 1949. 'A method of identifying problems of high-school students'. Communications, 27. pp. 387-390.

Cline, E.C. 1941. 'Social implications of modern adolescent problems'. Sch. Rev., 49. pp. 511-514.

Conway, M.M. 1915. 'The crowd in peace or war'. New York : Longmans, Green.

Count, E.W. 1958. The biological basis of human sociality. Amer Anthropologist, 60. pp. 1049-1085.

Das, S.L. 1958. Agitation of 1958. Benares : Bartiaras Hindu University Press, n.d.

Davis, A. 1944. 'Socialization and adolescent personality'. 43dyear b. nat. Soc. stud. Educ. Pt. 1. pp. 198-216.

Desai, A.R. 1954. ' Social Background of Indian Nationalism'. Popular Prakashan, Bombay.

Di. Bona, 1967. 'Indiscipline and Student Leadership in an Indian University, in S.M. Lipset (Ed.) Student Politics. New York: Basic Books. pp. 388.

Di. Bona 1969. 'Change and conflict in the Indian University! Durham, N.C. Duke University.

Di. Bona, J 1970. 'Comparative Education and Area Studies : A Theoretical Synthesis for Analysing the Indian University'. Interpersonal Development. 1. 167-194.

Drucker, A.J 1951. ' How old,emotionally, are Seventh and eighth graders?' Stud. Higher Educ., Purdue Univ., 79. pp. 69-78.

De Souza, A. 1978. 'The Politics of Change and Leadership Development'. Manohar Publications, New Delhi.

Dollard, J. 1939'. 'Frustration and aggression', New Haven, Conn. : Yale University Press.

Elder, J.W. 1978. 'Socialization to national Identification and Civil participation'. A survey of boys from two district in India. The Eastern Anthropologist Vol. 31 No. 4. pp. 413-432.

Elliott, C. M. 1972. ' The Problem of Autonomy : The Osmania University Case'. in Susanne M.Rudolph and Lloyd I : Rudolph (Eds.), Education and Politics in India. Cambridge, Mass.: Harvard University Press. 1972. pp. 273-309.

Elliott, C. M. 1972. 'The Problem of Autonomy : The Osmania University Case'. In Susanne Hoeber Rudolph and Lloyd I. Rudolph Education and Politics in India. Cambridge : Harvard University Press pp. 285.

Elliott, M.A. and Merril, F.E. 1961. Social Disorganization. 4th Edition. New York. Harper and Brothers.

Fisher, S. and Rubinstein, I. 1956. 'The effects of moderate sleep deprivation on Social influence in the autokinetic situation', Amer. Psychol., 11. pp. 411 (Abstract).

Fisher, M.W. and Sondurent, J.V. 1956. 'The Impact of Communist China on Visitors from India' Far Eastern Quarterly, XV pp. 261-263.

Finn, J.F. 1950. 'A study of the problems of certain Catholic high-school boys as told by themselves and their teachers'. Washington, D.C. Catholic University of American Press.

Fleege, V.H. 1945. 'Self-revelation of the adolescent boy'. Milwaukee, Wis. : Bruce.

Fleishman, E.A. 'Leadership climate, human relations training and supervisory behaviour. Personnel Psychol., 6. pp 205-222.

Form, W.H. and Sauer, W.L. 1966. 'Organized Labour's Image of Community Power Structure'. Social Forces, Vol. 38, pp. 332-341.

Frank, L.K. 1949. 'This is the adolescent' Understanding the Child, 18,pp. 65-69.

Freeman, L.C. 1963. 'Locating Leaders in Local Communities'. A comparison of some Alternative Approaches'. American Sociological Review. Vol. 28. pp. 791-798.

Gelfand, D.M. 1962. 'The influence of self esteem on rate of verbal conditioning and social matching behaviour.' J.of Abn. and Social Psychol. pp. 259-265.

Gardner, L.P. 1947. 'An analysis of children's attitudes towards father's'. J. genet. Psychol., 70. pp. 3-28.

Garrison, K.C. and Cunningham, B.V. 1952. 'Personal problems of ninth grade pupils'. Sch. Rev., 60. pp. 30-33.

Gaudimo, R.L. 1965. 'The Indian University'. Bombay : Popular Prakashan. pp. 218.

Gewirtz, J.L. and Baer, D.M. 1957-58. 'Deprivation and Satiation of social reinforcement drive conditions'. J. of Abns and Soci. Psychol., pp.165-172.

Gibb, C.A. 1947. 'The Principles and Traits of Leadership'. J.Abn. and Soci.Psychol. Vol.XLII. pp. 267-284.

Gibb, C. A. 1950. 'The research background of an interactional theory of leadership'. Australian J.Psychol., Vol.2. pp. 19-42.

Gibb, J.R., Platts, G.N. and Miller, L.E. 1951. Dynamics of participative groups. St. Louis: J.S. Swift.

Glaser, E.S. 1968. 'Student Power in Berkeley'. in confrontation, (Eds.) D.Bell and Irving Kristol, N.Y. Basic Books. pp. 5.

Golembiewski, R.T. 1962. 'The small Group: An Analysis of Research concepts and Operations'. The University of Chicago Press Chicago. pp. 130.

Gouldner, A.W. 1950. 'Studies in Leadership'. New York: Harper and Brothers. pp.31.

Gouin, E.B. 1920. 'The executive and his control of men'. New York'. Macmillan.

Gustykunz, H. 1954. 'Organizational development and restrictions in communication'. Carnegie Inst. of Teach., Pittsburgh, Pa.

Hackmann, R.C. and Nunn, R.G. 1950. 'Are leaders and followers identified by similar criteria.' Amer. Psychol., 5. pp. 312.

Hacker, F. J. and Geleerd, E.R. 1945. 'Freedom and authority in adolescence'. Amer.J.Orthopsychiat. 15, pp. 621-630.

Haefner, D.P. 1956. 'Some effect of guilt arousing and fear arousing persuasive communications on opinion change.' Amer. Psychol., 11. pp. 359. (Abstract).

Halpin, A.W. 1964. 'Evaluation through the study of leaders Behaviour'. In C.G. Kemp (Ed.) Perspective on the Group Process : A Foundation for counseling with Groups. Boston : Houghton Mifflin Company. pp. 263.

Hall, G.S. 1904. 'Adolescence'. New York : Appleton-Century-Crofts.

Hauser, P.M. and Duncan, O.D. 1959. 'The study of population'. Chicago : University of Chicago Press.

Havighurst, R.J. 1950. 'Developental tasks and education'. New York : Longmans, Green.

Hobbs, C.W. and Gregory, L.W. 1946. 'Problems of normal college students and their families'. Sch. & Soc., 63. pp. 355-358.

Haire, G.A. and Miller, G.A. 1951. 'Problem solving by small groups using various communication nets' J. of Abn. Social. Psychol., 46. pp. 327-335.

Hollingworth, L.S. 1928. 'The Psychology of the Adolescent'. New York : Appleton-Century-Crofts.

Homans, G.C. 1950. 'The human group'. New York: Harcourt, Brace.

Hunter, F. 1953. ' Community Power Structure : A study of decision makers'. Chapel Hill, N.C.: University of North Carolina Press.

Hunter, M.A. and Morgan, D.H. 1949. 'Problems of College Students'. J.educ. Psychol., 40. pp. 79-92.

Harlock 1955. 'Adolescent Development'. McGraw Hill Book Company, Inc. New York-London.

Jain, P.C. 1974. 'Vidyarthi Andolan Ke Pramukh Sidhanta : Bhartiya Sandarbh Main Ek Mulyankan. Samaikk. pp. 15-24.

Johnson, H.M. 1966. 'Sociology : A systematic introduction (Ed. R.K. Merton)'. Allied Publishers Pvt. Ltd. Bombay, Calcutta, New Delhi, Madras.

Jocelyn, I.M. 1952. 'Social pressures in adolescence'. Soc. Case Work. 33. pp. 187-193.

Kamat, A.R. and Deshmukh, A.G. 1963. 'Wastage in College Education'. Asia Publishing House. Bombay.

Kaufmann, H.F. 1959. 'Toward and interactional conception of community social forces. Oxf. Univ. Press. pp. 8-17.

Karve, I 1975. 'Hindu Samaj Aur Jati Byawastha'. (Trans. Gopal Bharadwaj) Orient Longman.

Kimball, S.T. and Pearshall, M. 1955. 'Event Analysis as an Approach to Community Study'. Social Forces. 34. pp. 58-63.

Kirkpatrick, M.E. 1952. 'The Mental hygiene of adolescence in the Anglo-American Culture'. Ment. Hyg., N.Y., 36, pp. 394-403.

Koch, H.C. 1943. 'Shifting emphasis in the problems of pupils in certain Michigan high-schools'. Sch. Rev., 51. pp. 79-84.

Kuhlen, R.G. 1952. 'The Psychology of adolescent development'. New York:Harper.

Lane, R.S. and Logan R.F.L. 1949. 'The Adolescent at work' Practitioner. 162. pp. 287-298.

Lapiere, R.T. and Farnsworth, P.R. 1949. 'Social Psychology'. McGraw-Hill-New York.

Lasswell, H.D. 1936. 'Politics-who gets what, when, How'. New York, McGraw-Hill.

Lasswell H.D. et al, 1952. ' A Comperative Study of Elites'. Stanford, Stanford University Press.

Lawton, G. 1951. 'Aging Successfully'. New York : Columbia University Press.

Lazarsfield, P. Berelson, B. and Gaudet, H. 1944. 'The peoples choice how the voter makes his mind in a presidential campaign' New York. Duell Sloanand Pearce.

Lewis, O.Y. 1949. 'Problems of the adolescent'. Calif. J Second Educ., 24. pp. 215-221.

Lindesmith, A.R. and Strauss, A.L. 1949. 'Social Psychology.' New York : Dryden.

Lipset, S.M. 1968. 'Student Politics'. New York : Basbc Books. pp.VII.

Lipset, S.M. 1970. 'Students and Politics in comperative perspective'. In S.M. Lipset and Philip G.Altbach (Eds.), Students in Revolt. Boston : Beacon Press. pp. XXX.

Lorenz, K. 1963. 'On Aggression'. New York : Bantom Books.

Ley, J. 1975. 'Socio ecology and psychology of primate. (Ed.) R.H.Tuttle.' Mounton Publishers, The Hague, Paris pp. 153-180.

Lowenthal, L. and Guterman, N. 1949. 'Prophets of deceit; a study of the techniques of the American agitator'. New York : Harper.

Mahajan, V.D. 1975. 'Leaders of the Nationalist Movement'. Sterling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi.

Maier, N.R.F., Glaser, N.M. and Klee, J.B. 1940. 'Studies of abnormal behaviour in the rat. III'. The development of behaviour fixations through frustration. J.Exp. Psychol., 26. pp. 521-546.

Mathur, M.B. 1969. ' Banaras : Vice-Chancellors find it too hot to stay'. Hindustan Times. Jan. 5. pp. 8.

Mead, M. 1928. 'Coming of Age in Samoa'. New York : Morrow.

Mehra, L.S. 1977. ' Youth in Modern Society'. Chugh Publications : Allahabad.

Merriam, C.E. 1945. ' Systematic Politics'. Chicago, University of Chicago Press. pp. 108-112.

Merry, F.K. and Merry, R.V. 1950. 'The first two decades of Life'. New York : Harper.

Mishra, G. 1973. 'Samazikaran Tatha Niyohar ka Niyantran'. Samajiki. pp. 35-42.

Mishra, D.K. Jain, C.M. and Desai S.L. 1975. 'Youth, University and Community'. S. Chand & Co. (Pvt.) Ltd. New Delhi.

Morris, R.T. & Seeman, M. 1950. 'The problem of Leadership : An interdisciplinary approach'. Amer.J.Sociol. Vol. 56 pp.149-155.

Mosca, G. 1939. 'The ruling class'. trans. by H.D. Kahane, Rev. and Ed. by Arthur Livingston, New York, McGraw-Hill.

Mukerji, K.P. 1952. ' The State'. Madras, Theosophical Publishing House. pp. 263.

Murton, R.K. 1949. ' Social Theory and Social Structure'. Glaco Ill Fre. Press.

Nafe, R.W. 1930. 'A psychological description of leadership'. J. Social. Psychol. pp. 248-266.

Nehru, J. 1946. ' Independence and After'. A Collection of Speeches. Ministry of Information and Broadcasting. New Delhi. pp.349.

Nehru, J 1947. ' Speech at Allahabad University'. Ministry of Education. Delhi. Govt. of India Press. pp. 5.

Neelsen, J.P. 1973. 'Student Unrest in India'. Munich : Weltforum Verlag.

Newcomb, T.M. 1950. 'Social Psychology'. New York: Dryden.

Ogilvie, F. 1949. 'The Problem of adolescence'. Practitioner, 162. pp. 261-268.

Oomman, T.K. 1974. 'Student Politics in India : The case of Delhi University'. Asian Survey . Vol. XIV No. 9. pp. 789-791.

Park, R.L. and Tinker, I 1960. 'Leadership and Political Institutions in India.' Jean Brown, Oxford University Press Madras-2.

Parke, R.D. and Walters, R.H. 1967. 'Some factors influencing the efficacy of punishment training for inducing response inhibition : Monographs of the society for research in child development No. 1.

Parsons, T. and N.J. Smelser 1965. Economy and Society: A Study in the integrations of economic and social theory. Free Press 53 N. 58N.

Play, L.P. 1806-1882. 'Cited in "Scientific social surveys and research " (Ed.) P.V. Young'. Prentice Hall of India, Pvt. Ltd. New Delhi (1977) pp. 247.

Polsby, N.W. 1959. 'The Sociology of Community Power : A Re-assessment'. Social Forces Vol. 34. pp. 232-237.

Polsby N.W. 1962. 'In "Community Power : Some Reflections on the Recent literature, A Plea for a Decent Burial, Further Notes on the study of community Power'. American Sociological Review 27. pp. 838-854.

Pope, C. 1943. 'Personal Problems of High school pupils'. Sch. & Soc. 57. pp. 443-448.

Radcliffe-Brown, A.R. 1952. 'On social structure and function in Primitive society'. London, Cohen & west.

Radhekrishnan, S. 1944. 'Education, Politics and war'. International Book ServicePoona. pp. 36.

Ray, A.B. 1977. 'Speech at Allahabad University, Dec., 13, 1947 quoted in Government of India, Ministry of Education, Report of the Committee On Model Act for Universities. Delhi : Government of India Press, 1964. pp. 5.

Ray, A.R. 1977. 'Students And Politics In India'. Manohar Book Service. New Delhi.

Rangaswami A.K.V. 1943. (Ed.) 'Krtyakalpatru of Bhatta Lakshmidhara'. Vol. XI, Rajadharmkanda, Gaekwad's Oriental Series, No. 100, Baroda. pp. 26.

Remmers, H.H. and Spencer, L.M. 1950. 'All young people have problems'. J. Nat. Educ. Assoc., 39. pp. 182-183.

Reuter, E.B. 1937. 'The Sociology of Adolescence'. Amer. J. Sociol., 43. pp. 414-427.

Reach, D.E. 1956. 'Dimensions of leader behaviour in the first line supervisor'. Amer. Psychol., 11. pp. 379. (Abstract).

Ross, A.D. 1962. 'Student Indiscipline in a Developing Country'. (Mimeographed). American Sociological Society. pp. 6-19.

Ross, D. 1966. 'Relationship between dependency, intentional learning and incidental learning in preschool children.'. J. of Personality and Social Psychol., pp. 374-381.

Ross, A.D. 1969. Student unrest in India, A Comparative Approach'. Montreal : McGill. Queens University Press.

Rossi, P.H. 1957. 'Community Decision Making'. Administrative Science Quarterly, Vol. I. pp. 438-439.

Rowell, T.E. 1972. 'The social behaviour of Monkeys.' Harmondsworth : Penguin.

Rudolph, L.I. Rudolph, S.H. and Ahmed K. 1971. 'Student Politics and National Politics in India. In Economic and Political Weekly 6.' pp. 1659.

Rudolph, S.H. and Rudolph, L.I. 1972. 'Parochialism and Cosmopolitanism in University Government: The environments of Baroda University'. In Education and Politics in India. (Ed.) Rudolph, S.H. and Rudolph, L.I. Cambridge : Harvard University Press.

Rupe, J.C. 1951. 'When workers rate the boss'. Personnel Psychol., 4. pp. 271-290.

Sarkar, B.K. 1922. 'The Political Institutions and Theories of the Hindus'. Leipzig. Market &Petters. pp. 207-208.

Saran, P. 1978. 'Rural Leadership in the Context of India's Modernization'. Vikas Publishing House Pvt. Ltd. New Delhi.

Saxena, P.C. 1966. 'Some Observations based on a Survey of B.H.U. Students'. Prajna. B.H.U. Journal. Vol. 12, No.1. pp. 1.

Seward, G.H. 1946. 'Sex and the social order'. New York : McGraw-Hill.

Singh, D. 1942. 'The Indian Struggle'. Hero Publications, Lahore. pp. 278.

Singh V. Major General 1963. 'Identification and Development of Leadership Characteristics'. The Cadet, Vol. XIV. Rajhans Press, Delhi. pp. 5-7.

Sinha, M.P. and Gangrade, K.D. 1971. 'Intergenerational Conflict in India'. Bombay, Nachiketa Pub. Ltd. pp. 125.

Schoeppe, A. and Havighurst, R.J. 1952. 'A validation developement and adjustment hypotheses of adolescence'. J.educ. Psychol., 43. pp. 339-353.

Schoeppe, A. Haggard, E.A. and Havighurst, R.J. 1953. 'Some factors affecting sixteen-year-olds success in five developmental tasks'. J. abnorm.soc. Psychol., 48. pp.42-52.

Shah, A.B. 1987. 'Student Discipline, in S.P. Aiyar (Ed.) The Politics of Mass Violence in India'. Bombay : Manaktalas. pp. 109.

Shaw, R.C. 1962. 'Student Politics and Student Leadership in an Indian University : The Case of Osmania,' in Philip G. Altbach (Ed.) Op. Cit. pp. 172-203.

Shaw, R.C. 1968. 'Student Politics'. in Philip G. Altbach, Turmoil and Transition'. New York : Basic Books. pp. 193.

Shils, E. 1968. 'Student, Politics, and Universities in India'. in Turmoil and Transition : Higher Education and Student Politics in India, P. G. Altbach (Ed.). Bombay Lavania Pub., House. pp. 4-6.

Shukla, B.N. 1969. 'Hindu Samaj Byawastha'. Narain Prakashan, Lucknow.

Singh A. 1973. 'Leadership Patterns and Village Structure'. (A study of six Indian Villages). Sterling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi.

Smith, T.V. 1926. 'The democratic way of life'. Chicago : Univer. of Chicago Press.

Smith, M. 1935. 'Leadership : the management of social differentials'. J.Abn. Soc. Psychol., 30. pp. 348-358.

Srinivas, M.N. 1968. 'Our Angry Young Men: Troubled Social Background'. The Times of India. Nov. 22. 1968.

Srimastava, R.C. 1975. 'Student Participation in Administration'. Sterling Publishers (P) Ltd. New Delhi.

Stevenson, H.W. and Hill, K.T. 1965. 'The effects of social reinforcement and non reinforcement following success and failure.' J. Personality pp. 418-427.

Stogdill, R. M. 1948. ' Personal Factors Associated with Leadership : A Survey of Literature'. Journal of Psychology. 25. pp. 63

Stogdill, R.M. 1952. 'Studies of naval leadership and organization'. Eng. exper.stn. News, Ohio State Univer. Vol. 24(5), pp. 24-27.

Stone, L.C. 1948. 'Student problems in a teachers college'. J.educ. Psychol., 39. pp. 404-416.

Sussmann, M.B. 1956. 'The Calorie Collectors'. a study of spontaneous group formation, Collapse, and reconstruction. Soc. For. 34. pp. 351-356.

Symonds, P.M. 1937. 'Changes in sex differences in problems and interests of adolescents with increasing age'. J. genet. Psychol. 50. pp. 83-89.

Symonds, P.M. 1935. 'Seriousness of personal problems of adolescents and degree of interest in these problems'. Psychol. Bull., 32. pp. 707-708.

Thompson, G.G. and Witryol., S. 1948. 'Adult recall of unpleasant experiences during three periods of childhood'. J. genet. Psychol. 72. pp. 111-123.

Thorndike, E.L. et al. 1932. 'The fundamentals of learning.'. New York : Teachers Coll. Columbia University.

Tiger, L. and Fox, R. 1971. 'The Imperial Animal'. New York : Holt, Rinehart and Winston.

Tilak, B.G. 1935-36. 'Srimad Bhagwadgita Rahasya'. Trans. by B.S. Sukthankar. 2Vols., Poona. Tilak Bros.

Tinbergen, N. 1953. 'Social behaviour in animals'. London : Methuen Nomograph.

Tiwari, D.D. 1973. 'Yuva Ashanti'. Sanariki. pp. 49-54.

Tuckman, J. and Lorge, I 1952. 'The best years of life : a study of in ranking'. J.Psychol., 34. pp. 137-149.

Vithal, B.R. 1962. 'University Autonomy and Internal Democracy'. The Journal of University Education. 1. pp. 83-92.

Walter, W.S. 1959. 'Student Politics in Latin America : The Venezuelan Example'. Foreign Affairs, XXXVII,3. pp. 465.

Washburne, J.M. 1941. 'Factors related to the social adjustment of college girls'. J.Soc.Psychol., 13. pp. 281-289.

Watson, A.E. 1961. 'Dictionary of Sociology'. pp. 32-33.

Weiner, M. 1962. 'The Politics of Scarcity'. Chicago : University of Chicago Press.

Wickert, F. 1947. 'Psychological research on problems of redistribution' AAF Aviat. Psychol. Program. Res. Rep., 14. Washington : U.S. Government Printing Office.

Wolfinger, R. 1962. ' A Plea for Decent Burial'. American Sociological Review. 27. pp. 849.

Woodie, W. 1949. 'The adolescent boy'. Practitioner 162. pp. 263-268.

Young, P.V. 1960. 'Methods of studying society and culture'. In (Ed.) F.E. Merrill "Society and Culture" Prentice-Hall, Inc. pp. 599.

Young, P.V. 1977. 'Scientific social surveys and research'. Prentice-Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi.

Zachry, C.B. 1944. 'Customary stresses and strains of adolescence'. Ann. Amer. Acad. Pol. Soc. Sci., 236. pp. 136-144.

Znaniecki, F. 1925. 'The laws of social psychology'. Chicago : Univer. of Chicago Press.

****

OTHER DOCUMENTS

Aj. August 4, 1958. 'The english translation of of the Aj editorial is to be found in S.L. Dar, Agitation of 1958 (Banaras : B.H.U. Press, n. d.). pp. 32-35.

Alvin J. 1957. 'Encyclopaedia of the Social Sciences'. (Ed. Chief.) E.R.A. Seligman. "LEADERSHIP". Vol.IX, X. pp. 282-287. The Macmillian comp. NOW. YORK.

India : University Grants Commission. Report of the Committee on Student Welfare and Allied Matters. Delhi : University Grants Commission, 1967.

India : Report on the Problem of Student Indiscipline in Indian Universities. Delhi : University Grants Commission, 1960.

India : Report on Standards of University Education. Delhi : University Grants Commission, 1965.

India : University Development in India, A Statistical Report. Delhi : University Grants Commission, 1962.

Royal Commission/Decentralization in India.. 1907-1909.

****

परिशिष्ट

प्रपत्र क्रमांक - प्रपत्र

ग्राम मेहरत्व का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन
मुस्लिमकालीन क्षेत्र की शैक्षिक संस्थाओं से संबंधी में।

1. दिनांक
2. उत्तरदाता का नाम — शोधकर्ता का पता
3. आयु
4. शिक्षा
5. जाति
6. ग्राम समिति के पद — वर्ष
7. शिक्षा संस्था का नाम
8. निवास स्थान — शहरी/ग्रामीण
9. शिक्षण संस्था का नियंत्रण — विश्वविद्यालय/सरकार/व्यक्तिगत समितियाँ
10. शिक्षण संस्था में — सभी पुरुष वर्ग/सभी स्त्री वर्ग/मिश्रित

11. क्या आप अविवाहित/विवाहित/विधुर हैं।
12. शादी के समय आपकी आयु
13. शादी के समय पत्नी की आयु
14. विवाह : मामा भिन्न जाति/स्वयं
15. पत्नी की शिक्षा
16. पत्नी का व्यवसाय — गृहिणी/नौकरी
17. कुल बच्चों की संख्या — लड़के / लड़कियाँ
18. शादी के कितने समय बाद प्रथम बच्चा हुआ

12. आपके माता पिता एवं अन्य लोगों से आपका परिवार की मासिक आय

अ। 100 से 200 के बीच ब। 200 से 500 के बीच

स। 500 से 1000 के बीच द। 1000 से अधिक

13. क्या आप संयुक्त परिवार में रह रहे हैं हाँ/नहीं

14. आपके परिवार का मुखिया कौन है आपसे क्या सम्बन्ध है

15. अ। आप अपने परिवार में सबसे अधिक किसे चाहते हैं और क्यों

ब। आप अपने परिवार में किससे घृणा करते हैं और क्यों

स। आप किससे अधिक डरते हैं क्यों

16. आपकी शिक्षा में किसने मदद किसकी है पिता/माता/रिश्तेदार/स्वयं/चाचा/अन्य

यदि आप स्वयं अपनी शिक्षा में मदद करते हैं विवरण दीजिए

17. यदि आप होटल या ढाबापात्र में रहे रहे हैं तो आपको कितना वेतन मासिक अपने नियोक्ता द्वारा मिलता है

18. यदि आप घर से बाहर पढ़ते हैं तो आपके पिता/भाई/पत्नी या बच्चे कैसा व्यवहार करते हैं

अ। नाराज होते हैं हाँ/नहीं

ब। पसंद नहीं करते पर कहते कुछ नहीं है हाँ/नहीं

स। बिल्कुल सहयोग करते हैं हाँ/नहीं

19. अ। क्या आप समझते हैं कि परिवार के प्रमुख की आज्ञा माननी चाहिए हाँ/नहीं

ब। क्या आप समझते हैं कि गलत होने पर कोई गलत करवाया जा सकता है हाँ/नहीं-क्यों

20. अ। क्या आप प्रेम विवाह में विश्वास करते हैं हाँ/नहीं
अ। क्या आप अंतर्जातीय विवाह करने के पक्ष में हैं हाँ/नहीं

21. आपके परिवार के अधिकांश सदस्यों का प्रेम विवाह पद्धति में विश्वास है हाँ/नहीं

22. पूर्वी संस्कृति एवं पश्चिमी संस्कृति में सामंजस्य होना चाहिए हाँ/नहीं

23. क्या आप लड़का लड़का/चाचू टोना आदि में विश्वास करते हैं हाँ/नहीं

24. क्या आप सोचते हैं कि आपराधिक घटनाओं के बारे में निम्न का योगदान है शिक्षा/दूरदर्शन/देशीय साधनों/अपराध/अन्य कोई

25. आपके विचार में विद्यार्थियों को सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिए हाँ/नहीं

26. आपके विचार में शिक्षा प्राप्त करने के बाद राजनीति में भाग लेना चाहिए हाँ/नहीं

27. यदि आप किसी राजनीतिक पार्टी के सदस्य हैं तो उसका नाम बताइये

28. वर्तमान परिस्थितियों में किस राजनीतिक पार्टी का शासन देश में होना चाहिए। निम्न में से निशान लगाइये
कांग्रेस/बी.के.पी./कम्युनिस्ट/जनता विचार मेल/अन्य कोई

29. वर्तमान सरकार से आप संतुष्ट हैं हाँ/नहीं

30. आपके विचार में महिलाओं को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए हाँ/नहीं
यदि हाँ तो क्यों
यदि नहीं तो क्यों

31. अ) क्या आपको वोट देने का अधिकार है हाँ/नहीं
ब) क्या आप सार्वभौमिक एवं वयस्क मताधिकार के पक्ष में हैं हाँ/नहीं
स) महिलाओं को भी वोट देने का अधिकार होना चाहिए
द) महिलाओं की शिक्षास्तर ( ) हाई स्कूल/इण्टर/ग्रेजुएट/पोस्ट-ग्रेजुएट/आवश्यक नहीं

32. अ) आप किस कारक पर अपना वोट देते हैं
सामुदायिक/जाति/उम्मीदवार की योग्यता/राजनैतिक दल/अन्य कोई
ब) वोटर बनाने के लिए क्या गुण होने चाहिए

33. क्या आपके विद्यालय का वातावरण शिक्षा के लिए उचित है हाँ/नहीं

34. क्या आपकी संस्था के अधिकांश छात्र निम्न से संतुष्ट हैं
अ) अध्यापन विधि हाँ/नहीं
ब) व्यवहारिक कार्य हाँ/नहीं
स) पुस्तकालय सुविधा हाँ/नहीं
द) खेलकूद सुविधा हाँ/नहीं
य) अन्य सुविधायें हाँ/नहीं

35. राजनीति में भाग लेना व्यक्तित्व बनाने में सहायक हो सकता है हाँ/नहीं

36. क्या आप छात्र आन्दोलनों के पक्ष में हैं हाँ/नहीं
यदि हाँ तो क्यों
यदि नहीं तो क्यों

37. वर्तमान शिक्षा संस्थाओं में प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा होना चाहिए हाँ/नहीं

38. अ। आपके अपने शिक्षकों के साथ कैसा सम्बन्ध है हाँ/नहीं
ब। क्या आप शिक्षकों के सामने बहाना करते हैं हाँ/नहीं
स। क्या आप शिक्षकों के साथ डील/लिंगेज वाले हैं हाँ/नहीं

39. आप शिक्षकों से निम्न के बारे में क्या करते हैं
अ। अपनी शिक्षा हाँ/नहीं
ब। अपनी आर्थिक समस्यायें हाँ/नहीं
स। अपने भविष्य के बारे में हाँ/नहीं
द। राजनीतिक गतिविधियाँ हाँ/नहीं
य। अन्य विषय हाँ/नहीं

40. मित्र के बारे में स्पष्टीकरण दीजिए
अ। पुस्तकें लाना खरीद कर पढ़नी चाहिए हाँ/नहीं
ब। टयूशन पढ़ना चाहिए हाँ/नहीं
स। पुस्तकालय की पुस्तकें अपने रोके रखना चाहिए हाँ/नहीं

41. अ। क्या आप मित्र बनाते हैं हाँ/नहीं
ब। क्या अपनी आयु के मित्र बनाना पसन्द करते हैं हाँ/नहीं
स। क्या महिलाओं को मित्र बनाते हैं हाँ/नहीं
द। समान स्तर वाले मित्र हैं हाँ/नहीं
य। आपके स्तर से नीचे वाले मित्र हैं हाँ/नहीं
र। आपके स्तर से ऊँचे वाले मित्र हैं हाँ/नहीं
ल। सभी वर्गों के मित्र हैं हाँ/नहीं

42. क्या आप विद्यार्थी संस्था की राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं हाँ/नहीं

43. क्या आप अपने पड़ोस के बारे में निम्न जानकारी देना चाहेंगे

अ। शिक्षण व्यवसाय में कितने लोग हैं हाँ/नहीं

ब। व्यापार में कितने लोग हैं हाँ/नहीं

स। सरकारी नौकरियों में कितने लोग हैं हाँ/नहीं

द। अन्य कोई हाँ/नहीं

44. अ। आपके क्षेत्र में वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है हाँ/नहीं

ब। आपके क्षेत्र में वर्तमानशिक्षाप्रणाली दोष पूर्ण है हाँ/नहीं

स। क्या आपके क्षेत्र में उचित योग्य शिक्षकों का अभाव है हाँ/नहीं

द। आपके क्षेत्र में शिक्षा स्तर गिरता जा रहा है हाँ/नहीं

45. क्या आपकी संस्था के विद्यार्थियों को प्रशासनिक कार्यों के बारे में विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता है

(योजना निर्माण/संचालन/नियंत्रण) हाँ/नहीं

46. आपकी संस्था के छात्र अपने को अधिकारियों के समक्ष पाते हैं हाँ/नहीं

47. आपकी संस्था में क्या छात्र चुनिंदे हैं छात्र शिक्षाधिकारियों में मुख्य भूमिका अदा करते हैं हाँ/नहीं

48. सामान्य रूप से छात्र कोटाओं का आपकी संस्था में क्या प्रभाव है

अ। नगण्य

ब। कुछ सीमा तक

स। सौहार्दपूर्ण

द। विशेष प्रभाव

य। अत्यधिक प्रभाव

49. आपकी संस्था के प्रशासनिक नियंत्रण में छात्रों को
शामिल नहीं किया जाता कि

अ। विद्यालय के विकास स्तर में गिरावट आयेगी हाँ/नहीं

ब। संस्था प्रशासन में छात्रों को सम्मिलित करना व्यवस्था की
दृष्टि से उपयुक्त नहीं है हाँ/नहीं

स। अन्य कोई कारण हाँ/नहीं

50. क्या आपके मत से छात्रों को संस्था की प्रशासनिक एवं
शैक्षणिक योजनाओं के नियोजन में उचित सलाह के लिए
सम्मिलित करना चाहिए हाँ/नहीं

51. निम्न के बारे में बताइये

अ। कैसे अधिकारियों द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों में ही विद्यार्थी
अपना मत देता है

ब। विद्यार्थियों में स्वतः ही कुछ कार्यक्रम तय हो जाते हैं और
किसी अधिकारियों की अपेक्षा कर दी जाती है हाँ/नहीं

स। कार्यक्रम की योजना अधिकारी बनाते हैं एवं उनका क्रियान्वयन
विद्यार्थियों एवं अधिकारियों की सहमति से होता है हाँ/नहीं

द। विद्यार्थियों को अपने विचार प्रकट करने की छूट दी जाती है
परन्तु अधिकारी लोग निर्णय स्वतः ही लेते हैं एवं विद्यार्थियों
की भावना का कोई महत्व नहीं होता हाँ/नहीं

य। विद्यार्थियों के विचारों को महत्व देते हुए अधिकारी योजना
बनाते हैं हाँ/नहीं

52. छात्र आन्दोलनों में आप कैसे या कुछ हाँ/नहीं

एक बार

अधिक बार

53. क्या आप अपनी राजनीतिक गतिविधियों के बारे में परिवार के सदस्यों से चर्चा करते हैं हाँ/नहीं

54. आप अपनी राजनीतिक गतिविधियों में बढ़ने की भावना से प्रेरित रहते हैं हाँ/नहीं

55. क्या आप विदेश जाना चाहते हैं हाँ/नहीं
यदि हाँ तो किस लिए
अध्ययन के लिए
पर्यटक के रूप में
स्थाई निवास के लिए
आप किस देश में जाना पसन्द करेंगे

56. ग्राम पुलिसकर्मी के बारे में अपनी व्यक्तिगत राय दें

57. आर्थिक सामाजिक राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों के बारे में व्यक्तिगत राय विस्तृत रूप से स्पष्ट करें

58. अन्य कोई जानकारी जो आप स्वयं की इच्छा से स्पष्ट करना चाहें